बी० कॉम० (प्रतिष्ठा), द्वितीय खण्ड

विशिष्ट लेखांकन चतुर्थ - पत्र

विषय-सूची

क्रम	शीर्षक	इकाई सं०	पृ० सं०
1.	कम्पनियों के अन्तिम खाते	1	2
2.	कम्पनी का एकीकरण	2	18
3.	संविलयन एवं पुनर्निर्माण	3	33
4.	कम्पनी का समापन	4	54
5.	सूत्रधारी कम्पनी	5	63
6.	बैंकिंग कम्पनियों के लेखे	6	73
7.	बीमा कम्पनियों के लेखे	7	85
8.	दोहरी लेखा प्रणाली	8	110

कम्पनियों के अंतिम खाते

पाठ-संरचना

1.1 उद्देश्य

1.2 कम्पनी का अन्तिम खाता

1.2.1 लाभ-हानि खाता

1.2.2 लाभ-हानि समायोजन खाता

1.2.3 आर्थिक चिट्ठा

1.2.4 अन्तिम खातों की स्वीकृति

1.3 उदाहरण

1.4 सारांश

1.5 अभ्यास हेतू प्रश्न

1.6 पठनीय पुस्तकें

1.1 उद्देश्य

यह प्रसन्नता की बात है कि बी० कॉम० प्रतिष्ठा पार्ट II के लेखांकन के विशेष खातों पर अपने दूर दराज के छात्रों के लिए पाठ लिखना है। प्रारम्भ में आपको बताना चाहता हूँ कि लेखा शास्त्र एक सेवा प्रक्रिया है। यहाँ पर हमलोग कम्पनी के अन्तिम खाते के विषय में पढ़ेंगे।

1.2 कम्पनी का अन्तिम खाता

सभी व्यावसायिक संस्थान अपना अन्तिम खाता तैयार करते हैं। किन्तु एकांकी व्यापार एवं साझेदारी में अन्तिम खाता तैयार करने की अनिवार्यता नहीं है। इसके विपरीत एक कम्पनी के लिए यह अनिवार्य है कि वह कम्पनी अधिनियम की धारा 211 एवं सेड्यूल VI के अनुसार अपना अन्तिम खाता तैयार करें।

लाभ हानि खाता एक निश्चित लेखा अवधि के बाद तैयार किया जाता है। इसे आय विवरण या उपार्जन विवरण भी कहते हैं। यह एक प्रतिवेदन है, जो कम्पनी की सफलता को मापता है। यह एक खास अवधि के लिए तैयार किया जाता है। आर्थिक चिट्ठा एक खास अवधि के अन्त में व्यावसायिक संस्था के विनियोग, साधन, दायित्व एवं अंशधारियों की पूँजी को प्रस्तुत करता है।

एक संयुक्त पूँजीवाली कम्पनी में जो लाभ हानि की रकम होती है उसे पूँजी खाते में सीधे स्थानान्तरित नहीं करते हैं, बल्कि उसके पहले कई वैधानिक अनिवार्यता को पूरा करते हैं। इसके लिए एक लाभ हानि समायोजन खाता बनाया जाता है। अत: एक कम्पनी की सभी लेखा विधि को हमलोग निम्नलिखित शीर्षक में अध्ययन करेंगे--

(1) लाभ हानि खाता

(2) लाभ हानि समायोजन खाता

(3) आर्थिक चिट्ठा

(4) अन्तिम खाते की स्वीकृति

1.2.1 लाभ हानि खाता :

कम्पनी अधिनियम की धारा 211(2) के अनुसार प्रत्येक कम्पनी का लाभ हानि खाता कम्पनी के वित्तीय वर्ष के सच्चे व उचित चित्र प्रस्तुत करता है। एक गैर-व्यावसायिक संस्थान में आय-व्यय खाता तैयार किया जाता है। किन्तु ये प्रावधान बैंकिंग कम्पनी, बीमा कम्पनी, रेल, गैस या बिजली कम्पनी में लागू नहीं होते हैं।

अनुसूची 6 का द्वितीय भाग

लाभ हानि खाता बनाने के लिए अनुसूची 6 का द्वितीय भाग बहुत महत्त्व रखता है। इसके मुख्य प्रावधान को हमलोग यहाँ पर संक्षेप में लिखेंगे। लाभ-हानि खाता में विभिन्न आय और व्यय के मद लिखे जाते हैं जिससे उस अवधि के लाभ हानि का सही ज्ञान प्राप्त हो सके तथा इससे निम्नांकित विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके

(1) कुल विक्रय सकल लाभ जो व्यापार से हुआ है,

(2) कुल क्रय,

(3) प्रारम्भिक एवं अन्तिम रहतिया,

(4) कार्य जो प्रगति पर है प्रारम्भ और अन्त में,

(5) स्टोर एवं अन्य माल की खपत

(6) शक्ति एवं जलावन,

(7) मजदूरी एवं वेतन तथा बोनस

(8) प्रॉवीडेंट फण्ड और अन्य संचयों के लिए किया गया खर्च,

(9) कर्मचारियों के कल्याण पर किया गया खर्च,

(10) बिक्री अभिकर्त्ता का कमीशन,

(11) ह्रास के लिए प्रावधान,

(12) ऋण पत्रों एवं ऋण पर सूद,

(13) विशेष दायित्वों के भुगतान के लिए किया गया संचय,

(14) मकान किराया, मरम्मत इत्यादि पर किये गये व्यय,

(15) व्यवसाय कम्पनी या संस्था से सम्बन्धित सभी व्यय,

(16) कर, लगान, पारिश्रमिक कमीशन एवं आयकर इत्यादि का विवरण देना है। इसी प्रकार आय के विभिन्न मदों को भी लिखना पड़ता है।

आय के विभिन्न मदों को भी दिखाया जाता है, जैसे

(1) विनियोग पर प्राप्त आय,

(2) सूद,

(3) सहायक कम्पनी से लाभांश।

कम्पनी अधिनियम में कोई प्रारूप अनिवार्य नहीं किया गया है। किन्तु केन्द्रीय सरकार अगर चाहे तो किसी भी कम्पनी को आज्ञा दे सकती है कि वह अपने लाभ हानि खाते की बनाते समय अनुसूची 6 के भाग 2 में दो सूचनाओं को न माने, परन्तु यह आज्ञा केवल राष्ट्रहित में ही दी जा सकती है।

एक उत्पादक कम्पनी में कच्चे माल की खपत का पूर्ण विवरण देना आवश्यक हे।

अगर कम्पनी का विस्तार हो रहा है तो विशेष ह्रास का पूर्ण विवरण देना चाहिए। धारा 350 के अनुसार लाभ हानि खाता को ह्रास का पूर्ण विवरण देना चाहिए तथ आयकर अधिनियम 1961 को भी ध्यान में रखना चाहिए।

ऋण पत्र पर सूद वार्षिक खर्च है। किन्तु ऋण पत्र जारी करने पर जो व्यय है वह पूँजीगत व्यय है। इसका भुगतान लाभ हानि खाते से प्रतिवर्ष होना चाहिए।

प्रबन्धकीय पारिश्रमिक :

कम्पनी के लाभ हानि खाता बनाते समय प्रबन्धकीय पारिश्रमिक को विशेष ध्यान से निकाला जाता है। धारा 179(A) के अनुसार एक कम्पनी निम्न पदाधिकारियों में से किसी एक को ही नियुक्त कर सकती है

(1) प्रबन्ध निदेशक

(2) प्रबन्ध एजेन्ट (अभिकर्त्ता)

(3) सचिव

(4) मैनेजर

अधिकतम और न्यूनतम पारिश्रमिक धारा 158 के अनुसार एक सार्वजनिक कम्पनी (या एक निजी कम्पनी जो किसी सार्वजनिक कम्पनी की सहायक है) किसी भी वित्तीय वर्ष में शुद्ध लाभों में 11% से अधिक नहीं दे सकती है। परनतु 11% की गणना करते समय संचालकों को पारिश्रमिक तथा वह फीस जो संचालक मण्डल की सभा में भाग लेने के लिए दी जाती है, शामिल नहीं की जाती है।

जहाँ तक न्यूनतम पारिश्रमिक का प्रश्न है, कम्पनी लॉ बोर्ड की स्वीकृति से कम लाभ होने पर 50,000 रु० तक प्रतिवर्ष दे सकती है। इस न्यूनतम राशि 50,000 रु० के अतिरिक्त संचालकों को सभा में उपस्थित होने की फीस अलग से दी जा सकती है। प्रबन्धकीय पारिश्रमिक में अनुलाभों को भी जोड़ा जाता है।

शुद्ध लाभ की गणना कम्पनी अधिनियम की धारा 349, 350 तथा 351 के द्वारा निर्धारित होती है।

संचालकों का पारिश्रमिक धारा 309 और 310 के अनुसार कम्पनी आवर्त नियमों के अनुसार दिया जाता है। एक निदेशक को संचालक या कमिटि में भाग लेने के लिए फीस दी जाती है। अगर करमपी में 1 निदेशक है तो शुद्ध लाभ का 5% और एक से अधिक होने पर शुद्ध लाभ का 10% दिया जा सकता है।

(यह वर्णन विस्तार से नहीं है। आप स्वीकृत पुस्तक को अवश्य पढ़ लें। केन्द्र सरकार के द्वारा कई नियमावली जारी की गयी हैं जो धारा 269, 310, 350, 351, 309, 198, 387 और 388 से सम्बन्धित हैं।)

1.2.2 लाभ-हानि समायोजन खाता :

एक कम्पनी अपनी पूँजी अंशों को जारी करके प्राप्त करती है। ये अंश हस्तांतरणीय होते हैं इसलिए कम्पनी का लाभ किसी व्यक्ति का नहीं है। यह उस अंशधारी का है जो उस अवधि में उसका होल्डर है। कम्पनी अधिनियम बाध्य नहीं करता है कि समायोजन खाता बनाया जाय। किन्तु सभी कम्पनियाँ यह खाता बनाती है। इस खाता को पंक्ति के नीचे का खाता भी कहा जाता है। इस खाते में यह दिखाया जाता है कि

(1) आयकर की क्या व्यवस्था की गयी है।

(2) अंश पूँजी या ऋण के भुगतान में कितनी रकम लगायी गयी।

(3) संचित (Reserve) में कितनी रकम रखी, तथा

(4) लाभांश कितना दिया गया या प्रस्तावित है।

लाभ को संचित में हस्तांतरण करने का प्रावधान धारा 205 के अन्तर्गत उपधारा (2A) में है। इसके अनुसार लाभांश का भुगतान ह्रास काटकर शुद्ध लाभ में से होना चाहिए। अगर लाभांश की रकम 10% है तो संचित में रकम डालना आवश्यक नहीं है किन्तु 10% से अधिक लाभांश घोषित करना है तो संचित में निम्न प्रकार लाभ का प्रतिशत हस्तांतरित किया जायेगा अगर 10% से अधिक, किन्तु 12.5% से 15% तक में 5%, 15% से 20% हो तो 7.5% और 9.0% से अधिक हो कम से कम 15% लाभ का हिस्सा संचित में डालना होगा।

लाभांश का भुगतान कम्पनी अधिनियम की धारा 205 के अनुसार किया जाता है। इसका वितरण अन्तर्नियमों के अनुसार किया जाता है। किन्तु लाभांश का भुगतान केवल लाभ में से किया जायेगा। आंशिक भुगतान अंशों पर चुकता पूँजी के अनुपात में किया जायेगा। वर्ष के बीच में निदेशकें विशेष प्रस्ताव से आन्तरिक लाभांश की घोषणा कर सकते हैं।

कम्पनी अधिनियम में एक संशोधन 17 4 1989 को हुआ जिसके अनुसार लाभ हानि खाता का स्वरूप और समायोजन खाता का नमूना (संक्षेप में) नीचे दिया गया है।

Abridged Profit and Loss Account
(Applicable from 17.4.1989), for the year

Particulars		Amount for the Current Financial Year	Amount for The Previous Financial Year
1.	Income		
	Sales/Servicesrendered		
	Dividend		
	Interest		
	Other Income		
	Total		
2.	Expenditure		
	Cost of goods sold		
	(with details)		
	.....		
	.....		
	.....		
3.	Profit/Loss before Tax (1 and 2)		
4.	Provision for Taxation		
5.	Profit/Loss after tax		
6.	Proposed Dividends		
7.	Transfer to Reserve and Surplus.		

Please see Details

Profit and Loss Appropriation Account
(for the year ended 31st Dec.)

Prv. Year	Particular	Figures for the current year	Prev. year	Figure for the current year
	To Equity Dividend			
	To General Reserve			By Net Profit As per P & L A/C
	To Debenture Redem. Fund			
	To Balance C/d.			

Note : Please see details.

1.2.3 आर्थिक चिट्ठा

कम्पनी अधिनियम की धारा 211 के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को अपने वित्तीय वर्ष के अन्तिम दिन एक आर्थिक तैयार करना है। यह चिट्ठा कम्पनी का सच्चा और उचित चित्र उपस्थित करता है।

आर्थिक चिट्ठा का प्रारूप सूची 6 में दिया हुआ है और उसी के अनुरूप होना चाहिए। चिट्ठा बनाते समय उन सूचनाओं पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिए जो चिट्ठा बनाने के सम्बन्ध में तलपट के बाहर दिया हुआ है। कम्पनी के प्रकाशित खातों में पहले चिट्ठा और बाद में लाभ हानि खाता बनाया जाता है।

चिट्ठा निम्नांकित दो प्रारूपों में से किसी एक प्रारूप में हो सकते हैं

(1) ऊर्ध्वाधर (Vertical Form) या

(2) क्षैतिज प्रारूप (Horizontal Form)

दोनों प्रारूप, इस पाठ के अन्त में नमूना के रूप में दिया गया है। कम्पनी का चिट्ठी बनाते समय विशेष ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित हैं

(1) कोष के विभिन्न साधनों को अलग शीर्षक में दिखाना है।

(2) कोष के विभिन्न प्रयोगों को क्रमश: दिखाना है।

(3) ह्रास प्रत्येक सम्पत्ति में से (अगर दिया है तो) घटाना चाहिए।

(4) ऋण पत्रों पर ब्याज पूरे वर्ष का निकालना चाहिए। अगर तलपट में कम रकम दी गयी हो तो जितना कम हो उसका समयोजन करना चाहिए।

(5) समायोजनाओं के लेखे करना आवश्यक है।

(6) प्रारम्भिक व्यय, अभिगोपन कमीशन, अंशों और ऋण पत्रों पर कटौती जैसे व्ययों के शेष को सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जायेगा तथा प्रत्येक वर्ष में कुछ रकम अपलिखित कर दी जायेगी।

(7) लाभ हानि खातों में अगर लाभ है तो दायित्व में और हानि है तो सम्पत्ति पक्ष में लिखना चाहिए।

1.2.4 अन्तिम खातों की स्वीकृति :

कम्पनी अधिनियम की धारा 215 के अनुसार जब अन्तिम खाते तैयार हो जाय तो उन्हें संचालक मंडल की स्वीकृति के लिए उनके समक्ष रखा जाता है। अंकेक्षण को सुपूर्द करने के पूर्व कम से कम दो संचालक (अगर एक हो तो एक ही) का हस्ताक्षर होना चाहिए।

यह संचालक मंडल की जिम्मेवारी है कि वह एक योग्य अंकेक्षक से अंकेक्षित कराकर प्रतिवेदन लेकर संचालक के प्रतिवेदन के साथ वार्षिक सभा में स्वीकृति करा ले। स्वीकृति के बाद वार्षिक सभा के 30 दिन भीतर के 3 प्रति कम्पनी के रजिस्ट्रार के कार्यालय में जमा करना आवश्यक है। आर्थिक चिट्ठा का नमूना नीचे दिया जाता है।

Specimen of the Vertical Form of Balance Sheet

Name of the Company .....

Balance Sheet as at .....

			Schedule No.	Figures as at the end of the current year	Figure as at the end of the previous year
I.	Source of Funds				
	(1)	Shareholder's Funds			
		(a) Capital			
		(b) Reserves and Surplus			
	(2)	Loan Funds			
		(a) Secured Loans			
		(b) Unsecured Loans			
		Total			
II.	Application of Funds :				
		(a) Fixed Assets			
		(b) Less Depreciation			
		(c) Investments			
	(3)	Current Assets, Loans and Advances			
		Net current Assets			
	(4)	Misc. Expenditure to the extent not written off or adjusted			
		(a) Profit and Loss A/C.			
		Total			

Note : Details under each of the above items shall be given in separate Schedules. Students are required to consult the perscribed books for details.

Specimen of the Horizontal Balance Sheet

(In abridged form)

Balance Sheet of ..... (as at .....)

Figure for the previous year	Capital and Liabilities	Figure for the current year	Figures for the previous year	Assets	Figures for the current year

Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
	1. Share Capital		1. Fixed Assets
	2. Reserves and Surplus		2. Investments
	3. Secured Loans		3. Current Assets Loans and Advances
	4. Unsecured Loans		4. Misc. Expenditure
	5. Current Liabilities and Provisions		5. P. & L. A/c (if Loss)
	6. Fotnote for contingent liabilities		

Note– Place see the prescribed Books for details.

1.3 उदाहरण

1. 31 दिसम्बर 1983 को पायोनियर मिल्स कं० लि० की पुस्तकों में अग्रबाकियाँ थीं–

	Rs.		Rs.
अंश (अधिकृत और निर्गमित)		मशीनरी	2,00,000
60,000 अंश 10 रु० वाले	6,00,000	मोटर गाड़ी	15,000
		फर्नीचर	5,000
		प्रारम्भिक रहतिया	1,72,058
सामान्य संचय	2,50,000	कुल देनदार	1,57,380
अयाचित लाभांश	6,526	विनियोग	2,88,950
व्यापारिक लेन देन	36,858	रोकड़ बाकी	61,240
भवन	1,00,000	संचालकों की फीस	1,800
क्रय	5,00,903	आन्तरिक लाभांश	15,000
बिक्री	9,83,947	ब्याज (क्रे०)	8,544
निर्माण व्यय	3,59,000	लाभ–हानि खाता 1 जु० 1983	16,848
स्थापन व्यय	26,814	(क्रे०) स्टॉफ प्रॉवीडेण्ट फण्ड	37,500
सामान्य व्यय	31,078		

31 दिसम्बर 1988 को समाप्त होने वाली 6 माह की अवधि के लिए, उपर्युक्त बाकियों और निम्न सूचनाओं के आधार पर कम्पनी का चिट्ठा और लाभ हानि खाता बनाइए

(अ) 31 दि० 1983 को गेहूँ और आटे के रहतिया का मूल्यांकन 1,48,680 रु० किया गया, (ब) 10,000 रु० भवन के ह्रास के लिए, 6500 रु० प्रबन्ध अभिकर्त्ता के कमीशन एवं 1500 रु० प्रॉवीडेण्ट फण्ड में अंशदान के लिए आयोजित कीजिए। (स) विनियोग में अर्जित ब्याज 2,750 रु० था। (द) 2,500 रु० का एक कर्मचारी की क्षतिपूर्ति का दावा कम्पनी द्वारा विवाद की स्थिति में है। चिट्ठा एवं लाभ हानि खाता बनाते समय आवश्यक मान्यताएँ मान सकते हैं।

Balance Sheet

(As at 31st Dec. 1983)

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
CAPITAL			Fixed Assets		
Authorised issued and			Building	1,00,000	
subscribed capital		6,00,000	Less Depr.	10,000	
RESERVES AND SURPLUS					90,000
General reserves		2,50,000	Machinery		2,00,000
Staff provident fund		39,000	Motor Vehicles		15,000
P/f A/c			Furniture		5,000
Balance on					
July 1st 1983	19,848		Investment		2,88,950
Add net profit	34,268				
	51.116		Current Assets, Loans		
			and Advance		
Less interim			Stock		1,48,680
dividend	15,000	36,116			
CURRENT LIABILITIES			Book debts		1,57,380
Creditors		36,858	Cash		67,240
Unclaimed dividend		6,526			
Mang. Agent commission		6,500			
Contingent liability	2,500				
	Rs.	9,75,000		Rs.	9,75,000

1. 3700 + 1500 = 39000

Profit and Loss A/c

(For the year ending Dec. 31, 1983)

To Opening stock	1,72,058	By Sales		9,83,947
To Purchases	5,00,903	By Closing Stock		1,48,680
To Manufacturing expend.	3,59,000			
To Gross profit c/d	1,00,666			
Rs.	11,32,627	Rs.		11,32,627
To Establishment	26,814	By Gross profit b/d		1,00,666
To Generela charges	31,078	By Interest	8,544	11,294
To Director's fees	1,800	By Int. accrued	2,750	
To Dep. on building	10,000			
To Managing agent commission	6,500			
To Staff provident fund	1,500			
To Net Profit	34,268			
Rs.	1,11,960	Rs.		1,11,960

1.4 बम्बई ट्रेडर्स लिमिटेड खाते में 31 दिसम्बर 1983 को निम्न बाकियाँ थीं–

	Rs.	Rs.
अंशपूँजी, 6,000 समता अंश 100 अंश 100 रु० वाले		6,00,000
5% बन्धक ऋणपत्र		1,00,000
लाभ हानि नियोजन खाता		18,000
विनियोगों पर प्राप्त (सकल 10,000 रु०)	1,25,000	7,000
वेतन, बोनस आदि	2,500	
संचालन शुल्क		
प्रशासन बिक्री, वितरण एवं सामान्य व्यय	1,40,000	
ऋण पत्रों पर भुगतान ब्याज	2,500	

सकल लाभ		4,85,000
भवन निर्माण के लिए अग्रिम	80,500	
भवन (लागत 4,00,000)	3,50,000	
फर्नीचर और फिक्सचर्स (लागत 10,000)	7,000	
मोटर गाड़ियाँ (लागत 40,000)	30,500	
विनियोग		
कम्पनियों के पूर्णदत्त समता अंशों में बाजार मूल्य (1,80,000)	2,00,000	
कम्पनियों के पूर्वाधिकार अंशों में (50% भुगतान)	40,000	
रहतिया (लागत एवं बाजारू मूल्य में से जो कम हैं)	2,25,000	
विविध देनदार (आरक्षित, अच्छे इनमें से 90% 9-7 83 के या उसके बाद के हैं)	2,00,000	
हस्तस्थ और बैंक में रोकड़	11,000	
करों के लिए संचय		1,46,000
विविध लेनदार		60,000
ऋण पत्र के निर्गमण पर कटौती	2,000	
	14,16,000	10,16,000

निम्न अन्य सूचनाएँ हैं (अ) भवन पर 5%, फर्नीचर पर 10%, मोटर पर 20% ह्रास अपलिखित करना है (ब) उचित दर से चालू वर्ष के लाभों के लिए करों का प्रावधान करना है। (स) संचालकों ने 10% लाभांश तथा 20,000 रु० ऋण पत्र शोधन कोष में हस्तांतरित करने का निर्णय लिया। अन्तिम खाते बनायें

Solution–

Bombay Trade Ltd.

Balance-Sheet

(As on 31-12-1983)

Authorised Capital		Fixed Assets		
6,000 share @ 100/- each	6,00,000	Building	4,00,00	
		Less dep.		
ISSUED AND SUBSCRIBED		on building	67,500	
CAPITAL				3,32,500
6,000 shares @ 100/- each	6,00,000	Furniture 10,000		
		Less Dep. 3,700		

RESERVE AND SURPLUS					
Debenture redemption fund	20,000		Motor Vehicles 4,000		
P/L approp, A/c	84,400	1,04,400	Less dep. 15,600		
				24,400	
Secured loan					
UNSECURED LOAN			INVESTMENT		3,63,200
			Equity shares	2,00,000	
5% Debentures	1,00,000		(Market Value 1,80,000)		
Outstand interest	2,500	1,02,500	Unquated Pref. Share	40,000	
CURRENT Liab, and PROVISION			CURRENT ASSETS		
S. creditors	60,000		Stock	2,25,000	
Prov. for taxation	1,46,000		S. debtors	1,80,800	
And new prov.	48,800		Cash at bank	11,000	
Proposed dividend	60,000	3,14,800	Advance against constructions of building	80,500	
CONTINGENT LIAB.			Debt for more than 3 month	20,000	
Liability on partly Paid-up pref. share	40,000			5,16,500	
			Misc. expenditure Discount on issue of debtor.		
		11,21,700			11,21,700

1. $4,00,000 - 3,50,000 = 50,000 \quad \frac{3,50,000 \times 5}{7} = 17,500 + 50,000 = 66,500$

2. $10,000 - 7,000 = 300 \quad \frac{700 \times 10}{100} = 700,\ 3000 + 700 = 3700$

3. $40,000 - 30,500 = 9500,\ 30500 \times 20\% = 6100,\ 9500 + 6100 = 15,600$

Profit and Loss A/c

(For the year ending Dec, 31, 1983)

To Salaries, Bonus		1,25,000	By Gross Profit b/d		4,85,000
To Director's fees		2,500	By Divident	10,000	
To Admn, and other expenses		1,40,000	Less Income tax	3,000	

To Interest on debenture	2,500				7,000
Add outstanding	2,500				
To Depreciation		5,000			
Building	17,500				
Furniture	700				
M. Vehicles	6,100				
		24,300			
To Prov. for taxation @ 25%		48,800			
To Net Profit e/d		1,46,400			
	Rs.	4,92,000		Rs.	4,92,000
To Debenture redemption Fund		20,000	By Balance b/d		18,000
To Proposed dividend		60,000	(from previous year)		
To Balance c/d		84,400	By Current year's profit		1,46,400
	Rs.	1,64,400		Rs.	1,64,000

1. 4 सारांश

कम्पनी के अंतिम खाता के अन्तर्गत भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत निर्धारित प्रारूप में कम्पनी को आर्थिक चिट्ठा तथा लाभ हानि खाता तैयार करना है।

1.5 अभ्यास हेतू प्रश्न

(1) एक कम्पनी के अन्तिम खातों से आप क्या समझते हैं? एक आर्थिक चिट्ठा कैसे तैयार किया जाता है? उदाहरण या नमूना देकर समझायें।

(2) आर्थिक चिट्ठा के मुख्य मदों को समझायें।

(3) लाभ हानि खाता और लाभ हानि समयोजन खाता में तुलना कीजिए।

(4) निम्नलिखित पर नोट लिखें

(अ) चालू दायित्व,

(ब) चालू सम्पत्ति,

(स) संदिग्ध दायित्व,

(द) आर्थिक चिट्ठे का स्वकृति।

(5) विभाजन योग्य लाभ क्या है? लाभांश के वितरण के सम्बन्ध में कम्पनी अधिनियम में कौन कौन विभिन्न प्रावधान बनाये गये हैं?

Practical Problems–

Q. The following balance were extracted from the books of C. Company Ltd. for the year ended 31st December, 1991.

Buildings	6,00,000
Furniture	60,000
Motor vehicles	60,000
Equity shares of companies	4,00,000
Stock-in-trade at cost	4,00,000
Sundry debtors, unsecured, considered good	2,80,000
Cash at Bank	1,72,000
Advance against construction of building	1,30,000
Share Capital–	
10,000 Equality shares of Rs. 100 each	10,00,000
Sundry creditors	3,50,000
P&L A/c (cr. balance)	20,000
Gross Profit	10,00,000
Dividend received on investments	10,000
Salaries and wages	2,20,000
Director's fees	8,000
Electricity charges	25,000
Rent, taxes and insurance	10,000
Auditor's fees	15,000

Prepare the P and L A/c of the company for the year ended 31st Dec. 1991 and Balance-Sheet as at that date after the following adjustments–

(i) Provide 10% depereciation p.a.

(ii) Stock has been revalued as Rs. 3,60,000. This has not been considered as yet.

(iii) Debts more than 6 months are Rs. 80,000.

प्रश्न.1 को बनाते समय निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है

1. प्रश्न में सकल लाभ दिया हुआ है किन्तु स्टॉक की अन्तिम कीमत वर्ष के अन्त में मात्र 3,60,00 रु० है। इसलिए रु० 40,000 अर्थात् (4,00,000 − 3,60,000) को सकल लाभ में से कम करना है।
2. ह्रास सभी स्थायी सम्पत्ति अर्थात् भवन, उपस्कर और मोटर गाड़ी पर 10% की दर से जोड़ना है।
3. लाभ हानि खाते का जमा शेष दिया हुआ है उसे इस वर्ष के शुद्ध लाभ में जोड़ना है।

Q. 2. The following is the Trial Balance of E.B. Ltd. as at 30.6.1984.

30.6.1984 को E.B. Ltd. का तलपट अग्रलिखित है

Cash-n-arrear	6,400	Subscribed	
Land	10,000	Capital : 10,000	
Building	25,000	Shares at Rs. 10 per share	1,00,000
Plant and machinery	15,000	Bad debts provision	
Furniture	3,200	on 1st July, 1983	2,400
Carriage Inwards	2,300	Sales	85,000
Wages	21,400	Discounts	750
Salaries	4,600		
Sales returns	2,700	Purchase returns	3,400
Bank charges	100	Sundry creditors	13,200
Travelling	1,200		
Discount	1,550	Share premium	6,000
Coal, gas, water etc.	700		
Rates and taxes	800	General reserve	24,000
Purchases	50,000		
B/R	1,200		
Printing	1,500		
Audit fees	1,500		
General expenses	1,900		
Sundry debtors	42,800		
Stock (1st July, 1983)	25,000		
Fire insurance	400		
Cash in hand	2,500		
Cash at bank	14,000		
	2,34,750		2,34,750

From the above Trial Balance, prepare the Trading Profit and Loss Account for the year ending 30.6.1984 and the Balance-sheet as on that date in the form prescribed under the Companies Act-1956, considering the following matters–

(i) The value of stock as on 30.6.1984 was Rs. 30,000.

(ii) Outstanding liabilities as on 30.6.1984 was wages Rs. 3,200; salaries Rs. 500 and rates and taxes Rs. 200.

(iii) Fire insurance prepaid was Rs. 120.

(iv) Provision to be made at 5% on sundry debtors for had debts.

(v) Depreciation to be changed on building 2½ &. on plant and machinery @ 10% an on furniture @ 10% per share.

(vi) The authorise capital of the company is 50,000 shares of Rs. 10 per share.

1.6 पठनीय पुस्तकें

1. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० एम० शुक्ल
2. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० के० सिंह
3. एडवांस्ड लेखांकन — शुक्ला एवं श्रीनिवास
4. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — एस० एन० महेश्वरी
5. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II — शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

कम्पनी का एकीकरण

पाठ-संरचना

2.0 उद्देश्य
2.1 परिचय
2.2 एकीकरण का आशय
2.3 एकीकरण का उद्देश्य
2.4 एकीकरण के दोष
2.5 एकीकरण में लेखा विधि
  2.5.1 लाभ-हानि खाता
  2.5.2 लाभ-हानि समायोजन खाता
  2.5.3 आर्थिक चिट्ठा
  2.5.4 अन्तिम खातों की स्वीकृति
  2.5.5 असहमत अंशधारी
2.6 उदाहरण
2.7 सारांश
2.8 अभ्यास हेतू प्रश्न
2.9 पठनीय पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों को कम्पनी के एकीकरण के बारे में विस्तृत जानकारी देना है।

2.1 परिचय

इस पाठ में कम्पनी के एकीकरण का अर्थ, उद्देश्य, इसके लाभ हानि एवं लेखांकन विधियों के बारे में विस्तृत जानकारी देना है।

2.2 एकीकरण का आशय

जब दो समान प्रकृति की व्यापार करनेवाली कम्पनियाँ आपसी प्रतिस्पर्द्धा कम करने और अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से एक हो जाती हैं तो इसे हम एकीकरण कहते हैं। दो का समापन और एक का निर्माण एकीकरण कहलाता है। समापन होने वाली कम्पनियों को विक्रेता कम्पनी कहा जाता है और क्रय करने वाली नयी कम्पनी को क्रेता कम्पनी कहा जाता है।

2.3 एकीकरण के उद्देश्य

एकीकरण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं

1. व्यय को कम करना।
2. प्रतिस्पर्द्धा को कम करना।
3. व्यापार की नीतियों और कार्यवाहियों पर नियंत्रण स्थापित करना।
4. उत्पादन लागत कम करना।
5. उत्पादन बढ़ाना।
6. पूँजी बढ़ाना।
7. कार्य प्रणाली में विशेषज्ञों की सहायता प्राप्त करना।
8. वितरण सम्बन्धी प्राप्त सुविधा प्राप्त करना।
9. जनता की अधिकतम सेवा करना।

2.4 एकीकरण के दोष

एकीकरण के निम्नलिखित दोष हैं

1. इससे एकाधिकार का जन्म होता है।
2. एकीकरण से कीमतों में वृद्धि की सम्भावना रहती है।
3. वस्तुओं की कमी बाजार में हो सकती है।
4. इससे छोटी कम्पनियों के लोप होने का भय उत्पन्न हो जाता है।
5. इससे अधिक पूँजी की जरूरत हो सकती है।
6. प्रबन्ध सम्बन्धी कठिनाइयाँ भी उत्पन्न हो जाती है।
7. व्यापार की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

2.5 एकीकरण की लेखाविधि (Accounting process in Amalgamation)

एकीकरण सम्बन्धी लेखे विक्रेता कम्पनियाँ (Vendor Companies) एवं क्रेता कम्पनी (Purchasing Company) अर्थात् नयी कम्पनी की पुस्तकों में करने पड़ते हैं।

2.5.1 क्रय मूल्य का निर्धारण :

एकीकरण में क्रय मूल्य का निर्धारण एक कठिन समस्या है। इसका निर्धारण आपसी समझौते से होता है। हमलोगों को मूल्य निर्धारण करते समय यह देखना चाहिए कि

(1) क्रय मूल्य दिया है या नहीं। अगर क्रय मूल्य दिया हुआ है तो उसी आधार पर उसकी गणना की जाती है।

(2) अगर क्रय मूल्य नहीं दिया हुआ है तो उसके दो आधार हैं

(a) शुद्ध सम्पत्ति प्रणाली (Net Assets Method)

(b) शुद्ध फण्ड प्रणाली (Net Fund Method)

(a) शुद्ध सम्पत्ति प्रणाली : इस प्रणाली में हम कुल सम्पत्ति घटाव कुल दायित्व शुद्ध सम्पत्ति नियम का प्रयोग करते हैं।

कुल सम्पत्ति नाम मात्र की सम्पत्ति कुल दायित्व शुद्ध सम्पत्ति।

(b) शुद्ध फण्ड प्रणाली : इस प्रणाली के अन्तर्गत पूँजी, लाभ एवं संचय के योग से दायित्व घटाकर शुद्ध फण्ड निकाला जाता है। दोनों पद्धति से क्रय मूल्य एक ही आयेगा।

(3) क्रय मूल्य को आंतरिक मूल्य के आधार पर भी निकाला जाता है।

$$\text{अंश का आंतरिक मूल्य} \quad \frac{\text{कुल सम्पत्ति} \quad \text{कुल दायित्व}}{\text{जारी किये गये वंश}}$$

2.5.2 उपार्जन शक्ति के आधार पर मूल्य का निर्धारण :

इस पद्धति के अनुसार कुल क्रय मूल्य दिया रहता है। इसी कुल क्रय मूल्य का बँटवारा एकीकरण होनेवाली कम्पनियों में उसके औसत लाभ अर्जन क्षमता के आधार पर करते हैं। जैसे अ कम्पनी ओर ब कम्पनी का औसत लाभ क्रमश: 2,000 रु० और 3,000 रु० है और क्रय मूल्य 15,000 रु० है जिसे 10,000 रु० अंशों और 5,000 रु० नकद दिये जायेंगे तो इनका बँटवारा अ और ब कम्पनी में क्रमश: 2 : 3 के अनुपात में होगा अर्थात् अ कम्पनी को 4,000 रु० का अंश और 2,000 रु० नकद मिलेंगे और ब कम्पनी को 6,000 रु० का अंश और 4,000 रु० का नकद मिलेगा।

नयी कम्पनी द्वारा जारी अंशों की संख्या हमलोगों को दूसरी कठिनाई यह होती है कि विक्रेता कम्पनियों का कितना अंश क्रेता कम्पनी से मिलेगा। इसका निर्धारण नयी कम्पनी के अंश की कीमत पर निर्भर करता है।

$$\text{अंशों की संख्या} \quad \frac{\text{कुल सम्पत्ति}}{\text{एक अंश का मूल्य}}$$

$$\text{No of Share} = \frac{\text{Net Assets}}{\text{Price of one share}}$$

यह नियम तभी लागू होगा जब सारा-का-सारा क्रय मूल्य अंशों में दिया गया हो।

नयी कम्पनी की पूँजी : अगर नई कम्पनी ने अलग से अंश जारी नहीं किया हो तो उसकी पूँजी उतनी ही होगी जितना अंशों का निर्गमन उसने पुरानी अर्थात् विक्रेता कम्पनी को दिया है।

चुकता पूँजी = पुरानी कम्पनियों को जारी किये गये अंश × अंश की कीमत

2.5.3 बिक्रेता कम्पनी का बही में प्रविष्टियाँ :

प्रत्येक विक्रेता कम्पनी एक भुगतान प्राप्ति खाता (Realisation A/c) खोलेगी और सभी सम्पत्ति और दायित्व तथा क्रय मूल्य, क्रय व्यय इत्यादि की प्रविष्टि करेगा।. पुरानी कम्पनी के सभी खाते बन्द कर दिये जायेंगे

इसके लिए प्रविष्टियाँ निम्नांकित होंगी

Realisation A/c Dr.

To Each Asset A/c

(प्रत्येक सम्पत्ति को पुस्तकीय मूल्य पर स्थानान्तरित किया)

Each Liability A/c Dr.

To Realisation A/c

(Being Liabilities Transferred)

(दायित्वों का स्थानान्तरण किया)

7. Having Calculated the Purchase Price and number of shares in the Purchasing companies, we propose to take you to the books of Journal in the under companies and purchasing company.

Journal Entries in the Books of vender company

1. For transferring Sundry Assets

Realisation A/c Dr. Book-Values

To Sundry Assets A/c

(Being transfer of tangible

assets excluding fictitious assets)

---

2. For transferring sundry liabilities

Liabilities (Each) A/c Dr. Book-Values

To Realisation A/c

(Being transfer of liabilities)

3. For transferring Provisions

Provision for Bad debts A/c Dr.

Depreciation Fund A/c Dr.

(Being respective assets taken as Gross amount)

4. It funds are taken over by purchasing company

Employees provident Fund A/c Dr.

Pension Fund etc. A/c Dr.

(Being funds taken over by new company)

Note – If the funds or any one fund is not taken over than the Particular liability A/c Dr.

To Bank

(Being paid .....)

5. For Purchase consideration

Purchasing Co. A/c Dr.

To Realisation A/c

(Being purchase consideration due)

6. If any Assets is not taken over

(a) If sold at Book Value

Bank A/c Dr.

To Asset A/c

(Being the amount realised)

(b) If sold at a higher price, at a profit

Bank A/c Dr.

To Asset A/c

To Realisation A/c

(Being the amount realised more than Book-Value)

(c) If sold at a loss

Bank A/c Dr.

Realisation B/c Dr.

To asset A/c

Being asset (loss) sold at lower price than the Book-Value

7. Similarly if any liability is not taken over by the purchasing company, but the same is to be paid by the vender company.

(a) If paid at Balance-Sheet value

Liability A/c Dr.
To Bank
(Being liability paid at Book Value)

(b) If paid at a higher price

Liability A/c Dr.
Realisation A/c Dr.
To Bank
(Being liability paid with Premium)

(c) If paid at discount

Liability A/c Dr.
To Bank
To Realisation
(Being liability paid at discount)

8. For Liquidation/Reconstruction expenses

(a) If paid by the vender company

Realisation A/c Dr.
To Bank
(Being cost paid)

(b) If paid by purchasing company and included in purchase price

Realisation A/c
To Bank
(Being of liquidation included in purchase price)

(c) No Entry if paid by new company

9. For the discharge of Debentures

Debenture A/c Dr.
To Cash/Debenture/Shares
(Being Debentures paid at par)

N.B.(1) If Debentures are paid at premium or lower price and, the Realisation A/c will be Debited and Credited i.e.,

For premium

Debenture A/c	Dr.	
Realisation A/c	Dr.	
To Cash/Debenture/Shares A/c		

(Being Debentures paid at premium)

Debenture A/c	Dr.	
To Realisation A/c		
To Cash/Debenture/Shares		

(Being Debentures paid at discount)

Note — In case of preference shares the Entries will be the same.

10. **For Profit on Realisation A/c**

Realisation A/c	Dr.	
To equity share holders A/c		

(Being profit on Realisations)

or Equity shareholders A/c	Dr.	
To Realisation A/c		

(Being loss ....)

11. For transferring the credit balance

Equity share capital A/c	Dr.	
General Reserve A/c	Dr.	
Dividend Equalisation Fund A/c	Dr.	
Contingency Fund A/c	Dr.	
Employees Accident or		
Compensation Fund A/c	Dr.	
P and L A/c (cr.) A/c	Dr.	
Insurance Fund A/c	Dr.	
Share Premium A/c	Dr.	
To Equity Shareholders A/c		

(Being close of Cr. balance A/c)

12. For closing the A/c of fictitious Assets

Equity shareholders A/c . Dr.

To P + L A/c Dr.

To Preliminary expenses A/c

To Development expenses etc.

(Being transfer expenses assets)

13. For Receipt of consideration

Shares (Equity/Prof.) in new Co. A/c Dr.

Debenture (Equity/Prof.) in new Co. A/c Dr.

Cash/Bank A/c

To Purchasing A/c

(Being purchase price received)

14. Equity shareholders A/c Dr.

To Equity shares in new Co.

To cash/Bank A/c

(Being payment made to shareholders)

15. Liquidator of vendor Co. A/c Dr.

To Equity share capital A/c

To share premium A/c

To Pref. share capital A/c

To Debentures A/c

To Cash/Bank A/c

(Being the payment of purchase price by shares, debentures and cash)

16. Good will A/c Dr.

To Cash/Bank A/c

(Being expenses of liquidation)

Note–We have discussed in detail the Journal Entries in both the books. This is also applicable in the case of absorption and reconstruction.

2.6 Example

The A Co. Ltd. B. Co. Ltd. agree to combine and form a new company, A. and B. Co. Ltd. with a capital of Rs. 20,00,000 divided into 2,00,000 Equity Shares of Rs. 10/- each. The new company is to take up the whole of the assets and liabilities of both the companies on a consideration of issue to A. Co. Ltd. of Rs. 10,00,000 and to B. Co. ltd. of Rs. 8,00,000 in fully paid Rs. 10 shares.

The new company is to pay the liquidation expenses of the vendor companies viz. A Co. Ltd. Rs. 12,000 and B. Co. Ltd. Rs. 10,000 as also its own formation expenses, Rs. 15,000.

A. Co. Ltd. और B. Ltd. मिलकर एक नयी कम्पनी A और B. Co. Ltd. बना लेती है। नयी कम्पनी सभी सम्पत्ति और दायित्व को ले लेती है और A. Co. को 10,00,000 रु० और B. Co. को 8,00,000 पूर्णदत्त अंश 10 रु० प्रति अंश की दर से भुगतान कर लेती है।

नयी कम्पनी समापन व्यय A. Co. के लिए 12,000 रु० और 10,000 रु० क्रमश: चुकाती है तथा अपना निर्माण व्यय 15,000 रु० खर्च करती है। एकीकरण की तिथि पर दोनों कम्पनियों का शेष निम्न प्रकार था :

On the date of amalgamation the balance in the books of the vender companinies are as follows :

	A Co. Ltd.	B. Co. Ltd.
Issued, Subscribed and Paidup Capital	9,00,000	7,00,000
Reserve Fund	1,00,000	80,000
Creditors	75,000	60,000
P and L A/c (or)	40,000	35,000
Goodwill	1,00,00	85,000
Land and Building	2,50,000	2,00,000
Plant and Machinery	6,70,000	5,30,000
Debtors	50,000	35,000
Stock-in-trade	20,000	10,000
Bank Balance	25,000	15,000

The amalgamation is onl completed, the various assets and liabilities being taken over at their book-values.

You are required to give journal entries in the books of A. Co. Ltd. and opening entries and the Balance sheet of the new company.

एकीकरण की तिथि के शेष दिये हुए हैं तो आप A. Co. Ltd. और क्रेता कम्पनी की बही में जर्नल दीजिए और नयी कम्पनी का आर्थिक चिट्ठा बनाइये।

Solution :

Journal in the book of A. Co. Ltd. (vendor)

	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Realisation A/c Dr.	11,15,000	
To Good Will A/c		1,00,000
To Land and Building A/c		2,50,000
To Plant and Machinery A/c		6,70,000
To Debtors A/c		50,000
To Stock		20,000
To Bank		25,000
(Being the transfer of asset at Book-values)		
Creditors A/c Dr.	75,000	
To Realisation A/c		75,000
(Being transfer of Creditors)		
A and B Co. Ltd. A/c Dr.	10,00,000	
To Realisation A/c		10,00,000
(Being Purchase price due)		
Equity Share holders A/c Dr.	40,000	
To Realisation A/c		40,000
(Being loss on Realisation transferred to the equity shareholders A/c)		

Share capital A/c Dr.	9,00,000	
Reserve Fund A/c Dr.	1,00,000	
P and L A/c	40,000	
To Shareholders A/c		10,40,000
(Being Capital Fund transferred)		
Equity shares in A. and B. Co. Ltd.	10,000	
To A. and B. Co. Ltd.		10,00,000
(Being purchase price received)		
Equity Shareholders A/c Dr.	10,00,000	
To Equity shares in A. and		
B Co. Ltd.		10,00,000
(Being equity shares transferred to new company shareholders)		

Amalgamation Contd.

2.5.4. Entries in the books purchasing company :

क्रेता कम्पनी सर्वप्रथम 'ख्याति' या पूँजी संचित की रकम निकालेगी। दोनों में से कोई एक ही होगा।

First of all we are to find out the amount of goodwill or capital Reserve.

If the total credit balances (i.e. sundry liabilities and purchase consideration) are greater than the total debit balances, the difference will represent 'good will'

Or

If the total debit balances are greater than the total credit balances, the difference will represent capital Reserve.'

अगर क्रेता कम्पनी ज्यादा भुगतान कर रही है तो अन्तर की रकम ख्याती होगी। अगर कम कर रही है तो अन्तर पूँजी संचित होगा।

The Purchase company will open a Business purchase A/c and Liquidator of vendor company A/c. क्रय करनेवाली कम्पनी Business purchase A/c खोलेगी।

Journal Entries :

1. Business purchase A/c Dr.
   To Liquidator of vendor Co. A/c
   (Being the purchase consideration due)
2. Sundry Assets A/c Dr.
   Goodwill A/c (Bal. Fig.) Dr.
   To Sundry Liabilities (taken-over)
   To Business purchase A/c
   To capital Reserve (Bal. Fig.)
   (Being Assets and Liabilities taken-over)

In the Books of A and B Co. Ltd.

		Dr. Rs.	Cr. Rs.
Goodwill A/c Dr. (Bal.)	Dr.	1,30,000	
Land and Building A/c	Dr.	4,50,000	
Plant and machinery A/c	Dr.	12,00,000	
Debtors A/c	Dr.	85,000	
Stock A/c	Dr.	30,000	
Bank A/c	Dr.	40,000	
To Creditors			1,35,000
To Liquidator of A. Co. Ltd.			10,00,000
To Liquidator of B. Co. Ltd.			8,00,000
(Being various assets and liabilities taken over and Purchase price payable to the vendor companies, the difference being debited to goodwill A/c).			
Liquidator of A. Co. Ltd.	Dr.	10,00,000	
Liquidator of B. Co. Ltd.	Dr.	8,00,000	
To Equity share capital A/c			18,00,000
(Being pyment of purchase price)			
Liquidation Expenses of A. Ltd	Dr.	12,000	
Liquidation Expenses of B. Ltd.	Dr.	10,000	

Formation Expenses A/c	Dr.	15,000	
To Bank A/c			37,00,000
(Being liquidation and formation Expenses paid)			
Goodwill A/c	Dr.	22,000	
To Liquidation Expenses of A Ltd. A/c			12,000
To Liquidation Expenses of B. Ltd. A/c			10,000
(Being expenses transferred to good will A/c)			

A. and B. Co. Ltd.

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
AUTHORISED CAPITAL		Fixed Assets	
2,00,000 Equity		Goodwill	1,52,000
Shares of			
Rs. 10 each	20,00,000		
ISSUED, SUBSCRIBED			
AND PAID-UP CAPITAL		Land and Building	4,50,000
1,80,000 SHARES OF		Plant and	
Rs. 10 EACH FULLY		Machinery	12,00,000
PAID	18,00,000	Debtors	85,000
Reserves anos		Stock	30,000
Surplus	Nil	Formation	
Creditors	1,35,000	Expenses	15,000
	19,35,000		19,35,000

N.B. : More questions to be solved from the Prescribed Books :

(8) असमत अंशधारी : जो अंशधारी एकीकरण या संविलयन में सहमति नहीं प्रकट करते हैं, वे अपने अंशों का हस्तान्तरण नहीं करते हैं। धारा 395 के अनुसार ऐसे अंशधारियों के अंशों को क्रेता कम्पनी निम्नलिखित शर्तों पर ले सकती है--

(1) उसी शर्त पर जिस शर्त पर सहमति प्रकट करने वाले का

(2) या आपसी समझौता के अनुसार या

(3) न्यायालय के आदेशानुसार।

लेखा विधि : इसके लिए एक अलग खाता खोला जायेगा। भुगतान उसी प्रकार से किया जायेगा जैसे ऋण पत्रधारी या प्रेफेरेन्स अंशधारी को। इस पर हानि लाभ भुगतान प्राप्ति खाता में समायोजित होगा। किन्तु आर्थिक चिट्ठा के सभी मद जो समता अंश से सम्बन्धित हैं बहुमत अंशधारियों में हस्तान्तरित किया जायेगा।

2.7 सारांश

एकीकरण का अर्थ एक ही प्रकार के व्यापार के संलग्न दो या दो से अधिक इकाइयों का आपस में मिलकर एक नई कम्पनी के निर्माण कर नये सिरे से व्यापार करना है। इसके अन्तर्गत क्रेता कम्पनी तथा विक्रेता कम्पनी की पुस्तक में जर्नल के लेखे तथा आवश्यक खातें खोले जाते हैं। क्रय मूल्य का निर्धारण शुद्ध सम्पत्ति तथा भुगतान विधि द्वारा किया जाता है।

2.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. बिहार स्टील लि० और यू०पी० आयरन लि० एकीकरण के लिए सहमत हुई। उनके चिट्ठे निम्न प्रकार हैं।

	बि० स्टील लि० Rs.	यू०पी० आ०लि०		बि० स्टील लि० Rs.	यू०पी० आ०लि०
पूँजी 1,00,000 अंश					
1 रु० वाले	1,00,000		भवन	50,000	45,000
40,000 अंश			प्लाण्ट	24,000	19,000
2 रु० वाले		80,000	पैटर्न्स	2,500	1,800
संचय	10,000	15,000	रहतिया	14,000	15,200
विविध लेनदार	3,000	1,000	देनदार	18,000	16,000
लाभ हानि खाता	2,000	5,000	प्राप्त बिल	2,000	1,400
	1,15,000	1,01,000		1,15,000	1,01,000

एकीकरण के पूर्व बिहार स्टील लि० के अंशधारियों को 2% की दर से लाभांश का वितरण होना है और दोनों कम्पनियों की सम्पत्तियाँ दिये हुए मूल्य पर ही जायेंगी। पुरानी कमपनी के अंशधारी का अनुपात में नयी कम्पनी का अंश प्राप्त करेंगे। एकीकृत कम्पनी का चिट्ठा बनाए।

2. एकीकरण का आं प्राप्त करेंगे। एकीकृत कम्पनी का चिट्ठा बनाए।

3. एकीकरण में क्रय मूल्य का निर्धारण कैसे होता है? शुद्ध सम्पत्ति और कोष पद्धति में क्या अन्तर है? उदाहरण दीजिए।

4. असहमत अंशधारियों का एकीकरण में क्या अधिकार है? इस सम्बन्ध मं लेखाविधि कैसे की जाएगी?

5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

(अ) शुद्ध कोष पद्धति

(ब) उपार्जन क्षमता पद्धति

(स) व्यापार क्रय खाता

2.9 पठनीय पुस्तकें

1. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० एम० शुक्ल
2. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० के० सिंह
3. एडवांस्ड लेखांकन — शुक्ला एवं श्रीनिवास
4. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — एस० एन० महेश्वरी
5. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II — शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

संविलयन एवं पुनर्निर्माण

पाठ संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 संविलयन के मुख्य तत्व

3.3 एकीकरण और संविलयन में अन्तर

3.4 संविलयन से लाभ एवं हानि

3.5 संविलयन में लेखा

3.6 कम्पनियों की आपसी सौदों की समाप्ति

3.7 पुर्निर्माण से आशय

3.8 पुनर्निर्माण की विधि

3.9 पुनर्निर्माण के प्रकार

3.9.1 पूँजी की कमी

3.9.2 पूँजी के परिवर्तन

3.10 लेखांकन विधि

3.11 उदाहरण

3.12 सारांश

3.13 अभ्यास हेतू प्रश्न

3.14 पठनीय पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस पाठ में छात्रों को कम्पनियों के एकीकरण तथा संविलयन में अन्तर की जानकारी दी जायेगी तथा पुर्ननिर्माण लेखे के बारे में विस्तार से बताया जायेगा।

3.1 परिचय

जब एक कम्पनी दूसरी कम्पनी को, आपसी प्रतिस्पर्द्धा और उत्पाद लागत को कम करने के उद्देश्य से खरीद लेती है और वह कम्पनी समाप्त हो जाती है तो इसे संविलयन कहते हैं। इसमें एक कम्पनी समाप्त होती है और कोई कम्पनी इसमें नई नहीं बनती है। क्रेता विक्रेता कम्पनी को दाम देकर व्यवसाय खरीद लेती है।

3.2 संविलयन के मुख्य तत्त्व

संविलयन के मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं

(1) क्रय और विक्रय करनेवाली कम्पनी पहले से विद्यमान रहती है।

(2) क्रय और विक्रय करनेवाली कम्पनी का व्यापार एक जैसा होता है।

(3) क्रेता कम्पनी प्रतिफल का भुगतान करती है।

(4) विक्रेता कम्पनी का समापन हो जाता है।

3.3 एकीकरण और संविलयन में अन्तर

एकीकरण और संविलयन में निम्नलिखित अन्तर हैं

(1) एकीकरण में दो कम्पनी का समापन होता है और एक नई कम्पनी बनती है। संविलयन में एक विद्यमान कम्पनी ही एक कम्पनी को खरीद लेती है।

(2) एकीकरण में नई कम्पनी बनती है किन्तु संविलयन में नई कम्पनी नहीं बनती है।

(3) एकीकरण में दोनों कम्पनियों की आर्थिक स्थिति प्राय: एक जैसी होती है लेकिन संविलयन में प्राय: खरीदने वाली कम्पनी की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है।

(4) एकीकरण में प्राय: प्रतिफल का भुगतान अंशों के रूप में दिया जाता है। किन्तु संविलयन में ऋण पत्र नकद के रूप में भी किया जाता है।

(5) क्रय मूल्य की गणना तथा लेखा लिखने की विधि प्राय: एक समान हैं। संविलयन में सिर्फ एक विक्रेता कम्पनी का लेखा किया जाता है।

(6) संविलयन में विक्रेता कम्पनी के अंशधारी और अंशधारियों के साथ हो जाते हैं, किन्तु एकीकरण में दोनों विक्रेता कम्पनी के अंशधारी ही सदस्य होते हैं।

(7) सभी एकीकरण संविलयन नहीं होते हैं लेकिन सभी संविलयन एकीकरण के ही रूप होते हैं।

3.4 संविलयन से लाभ एवं हानि

संविलयन से निम्नांकित लाभ हैं

(1) प्रतियोगिता का अन्त हो जाता है।

(2) बड़े पैमाने के उत्पादन का लाभ प्राप्त होता है।

(3) उपभोक्ता को भी सस्ती दर पर वस्तुएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

(4) वे सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं जो एकीकरण के हैं।

संविलयन से हानि :

संविलयन से निम्नांकित हानियाँ हैं

(1) इससे एकाधिकार को बढ़ावा मिलता है।

(2) उपभोक्ताओं को शोषण धीरे धीरे बढ़ जाता है।

(3) कम्पनी की कार्य कुशलता गिर जाती है।

3.5 संविलयन में लेखा

संविलयन और एकीकरण में लेखा रखने की विधि एक समान है। एकीकरण में दो कम्पनी समाप्त होती है किन्तु संविलयन में एक समाप्त होनेवाली कम्पनी विक्रेता कहलाती है और क्रेता कम्पनी विद्यमान रहती है।

लेखा के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन पिछले पाठ एकीकरण में किया गया।

Problem– The Balance Sheet of Moon Ltd. as on 31.12.84 is as follows :

मून लि० का आर्थिक चिट्ठा 31.12.84 को निम्न है

	Rs.		Rs.
Share Capital 5,000 Equity Shares of Rs. 100 each	5,00,000	Building	2,00,000
9% Debentures	1,00,000	Plant	1,00,000
Creditors	90,000	Stock	30,000
		Debtors	1,20,000
		Bank	15,000
		Preliminary Expenses	35,000
		Profit and Loss A/c	1,30,000
	6,90,000		6,90,000

Sun Ltd. formed to take over the business of Moon Ltd. on the following terms–

(1) Preferential Creditors Rs. 10,000 be paid in full.

(2) Ordinary creditors be given the option to either accept 50% of their claims in the cash or convert their claims into 12% Debentures of Sun Ltd.

Hal of the ordinary creditors for the cash.

(3) Debentures be discharged by issue of sufficient number of 12% Debenture of Sun Ltd. as would bring the same amount of interest.

(4) Shareholders be issued 2,000 Equity shares of Rs. 100 each of Sun Ltd. at a premium of 20%.

(5) Liquidation Expenses Rs. 5,000 be paid.

Prepare the Balance Sheet of sun Ltd. asuming that the assets of Moon Ltd. are taken over at 25% discount and also give the opening journal.

Solution–

First of all we will calculate the Purchase consideration–

		Rs.	Form
(1)	Preferential creditors–		
	Paid in full	10,000	Cash
(2)	Ordinary creditors–		
	Creditors of Rs. 40,000		
	Opted ½ in cash	20,000	Cash
	½ creditors converted their claim in 12% Debentures	40,000	12% Debenture
(3)	Debenture holders		
	9% Debenture	75,000	12% Debenture
	$\left(\frac{1,00,000 \times 9,000}{12,000}\right)$		
(4)	Equity Shares 2000 × 100 =	2,00,000	Equity shares
	Share Premium	40,000	
(5)	Liquidation Expenses	5,000	Cash
	Purchase Price =	3,90,000	

क्रय मूल्य में सामान्य व्यय भी सम्मिलित है।

Journal Entries in the Sun Ltd.

			Dr.	Cr.
			Rs.	Rs.
1.	Building A/c	Dr.	1,50,000	
	Plant A/c	Dr.	1,20,000	
	Stock A/c	Dr.	22,500	
	Debtors A/c	Dr.	90,000	
	Bank A/c	Dr.	15,000	
	To Liquidator of Moon Ltd.			3,90,000
	To Capital Reserve (Bal.)			7,500
	(Being assets taken over at 25% less and purchase price payable and balance transfer to capital Reserve A/c)			
2.	Liquidator of Moon Ltd. A/c	Dr.	3,90,000	
	To Share Capital A/c			2,00,000
	To Share Premium A/c			40,000
	To 12% Debenture A/c			1,15,000
	To Cash A/c			35,000
	(Being purchase price paid)			
3.	Capital Reserve A/c	Dr.	5,000	
	To Cash (Cost of liquidation)			
	(Being cost of liquidation paid in cash transferred to capital Reserve)			

Sun Co. Ltd.

Balance Sheet as at 31.12.84

Liabilities	**Rs.**	**Assets**	**Rs.**
Share capital		Fixed Assets	
Issued, Subscribed		Building	1,50,000
and paid up 2,000		Plant	1,20,000
equity Shares of		Investments	Nil
Rs. 100 each 2,00,000		Current Assets :	
(Issued for consideration		Loans and Advances :	
other than cash)		Stock	22,500
Reserves and surplus		Debtors	90,000
Share Premium	40,000	Misc. Expenses	Nil
Capital Reserves	2,500		
Secured Loan			
12% Debentures	1,15,000		
Unsecured Loan			
Bank O/D	25,000		
Current Liability	Nil		
	3,82,500		3,82,500

प्रश्न 2. 31 दिसम्बर 1986 को ऐंग्लो इजिप्सियन कं० ने अपना व्यापार B एक C कं० को बेचने का निश्चय किया। इस तिथि को उसका चिट्ठा निम्न था।

पूँजी		फ्रीहोल्ड सम्पत्ति	15,000
1 रु० प्रति अंश वाले 20,000 अंश	20,000	प्लांट्स	1,500
5% प्रथम बन्धक ऋण पत्र	10,000	रहतिया	3,500
लेनदार	3,000	देनदार	4,000
संचय कोष	5,000	प्राप्य बिल	2,000
लाभ हानि खाता	2,000	ख्याति	4,000
		रोकड़	10,000
Rs.	40,000	Rs.	40,000

B कं० C कं० लि० सम्पत्तियों को (ख्याति एवं रोकड़ को छोड़कर) उपर्युक्त चिट्ठा में वर्णित मूल्य पर लेने के लिए तथा उसमें से व्यापारिक लेनदारों के दायित्व को समाप्त करने के लिए और ख्याति के 10,000 रु० चुकाने के लिए सहमत हो गई। क्रय मूल्य का भुगतान AE कं० लि० को L एण्ड C कं० लि० के 1 रु० वाले 12,000 अंशों का 1,25 रु० प्रति अंश की दर से आबंटन द्वारा एवम् शेष का नगदी में किया जायेगा।

AE कं० लि० का ऐच्छिक समापन हुआ और X को निस्तारक नियुक्त किया गया। समापन के व्यय 300 रु० हुए। AE कं० की पुस्तकों को बन्द कीजिए एवं यह भी दिखाइए कि अंशधारी कुल कितना धन प्राप्त करेंगे।

In the book of Anglo-Egyption company (Vendor)

Solution (समाधान)

विक्रेता कम्पनी

Realisation A/c

	Rs.		Rs.
To Free hold Property A/c	15,000	by Sundry Creditor's	3,000
To Plant and Tools A/c	1,500	By B and C Co. Ltd.	33,000
To Stock A/c	3,500		
To Sundry Debtors A/c	4,000		
To Bill's receivable A/c	2,000		
To Goodwill A/c	4,000		
To Bank A/c (Cost of Liquidation)	300		
To Share-holder's A/c	5,700		
	36,000		36,000

Bank A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	10,000	By First mortgage D. holders A/c	10,000
To B and C. Co. Ltd.	18,000	By Realisation A/c	300
		By Share-holder's A/c	17,700
Rs.	28,000	Rs.	28,000

British and Colonial Co. Ltd. A/c

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	33,000	By Share (in British and Colonial Co. Ltd.) A/c	15,000
		By Bank A/c	18,000
Rs.	33,000	Rs.	33,000

Share-holder's A/c

	Rs.		Rs.
To Shares (in B and C Ltd.) A/c	15,000	By Share Capital A/c	20,000
To Bank A/c	17,700	By Reserve Fund A/c	5,000
		By Realisation A/c	5,700
		By Profit and Loss A/c	2,000
Rs.	32,700	Rs.	32,700

3.6 कम्पनियों की आपसी सौदों की समाप्ति (Elimination of Inter-Companies Transaction)

कभी कभी एक कम्पनी दूसरी ऐसी कम्पनी को अपने में मिला लेती है जिसका अंश पहले से खरीदा रहता है। ऐसी स्थिति में इसे समाप्त करना पड़ता है।

इस प्रकार अगर क्रेता कम्पनी विक्रेता कम्पनी से उधार क्रय विक्रय करती है तो लेनदार तथा देनदार में समयोजन करना पड़ता है। अगर क्रय विक्रय पर लाभ हुआ है किन्तु माल का स्टॉक बच गया है तो जितना माल का स्टॉक बच गया है उसी अनुपात में लाभ कम हो जायेगा।

3.7 पुनर्निर्माण से आशय

जब कम्पनी को काफी व्यापारिक हानि होती है या अति पूँजीकरण हो जाता है, या सम्पत्ति दायित्वों से कम हो जाती है और कम्पनी को विश्वास रहता है कि सुधार करके लाभ बढ़ सकता है तो वह पुराने व्यवसाय को समाप्त करके नये सिरे से उसे स्थापित करता है तो इसे हम कम्पनी का पुनर्निर्माण कहते हैं।

3.8 पुनर्निर्माण की विधि

अगर कोई कम्पनी पुनर्निर्माण करना चाहती है तो उसे निम्नलिखित नियमों का अनुसरण करना अनिवार्य है

(i) अन्तर्नियम का पालन करना

(ii) अंशधारियों की आम सभा से विशेष प्रस्ताव पास करना।

(iii) न्यायालय की स्वीकृति प्राप्त करना

(iv) न्यायालय से आदेश मिलने पर कम्पनी को अपने नाम के साथ 'पूँजी कम हुई' (Fund Reduced) शब्द जोड़ देती है।

(v) जब न्यायालय पुनर्निर्माण का आदेश दे देता है तो कम्पनी का इसका पंजीयन कम्पनी रजिस्ट्रार यहाँ कराना पड़ता है।

3.9 पुनर्निर्माण के प्रकार

पुनर्निर्माण दो प्रकार के होता है

(i) आंतरिक पुनर्निर्माण

(ii) बाह्य पुर्निर्माण

(i) आंतरिक पुनर्निर्माण में कम्पनी अपने पूर्व की पूँजी को घटाती है और अपना नया पंजीकरण करती है।

3.9.1 पूँजी की कमी :

एक कम्पनी पूँजी की कमी निम्नलिखित कारणों से करती है

(क) यदि कम्पनी की सम्पत्ति उसकी पूँजी का प्रतिनिधित्व नहीं करती है तो कम्पनी अपनी खोई हुई पूँजी को अपलिखित करने के लिए अपनी पूँजी कम करती है।

(ख) यदि कम्पनी वर्षों से नुकसान पर चल रही है और कम्पनी को अशा हो कि पुन: निर्माण से लाभ बढ़ सकता है, कम्पनी सफल हो सकती है तो वैसी दशा में कम्पनी अपनी पूँजी को घटा लेती है।

पूँजी कम करने की प्रक्रिया में अगर लेनदार सहमत नहीं होते हैं तो उन लेनदारों की सूची बनाकर उन्हें कम्पनी द्वारा पूरी रकम का भुगतान कर दिया जाना चाहिए या उन्हें उतनी रकम दी जानी चाहिए जो न्यायालय निर्धारित करें। विशेष परिस्थितियों को छोड़कर महाजन के संतुष्ट होने पर ही न्यायालय कम्पनी को पुन: निर्माण का आदेश दे सकता है अन्यथा नहीं।

3.9.2. पूँजी में परिवर्तन (Re-arrangement of share capital) :

कम्पनी अधिनियम की धारा 94 के अनुसार एक अंश पूँजी वाली सीमित कम्पनी, अन्तर्नियमों से अधिकृत हो, तो अंश पूँजी बढ़ा सकती है, एकत्रित कर सकती है, स्टॉक में बदल सकती है, या उपविभाजित कर सकती है।

पूँजी में वृद्धि के लिए एक साधारण प्रस्ताव पारित करना पड़ सकता है। तालिका (अ) के 44वें नियम के अनुसार एक कम्पनी समय-समय पर साधारण प्रस्ताव द्वारा अंश पूँजी बढ़ा सकती है।

3.10 लेखा-विधि (Accounting process)

For the purpose of Accounts we weill open a new A/c known as Capital Reduction A/c. This account will be created for the amount of capital to be reduced and it will be debited to write off the different assets (Real and fictious). The balance of Capital Reduction A/c (credit) will be transferred to Capital Reserve A/c.

A new Balance sheet will be prepared with the reduced Capital and Assets.

पुनर्निर्माण में पूँजी कम करने के लिए एक Capital Reduction खाता खोला जाता है। जितनी पूँजी की कमी होती है उससे इसे जमा करते हैं। अगर लेनदार या ऋणपत्र-धारी कुछ रकम छोड़ते हैं तो उससे भी जमा किया जाता है। Capital Reduction खाता को नाम करेंगे जब सम्पत्ति (वास्तविक और अवास्तविक) को अपलिखित करेंगे। इस खाते के शेष को पूँजी संचय खाता से बन्द कर देते हैं।

3.11 उदाहरण

Problem – 3.

31 दिसम्बर 1986 को Y लिमिटेड और Z लिमिटेड के चिट्ठे निम्न प्रकार थे–

	Y Ltd. Rs.	Z Ltd. Rs.		Y Ltd. Rs.	Z Ltd. Rs.
Equity Share of Rs. 10 each	5,00,000	3,00,000	Sundry Assets	7,50,000	3,50,000
Reserve	1,00,000	55,000	1,000 Share in Y Ltd.		1,00,000
Creditors	1,50,000	95,000			
	7,50,000	4,50,000		7,50,000	4,50,000

Y लिमिटेड ने अंशों के आंतरिक मूल्य के आधार पर Z लिमिटेड का संविलयन किया। क्रय मूल्य का भुगतान पूर्णत: समता अंशों में किया जाना है तथा प्रविष्टियाँ केवल सममूल्य पर की जाती हैं। 20,000 रु० की राशि Y लिमिअेड द्वारा Z लिमिटेड को देय है। Z लिमिटेड के स्टॉक में भी 30,000 रु० का एक ऐसा माल शामिल है जो कि X लिमिटेड द्वारा लागत में 20% जोड़कर बेचा गया था। दोनों कम्पनियों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए। संविलयन के तुरंत बाद का Y लिमिटेड का चिट्ठा बनाइए।

विक्रेता कम्पनी का बही

Solution (समाधान) : Journal Entries in the Books of Z Ltd.

			Rs.	Rs.
Realisation A/c	Dr.		3,50,000	
To Sundry Assets A/c				3,50,000
(Being Assets transferred)				
Creditor's A/c	Dr.		95,000	
To Reaslisation A/c				95,000
(Being transfer of creditors)				
Y Ltd. A/c	Dr.		2,12,500	
To Realisation A/c				2,12,500
(Being record of purchase Price)				
Equity Shareholder's A/c	Dr.		42,500	
To Realisation A/c				42,500
(Being loss transferred)				
Shares in Y Ltd.	Dr.		2,12,500	
To Y Ltd.				2,12,500
(Being receipt of purchase price)				
Equity Share Capital A/c	Dr.		3,00,000	
Reserves A/c	Dr.		55,000	
To Equity Shareholder A/c				3,55,000
(Being transfer made)				
Equity Shareholder's A/c	Dr.		3,12,500	
To Shares in Y Ltd.				3,12,500
(Being distribution of 3125 Shares)				

1. **Assets** 3,50,000 - value of Share in Y Ltd. (1000 × 120)

1,20,000 = Rs. 4 70,000

4,70,000 – Credi ors Rs. 95,000 = Rs. 3,75,000

$\frac{3,75,000}{120}$ = 3,125 Shares Rs. Z Ltd. has already 1,000 Shares in Y Ltd. hence 2125 share in Y Ltd.

2125 × 1000 = 2.12,500/-

2. As Z Ltd. has already 1000 shares in Y Ltd. Hence distribution will be of 3125 shares.

क्रेता कम्पनी का बही

Journal E ntries in Y Ltd. (Purchasing Co.)

			Rs.	Rs.
S. Assets A/c	Dr.		3,50,000	
To creditors A/c				95,000
To Z Ltd.				2,12,500
To Capital Reserve A/c				42,500
(Being taking over of assets and liabilities)				
Z Ltd.	Dr.		2,12,500	
To Equity Share Capital A/c				2,12,500
(Being payment of purchase Price)				
Creditor's of Y Ltd. A/c	Dr.		20,000	
To Debtors of Z, Ltd. A/c				20,000
(Being Cancellation of Common debt.)				
Capital Reserves A/c	Dr.		5,000	
To Stock A/c				5,000
(Being unrealised profit on Stock)				

1. Rs. $\frac{30,000 \times 20}{120}$ = Rs. 5,000

Balance Sheet of Y Ltd.

Capital	Rs.		Rs.
			10,75,000
7,125 Equity Share of		Sundry Assets	
Rs. 100 each	7,12,500		
Reserve and Surplus			
Capital reserve	37,500		
Other Reserves	1,00,000		
Current Liability and Provisions			
Creditors	2,25,000		
Rs.	10,75,000	Rs.	10,75,000

1. 42,500– 5,000 = Rs. 37,500
2. 1,50,000 + 95,000 – 20,000 = Rs. 2,25,000
3. 7,50,000 + 3,50,000 – (20,000 + 9,000 Unrealised Profit)
   = Rs. 10,75,000

Examples : The following examples are solved below to familiarise you with the Entries. नीचे के उदाहरण से आप ज्यादा समझ सकते हैं

Example 1. A company's position on 30th June, 1990 was as follows.

	Rs.
20,000 Equity shares of Rs. 100 each	20,00,000
10,000 6% Debentures of Rs. 100 each	10,00,000
Interest on above	1,20,000

The assets on the date amounted to Rs. 9,60,000 (Valued according to their present worth). The following steps were taken with the approval of all concerned.

(a) The shares were sub-divided into shares of Rs. 5 each and 90% shares were surrendered.

(b) The total claims of the denture holders were reduced to Rs. 4,90,000 and in consideration of this they were also allotted shares (out of the surrendered shares) amounting to 2,50,000.

(c) The shares surrendered but not re-issued were cancelled.

You are required to Draft Journal entries and give the Balance sheet of the company after re-construction.

Solution–

First of all we will prepare the old B/s

यहाँ पहले पुराना B/s बनाएँ

Balance Sheet of A Co. Ltd.

as at 30th June, 1990 (Before Re-construction)

Capital 20,000 Equity share of Rs. 100 each	20,00,000	Sundry Assets	31,20,000
10.000 6% Debentures	10,00,000		
Interest on above	1,20,000		
	31,20,000		31,20,0000

Now, 90% share capital will be reduced.

$\frac{20,000 \times 90}{100}$ = 18,000 shares of Rs. 100 each

= Rs. 18,00,000

Remaining 2.000 shares will be sub-divided

= $\frac{2.000 \times 100}{5}$ = 40,000 shares of Rs. 5 each

यहाँ पर अंशों का खंडन हुआ है। अब 40,000 अंश 5 रु० प्रति अंश के हो गये हैं।

Journal Entries		Dr. Rs.	Cr. Rs.
Equity share Capital A./c	Dr.	18,00,000	
To Capital Reduction A/c			18,00,000
(Being the 90% Capital Reduced)			
6% Debenture A/c	Dr.	11,20,000	
To Debenture holder A/c			11,20,000
(Being the Debentures transferred)			
Debenture holders A/c	Dr.	11,20,000	
To 6% Debture A/c			4,90,000

To Equity share Capital A/c			2,50,00
To Capital Reduction A/c			
(Being the debenture reduced)			3,80,000
Capital Reduction A/c	Dr.	21,80,000	
To Sundry Assets A/c			21,60,000
To Capital Reserve A/c			20,000
(Being the sundry assets written off and balance transferred to Capital Reserve A/c)			

Balance Sheet

(After Re-construction)

Equity share			
90,000 share of			
Rs. 5 each full paid	4,50,000	Sundry Assets	9,60,000
6% debenture			
of Rs. 100 each	4,90,000		
Capital Reserve	20,000		
	9,60,000		9,60,000

Example 2.

निम्नलिखित चिट्ठा सुभाष लि० का है।

पूँजी, 4,000 8% पूर्वाधिकार		भवन	1,60,000
अंश 10 रु० वाले	40,000		
30,000 समता अंश		मशीनरी	80,000
10 रु० वाले	3,00,000		
		फर्नीचर	20,000
लेनदार	60,000		
		देनदार	50,000
		अंशों के निर्गमन पर कटौती	10,000
		लाभ हानि खाता	80,000
	4,00,000		4,00,000

कम्पनी असफल हुई और पुन: निर्माण की निम्नांकित योजना पास की गयी। पूर्वाधिकार अंशों की संख्या वहीं रही पर प्रति अंश मूल्य घटाकर 6 रु० कर दी गयी। समता अंशों की संख्या वही रही पर प्रति अंश राशि 6 रु० से कम कर दी गयी। इस उपलब्ध राशि का योग अंशों के निर्गमन पर कटौती एवं लाभ हानि खाते की राशियों को पूर्णरूप से अपलिखित करने के लिए किया गया तथा 60,000 रु० भवन के 30,000 रु० मशीन के 6,000 रु० फर्नीचर के और शेष देनदारों से अपलिखित करने में प्रयोग किया गया। इन व्यवहारों का जर्नल में लेखा कीजिए तथा पुनर्निर्माण के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा बनाइए।

सुझाव (Solution) : यहाँ एक Capital Reduction A/c खोला जायेगा। जितनी रकम की कटौती होगी उससे इस A/c को Credit करेंगे। जिन सम्पत्तियों को अपलिखित किया जायेगा, उनको Credit करेंगे तथा Capital Reduction A/c को Debit किया जायेगा।

Journal Entries in the Subhash Ltd.

		Dr.	Cr.
Pref. share Capital A/c	Dr.	16,000	
Equity share Capital A/c	Dr.	1,80,000	
To Capital Reduction A/c			1,96,000
(Being Reduction of share Capital & Rs. 4 per share Preference share and Rs. 6 per share of Equity share)			
Capital Reduction A/c	Dr.	1,96,000	
To profit and loss A/c			80,000
To Discount on issue of shares			10,000
To Building			60,000
To Machinery			30,000
To Furniture			6,000
To Debtor			10,000
(Being the use of Capital Reduction amount to write off fictitious assets and losses)			

Balance Sheet

Capital and Liabilities		Assets	
Authorised Capital		Fixed Assets	
4,000 Pref shares of		Building	1,00,000
Rs. 6 each	24,000	(1,60,000– 60,000)	
30,000 Equity shares of		Macinery	50,000
Rs. each	1,20,000	(80,000 – 30,000)	
	1,44,000	Furniture	14,000
Subscribed and paid up		(20,000 – 6,000)	
Capital : 4,000			
		Current Assets	
Pref shares of			
Rs. 4 each	24,000	Debtors	40,000
		(50,000 – 10,000)	
30,000 Equity shares			
of Rs. 4 each	1,20,000		
Current Liabilities			
Creditors	60,000		
	2,04,000		2,04,000

Example 3.

On the reconstruction of a Company, the following terms were agreed upon:

The Shareholders to receive in lieu of their present holding (viz. 5,000) shares of Rs. 10 each) the following :

(1) Fully paid equity shares equal to 2/5th of their holding.

(2) 5% preference shares fully paid, to the extent of 1/5th of te above new equity shares.

(3) Rs. 60,000 6% second debentures, An issue of Rs. 50,000. 5% First Debentures are made and allotted, payment for the same having been received in cash.

(4) The Goodwill which shood at Rs. 3,00,000 was written down to Rs. 1,60,000. The plant and Machinery which stood at Rs. 1,00,000 was written down to Rs. 70,000. The Freehold and Leasehold premises

which stood at Rs. 1,50,000 was written down to Rs. 1,25,000. Make the Journal Entries in the Books of the company necessitated by the above re-Construction.

JOURNAL

Share capital A/c	Dr.	5,00,000	
To Share holders A/c			5,00,000
(Being the old Capital Written off)			
Share holder	Dr.	5,00,000	
To New Equity Shares			2,00,000
To 5% Preference share			40,000
To 6% second Debenture			60,000
To Capital Reduction A/c (Bal. Fig.)			2,00,000
(Being issue of new shares and Debenture and Balance to Capital Reduction A/c)			
Capital Reduction A/c	Dr.	2,00,000	
To Goodwill			1,40,000
To Plant and Machinery			30,000
To Freehold and Leasehold premises			25,000
To Capital Reserve A/c			5,000
(Being the Assets written off and balance to Capital Reserve A/c)			
Bank A/c	Dr.	50,000	
To 5% Debenture A/c			50,000
(Being the issue of first Debenture)			

Special notes (विशेष बातें)

Sometime there may be General Reserve of Reserve Fund or P. and L. A/c Credit Balance in the Balance-Sheet, then these items are to be transferred to Capital Reduction A/c or in Capital Reserve A/c, viz.,

General Reserve	Dr.	
P. and L. A/c	Dr.	
To Capital Reserve A/c		
Or		
General Reserve A/c	Dr.	
P. and L A/c	Dr.	
To Capital Reduction A/c		

(Being transfer to Capital Reduction A/c)

External Re-Construction (**बाह्य पुनर्निर्माण**)

External Re-construction is like Absorption A/c. In this case, the same entries of under Company and purchasing Company will be prepared. (बाह्य पुनर्निर्माण संविलयन के समान है। इसमें ठीक वही व्यवहार (Transactions) या प्रविष्टियाँ होती हैं जो संविलयन में होते हैं।

3.12 सारांश

कम्पनी के एकीकरण एवं संविलयन में मुख्य अन्तर है कि जहाँ एकीकरण में दो या दो से अधिक कम्पनियों का समापन तथा एक नई कम्पनी का निर्माण होता है वहाँ संविलयन में एक मजबूत कम्पनी कमजोर कमपनी को अपने में मिला लेती है।

3.13 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. दो कम्पनियों के चिट्ठे निम्न प्रकार हैं

	X कं०लि० Rs.	Y कं०लि० Rs.		X कं०लि० Rs.	Y कं०लि० Rs.
चुकता पूँजी विविध (270 रु० प्रति अंश वाले 900 अंश)	2,43,000	–	सम्पत्तियाँ	3,37,000	8,71,500
150 रु० वाले 4000 अंश		6,00,000	रोकड़	700	5,500
लेनदार	11,000	13,000			
संचय कोष	80,700	2,57,000			
लाभ हानि खाता	3,000	7,000			
	3,37,000	8,77,000		3,37,000	8,77,000

यह प्रस्ताव रखा गया कि X कम्पनी लिमिटेड द्वारा संविलयन किया जायेगा और उनके द्वारा निम्न व्यवस्था स्वीकार की गई। Y कम्पनी के प्रत्येक अंशधारक को Y कम्पनी के 5 अंश प्राप्त होंगे तथा उतना ही नगदी में भुगतान किया जायेगा जितना कि उनके चिट्ठे के अनुसार आंतरिक मूल्य पर दोनों कम्पनियों के अंशधारियों के अधिकारों को समायोजित करने के लिए आवश्यक है। Y कम्पनी लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल्ल के आवश्यक लेखे कीजिए और संविलयन के पश्चात् चिट्ठा बनाइए।

2. एकीकरण और संविलयन में अन्तर बतावें।

3. संविलयन से आप क्या समझते हैं? इसके मुख्य तत्व क्या हैं?

4. ''सभी एकीकरण संविलयन नहीं होते हैं किन्तु सभी संविलयन एकीकरण के ही रूप होते हैं।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

5. क्रेता कम्पनी की बही में प्रारम्भिक प्रविष्टियाँ क्या-क्या हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

6. एक कम्पनी के पुर्निर्माण पर निम्न शर्तें मंजूर की गयी :

(1) पूर्वाधिकार अंश की राशि प्रति अंश घटकर 75 रु० होगी और समता अंश की घटकर 37.50 रु० होगी और इन्हें पूर्ण चुकता माना जायेगा।

(2) ऋणपत्रधारियों ने अपनी राशि की पूर्ण चुकता के बदले में स्टॉक और देनदारी की राशि ले ली।

(3) ख्याति खाता समाप्त कर दिया जायेगा।

(4) भवन पर 50% ह्रास माना जायेगा।

(5) मशीन का मूल्य 50,000 रु० से बढ़ाया जायेगा।

इस कम्पनी का 31 मार्च, 1998 का चिट्ठा निम्नांकित है :-

Share Capital			
1,000 Pre. share of		Goodwill	15,000
Rs. 100 each	2,00,00		
		Premises	2,00,000
4,000 Equity shares			
Rs. 100 each	4,00,000	Machinery	3,00,000
5% Mortgage Debentures	1,00,000	Stock	50,000
Bank overdraft	50,000	Detors	40,000
Creditors	1,00,000	P. and L. A/c	2,45,000
Rs.	8,50,000	Rs.	8,50,000

You are required to give journal and revised B/s.
आप जर्नल दीजिए और संशोधित चिट्ठा बनाइए।

2. Differentiate between Absorpotion and Internal Re-Construction and External Reconstruction.
संविलयन और आंतरिक पुनर्निर्माण तथा वाह्य पुनर्निर्माण में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

3. What Accounting records are made in the books of the Company at the time of Internal Re-Construction ?
आंतरिक पुनर्निर्माण के समय कम्पनियों की पुस्तकों में लेखांकन के क्या लेखे किये जाते हैं?

4. What is the meaning of Amalgamation, Absorption and Re-Construction? When is it necessary ?
कंपनी के एकीकरण, संविलयन और पुनर्निर्माण का क्या आशय है? यह कब आवश्यक होता है?

5. Write short notes on :

संक्षिप्त नोट लिखिए :

(a) Re- Organisation of Capital.
पूँजी का पुर्नसंगठन

(b) External Re-construction
वाह्य पुनर्निर्माण।

3.14 पठनीय पुस्तकें

1.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० एम० शुक्ल
2.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० के० सिंह
3.	एडवांस्ड लेखांकन	शुक्ला एवं श्रीनिवास
4.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	एस० एन० महेश्वरी
5.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II	शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

कम्पनी का समापन

पाठ-संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 समापन विधी

4.2.1 ऐच्छिक समापन

4.2.2 ऐच्छिक समापन के प्रकार

4.2.3 सदस्यों द्वारा और महाजन द्वारा ऐच्छिक समापन में अन्तर

4.3 समापन कार्य विधी

4.4 निस्तारक की नियुक्ति

4.5 निस्तारक के कर्त्तव्य

4.6 कम्पनी का निस्तारण

4.7 कम्पनी के देनदार

4.8 प्राप्त धन का वितरण

4.9 पूर्वाधिकार लेनदार

4.10 आधिक्य का वितरण

4.11 उदाहरण

4.12 सारांश

4.13 अभ्यास हेतू प्रश्न

4.14 पठनीय पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

इस पाठ में कम्पनी के ऐच्छिक समापन सम्बन्धी लेखे के बारे में विस्तृत जानकारी दी जायेगी।

4.1 परिचय

कम्पनी का समापन एक वैधानिक शब्द है। इससे कम्पनी की इस अवस्था का बोध होता है, जिसके द्वारा कम्पनी का व्यवसाय समाप्त हो जाता है। कम्पनी एक वैधानिक व्यक्ति है और इसका समान भी कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत ही होता है।

4.2 समापन विधि

कम्पनी का समापन तीन तरह से हो सकता है, जो निम्नलिखित हैं-

(i) ऐच्छिक समापन

(ii) न्यायालय के निरीक्षण के अधीन समापन

(iii) न्यायालय द्वारा समापन

4.2.1 ऐच्छिक समापन :

जब कम्पनी स्वेच्छा से अपने व्यवसाय को बन्द कर लेती है तो उसे हम ऐच्छिक समापन कहते हैं। कम्पनी अधिनियम की धारा 484 के अनुसार एक कम्पनी निम्न परिस्थितियों में अपना ऐच्छिक समापन कर सकता है

(i) अवधि समाप्त होने पर

(ii) विशेष प्रस्ताव पारित करके

(iii) जब दायित्व अधिक हो गया हो और व्यवसाय चलाया जाना असम्भव हो जाय

(iv) अन्य परिस्थितियों में

4.2.2 ऐच्छिक समापन के प्रकार :

(i) सदस्यों द्वारा ऐच्छिक समापन

(ii) महाजनों द्वारा ऐच्छिक समापन

(i) सदस्यों द्वारा : जब कम्पनी के पास महाजनों को देने के लिए पर्याप्त धन हों और सदस्य कम्पनी का समापन चाहते हैं तो वैसी अवस्था में सदस्य अपनी सामान्य भाषा में संकल्प पारित कराकर कम्पनी का समापन करा सकते हैं। इसमें कम्पनी को धारा 488 के अनुसार यह घोषणा करनी पड़ती है कि कम्पनी दिवालिया नहीं हुई है।

(ii) महाजनों द्वारा : ऐच्छिक समापन का संकल्प लेने के बाद संचालकों द्वारा शोधन क्षमता की घोषणा करनी पड़ती है। अगर वे इस तरह की घोषणा नहीं करते हैं तो कम्पनी का महाजन द्वारा ऐच्छिक समापन समझा जायेगा।

4.2.4 सदस्यों द्वारा और महाजन द्वारा ऐच्छिक समापन में अन्तर :

सदस्यों द्वारा ऐच्छिक समापन तब होता है जब कम्पनी ऋण भुगतान क्षमता रखती है। महाजनों द्वारा समापन तब होता है जब कम्पनी ऋण भुगतान की क्षमता नहीं रखती है। ऐसी परिस्थिति में सदस्यों और महाजनों दोनों की सभाएँ बुलायी जाती हैं।

सदस्यों द्वारा ऐच्छिक समापन में निस्तारक की नियुक्ति सदस्यों द्वारा की जाती है जब महाजनों द्वारा समापन में दोनों की राय से की जाती है तथा महाजनों द्वारा निरीक्षण समिति की नियुक्ति की जाती है जो समापन कार्य की देख रेख करते हैं।

4.3 समापन कार्य विधि

ऐच्छिक समापन के लिए साधारण संकल्प की जरूरत पड़ती है। संकल्प पारित होने के 15 दिनों के अन्दर इसकी सूचना सरकारी गजट में प्रकाशित करानी पड़ती है। यह सूचना स्थानीय समाचारपत्रों में भी प्रकाशित करानी पड़ती है।

4.4 निस्तारक की नियुक्ति

कम्पनी के व्यवसाय को समाप्त करने के लिए एक निस्तारक की नियुक्ति की जाती है। जब सदस्यों की स्वेच्छा से कम्पनी का समापन होता है तो निस्तारक की नियुक्ति कम्पनी की आम सभा से होती है। इसी सभा में उसका पारिश्रमिक भी तय हो जाता है। अगर लेनदारों की स्वेच्छा से की जाती है तो निस्तारक की नियुक्ति दोनों की सभाओं से की जाती है। सदस्यों और लेनदारों द्वारा अलग-अलग निस्तारक नियुक्त किये जाते हैं तो लेनदारों द्वारा नियुक्त निस्तारक मान्य होता है। यदि लेनदार किसी भी निस्तारक को मनोनीत नहीं करते हैं, तो सदस्यों द्वारा मनोनीत निस्तारक ही कार्य करता है। यदि लेनदार चाहें तो अधिक से अधिक पाँच व्यक्ति की एक निरीक्षण समिति नियुक्त कर सकते हैं। सदस्यों द्वारा भी निरीक्षण समिति के पाँच सदस्य मनोनीत किए जा सकते हैं।

4.5 निस्तारक के कर्त्तव्य

निस्तारक का कर्त्तव्य सभी सम्पत्ति से धन प्राप्त करना होता है। सम्पत्तियों के बेचने से धन प्राप्त होता है तथा कम्पनी के सदस्यों से जो राशि प्राप्त होती है उनका भुगतान कम्पनी के विभिन्न लेनदारों के बीच उनके अधिकार के अनुरूप किया जाता है।

4.6 कम्पनी का निस्तारण

इसके लिए एक विवरण तैयार करता है जिसे निस्तारक का अन्तिम खाता कहा जाता है। यद्यपि इसका नाम खाता है (Accounts) है किन्तु यह दोहरी खाता प्रणाली के नियम पर आधारित नहीं है। यह एक वितरण है जिससे यह पता चलता है कि-

(i) उनके द्वारा वसूल की हुई राशि कितनी है।

(ii) विभिन्न दायित्वों का भुगतान कितना हुआ है।

(iii) आधिक्य का वितरण किस प्रकार किया गया है।

4.7 कम्पनी का देनदार

कम्पनी के देनदार वे सभी व्यक्ति हैं जो कम्पनी के समापन के समय कम्पनी की रकम धारते हैं। यहाँ तक कि पूर्ण भुगतान किये हुए अंशधारी इसमें सम्मिलित किये जाते हैं तथा वे सभी व्यक्ति जिनसे कम्पनी को प्राप्त करना है।

4.8 प्राप्त धन का वितरण

निस्तारक को जो रकम प्राप्त होती है उसका भुगतान निम्न प्रकार किया जाता है

(i) रक्षित लेनदारों को भुगतान।

(ii) समापन का व्यय निस्तार के पारिश्रमिक के साथ।

(iii) पूर्वाधिकार लेनदारों को भुगतान।

(iv) असुरक्षित लेनदारों को भुगतान।

(v) अंशधारियों को उनके अधिकार के अनुसार भुगतान।

4.9 पूर्वाधिकार लेनदार

कम्पनी अधिनियम की धारा 530 (1) के अनुसार एक कम्पनी के समापन पर निम्नलिखित लेनदारों को पूर्वाधिकार लेनदार माना जाता है

(i) सरकारी लगान एवं कर बकाया जो पिछले 12 महीने का देय हो।

(ii) सभी मजदूरियाँ या वेतन या मुआवजा जो किसी कर्मचारी की गत 12 महीने के अन्दर अधिक से अधिक चार महीने का बकाया हो, यह राशि प्रतिव्यक्ति एक हजार रुपये से अधिक नहीं हो सकती है।

(iii) सभी अर्जित छुट्टियों का पारिश्रमिक।

(iv) वे सभी जो कर्मचारियों के लिए पेंशन, ग्रेच्युटी इत्यादि के रूप में बकाया हो।

(v) अनुसन्धान व्यय कम्पनी अधिनियम की धारा 235 237 के अनुसार।

4.10 आधिक्य का वितरण

जब कम्पनी के सभी ऋण एवं दायित्वों का भुगतान हो जाता है ओर उसके बाद शेष राशि बच जाती है तो उन्हें अंशधारियों में उनके अधिकार के अनुसार (जो कि कम्पनी के स्मार पत्र एवं अन्तर्नियम में दिया हुआ रहता है) बाँट दिया जाता है। आंशिक भुगतान वाले अंशों पर निस्तारक शेष रकम की माँग कर सकते हैं और उस रकम का प्रयोग पूर्वाधिकार अंशधारियों को वापस करने में किया जा सकता है। पूर्वाधिकार अंशधारियों को कम्पनी के समापन में सामान्य अंशधारियों से पहले पूँजी वापस पाने का अधिकार है।

4.11 उदाहरण

उदाहरण 1. A कम्पनी लि० ने 31 दिसम्बर 1987 को स्वेच्छा से समापन प्रारम्भ किया। उस दिन पुस्तकों में निम्न शेष थे

Equity share capital		Fixed Assets	20,00,000
(Rs. 100)	20,00,000	Stock	2,50,000
Debentures	10,00,000	Debtor	11,50,000
Loans	5,00,000	Cash	1,50,000
Creditors	5,00,000	P and L. A/c	4,50,000
	40,00,000		40,00,000

उदाहरण 1. G कम्पनी की पूँजी निम्न प्रकार थी

(i) 3,000 श्वेत समता अंश जिनमें से प्रत्येक अंश 100 रु० का था और जिस पर 85 रु० प्रति अंश चुकता थे।

(ii) 1,000 पीला समता अंश जिसमें प्रत्येक अंश 106 रु० था जिस पर 80 रु० प्रति अंश चुकता थे।

(iii) 100 रु० वाले 1,000 पूर्वाधिकार अंश जो पूर्णदत्त थे (ये अंश कम्पनी के पार्षद अन्तर्नियमों के अन्तर्गत पूँजी पर पूर्वाधिकार रखते हैं)

विविध लेनदार 76,500 रु० के थे; 2,500 रु० निस्तारक का पारिश्रमिक शामिल था। निस्तारक के पीला समता अंशों पर अंश 20 रु० जो थे उनकी याचना की जिनकी पूर्णरूप से भुगतान कर दिया गया। सम्पत्तियों से 1,91,000 रु० प्राप्त हुए। 15 रु० प्रति अंश की याचना अंशत: चुकता स्वेत अंशों पर की गयी 100 अंश के अतिरिक्त सब का भुगतान प्राप्त हो गया। निस्तारक खाता बनाइये।

Liquidator's Statement of A/c

निस्तारक खाता विवरण

To Realisation of		By Liquidator's	
Assets	1,91,000	Remuneration	2,5000
To Call on, 1,000		By Creditor	
Share at Rs. 20 each	20,000	(76,500 – 2,500)	74,000
To Call on 30,00		By Pref. share-holders	1,00,000
Shares at Rs.		By Equity Share	
15 each = 45,000		holder	
Here calls Unpaid			
on 100		3,900 Shares	
Shares 1,500	33,000	Rs. 20 per share	78,000
Rs.	2,54,000	Rs.	2,54,000

स्थायी सम्पत्ति 12,00,000 रु० में B जो एक ऋणपत्रधारी हैं उनके हाथ से बेच दिया गया। B ने 4,00,000 रु० ऋणपत्र का समायोजन करके शेष रकम का भुगतान नकद कर दिया। देनदारों से 7,00,000

प्राप्त हुआ। समापन व्यय 10,000 रु० हुआ। निस्तारक को 10,000 रु० भत्ता दिया गया तथा निस्तारक द्वारा वसूल की गयी रकम पर 2 प्रतिशत अतिरिक्त पारिश्रमिक देना है। स्टॉक 1,00,000 में बिका। आप निस्तारक का खाता तैयार कीजिए।

निस्तारक का अन्तिम विवरण खाता

Liquidator's Final State of A/c

	1,50,000	By liquidation	
To Cash Balance		Expenses	10,000
To Fixed Assets		By liquidator's	
12,00,000		Allowance 10,000	
Less set of 4,00,000	8,00,000	2% on collection	
To Debtors	7,00,000	40,000	50,000
To Stocks	1,00,000	By loans	5,00,000
		By creditors	5,00,000
		By Share-holders	
		divident @ 45	
		Paise per rupee	
	17,50,000		17,50,000

उदाहरण : ABC कम्पनी लि० स्वेच्छा से समापन में गयी। उस दिन समापन से सम्बन्धित निम्न सूचनाएँ थीं

अंश पूँजी में 10,000 पूर्वाधिकार अंश प्रति अंश 10 रु० पूर्णदत्त 4,000 'अ' समता अंश 10 रु० अंश पूर्णदत्त, 20,000 'ब' समता अंश 10 रु० प्रति अंश जिस पर 8 रु० भुगतान हुआ था।

कम्पनी अन्तर्नियम में पूर्वाधिकार अंशों को प्राथमिकता समता अंश पर थी और समता अंशों को स्थगित अंशों के पूर्ण पूँजी पाने का अधिकार था। अ और ब समता अंशों को समान अधिकार था।

लेनदार 2,74,000 रु० थे जिसमें 10,000 रु० पूर्वाधिकार लेनदार और 54,000 रु० पूर्ण सुरक्षित थे। सम्पत्ति से 3,74,000 रु० प्राप्त हुआ जिसमें पूर्ण सुरक्षित लेनदार के लिए विक्रय भी सम्मिलित है।

समापन व्यय 12,000 रु० हुआ, निस्तारक का पारिश्रमिक 5% वसूल की गयी रकम पर और 3% असुरक्षित महाजन को लौटायी गयी रकम पर तय किया गया।

निस्तारक ने निम्नलिखित याचनाएँ की : 2 रु० प्रति अंशों पर जिसका भुगतान हुआ, 1.50 प्रति अंश 'ब' समता अंशों पर जिसमें 2,000 अंशों पर छोड़कर शेष प्राप्त हुआ, इस 2,000 अंश को जब्त कर लिया गया। निस्तारक का अन्तिम खाता तैयार कीजिए।

समाधान : निस्तारक का पारिश्रमिक जोड़ना कठिन कार्य नहीं है। इसे समझ लेना आवश्यक है। जहाँ तक 5% वसूल की गयी राशि पर निकलना है वह 3,20,000 रु० पर निकालना है।

अगर असुरक्षित महाजन को भुगतान करने के लिए पर्याप्त रकम है तो

$$\frac{\text{कमीशन का प्रतिशत} \times \text{असुरक्षित लेनदार}}{100}$$

किन्तु जब रकम अपर्याप्त है तो

$$\frac{\text{कमीशन का प्रतिशत} \times \text{रकम जो उपलब्ध है}}{100 + \text{कमीशन का प्रतिशत}}$$

अ,ब,स कं० (समापन में)

निस्तारक का खाता

सम्पत्ति से प्राप्त	3,74,000	सुरक्षित महाजन	54,000
		समापन व्यय 5%	
याचना पर प्राप्त 10,000		3,20,000 रु० पर	16,000
स्थगित अंश 2 रु० प्रति		3% 2,10,000 रु० पर	6,300
अंश की दर से	20,000	पूर्वाधिकार लेनदार	10,000
		असुरक्षित महाजन	2,10,000
		पूर्वाधिकार अंश की	
30,000 ब समता अंश		वापसी	1,00,000
			6,600
1.5 की दर से जिसमें		'अ' समता अंश	
से 2000 अंश जब्त कर		4,000 अंश (1.67 पै०)	
दिये गये		'ब' समता अंश	
		28,000 अंश	
		1.18 प्रति अंश की दर	
(28000 × 1.50)	42,000		
		से (लगभग)	
	4,36,000		4,36,000

नोट : कुल रकम 4,36,000 है इसमें से 54,000 रु० सुरक्षित महाजन का है।

(4,36,000 54,000 = 3,82,000)

3,82,000 -	10,900	पूर्वाधिकार लेनदार = 3,72,000
3,72,000	16,000	निस्तार का = 3,56,000
3,56,000	2,10,000	अ० सु० लेनदार (पूर्ण) = 1,46,000
1,46,000	निस्तारक का पारिश्रमिक	

$\frac{(2,10,000 \times 3)}{100} = 6,300 = 1,39,700$

1,39,700   1,00,000 पू० अंश = 39,700

39,700 को बाँटना है अ और ब समता अंशों पर 'अ' समता अंश 4,000 है और प्रति अंश 0.50 पैसा अधिक दिये हैं अत: 4000 × ½ रु० = 2,000 रु०

37,700 को 'अ' और 'ब' में बराबर बाँटना है।

कुल अंश 4,000 + 28,000 = 32,000   37,700 ÷ 32,000 = 1.18 (लगभग)

4.12 सारांश

कम्पनी के समापन का तात्पर्य कम्पनी का पूर्ण रुप से बन्द हो जाने से है। इसके समापन के बाद सम्पत्तियों का विक्रय किया जाता है तथा सभी दायित्वों का भुगतान किया जाता है, दायित्वों के भुगतान के बाद शेष राशि को अंशधारियों के बीच वितरित कर दिया जाता है। इसके लिये निस्तारक का अन्तिम विवरण पत्र तैयार किया जाता है।

4.13 अभ्यास हेतु प्रश्न

प्रश्न 1. सुधांशु लि० का चिट्ठा 30 सितम्बर 1983 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित है।

अंश पूँजी		ख्याति	1,50,000
50,00,000 समता अंश		पेटेन्ट	50,000
10 रु० प्रत्येक वाले पूर्ण		भूमि तथा भवन	1,00,000
दत्त अंश	5,00,000	प्लाण्ट तथा मशीन	50,000
2000 वाले पूर्वाधिकार		फर्नीचर एवं फिक्सचर	30,000
अंश 100 रु० प्रत्येक	2,00,000	स्कन्ध (बाजार मूल्य)	
6% ऋणपत्र (सम्पत्तियों		40,000)	60,000
पर फ्लोटिंग चार्ज जिसमें			
स्थायी सम्पत्ति सम्मिलित		विविध देनदार	40,000
नहीं)	2,00,000		
बैंक अधिविकर्ष (स्थायी		बैंक	10,000
सम्पत्ति पर फ्लोटिंग		लाभ हानि खाता	19,500

चार्ज	1,00,000		
विविध लेनदार	1,00,000	प्रारम्भिक व्यय	75,000
रु०	11,00,000	रु०	11,00,000

कम्पनी के पुनर्निर्माण करने का निश्चय किया गया। निम्नांकित सूचना को भी ध्यान में रखकर पुनर्निर्माण के लिए योजना बनाएँ।

(i) भूमि तथा भवन, प्लाण्ट एवं मशीन का ह्रास उचित रीति से नहीं काटा गया है और इसका मूल्य क्रमश: 80,000 रु० एवं 2,80,000 रु० है।

(ii) फर्नीचर एवं फिक्सचर्स 20,000 के हैं।

(iii) नयी वस्तु के विकास के कारण जिस वस्तु के लिए पेटेन्ट रखे गये थे, उसे बन्द कर दिया जायेगा।

(iv) पूर्वाधिकार अंशधारियों पर लाभांश तीन वर्ष के लिए अवशिष्ट है तथा इनका भुगतान समापन पर किया जाना है।

2. कम्पनी समापन की परिभाषा दीजिए। एक कम्पनी के समापन की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

3. निस्तारक खाता क्या है? यह कैसे तैयार किया जाता है?

4. निस्तारक की नियुक्ति कैसे होती है? वह आधिक्य का वितरण कैसे करता है?

5. 31 दिसम्बर, 1982 को एक सीमित दायित्व वाली कम्पनी का ऐच्छिक निस्तारक हुआ। इसकी पुस्तकों में निम्न सम्पत्तियाँ थीं :

वर्क्स एवं अन्य सम्पत्ति 90,000 रु०, तरल सम्पत्ति 10,000 रु०। इसके दायित्व 20,000 रु० के एवं इसकी चुकता पूँजी 1,00,000 रु० थी। सम्पत्ति नयी कम्पनी को 72,000 रु० में बेची गयी। इसमें से 50,000 रु० का भुगतान उस कम्पनी के 1 रु० वाले अंशों में जिस पर 75 पैसे अंश चुकता थे एवं शेष 22,000 रु० का भुगतान नकदी में किया जायेगा जो बाद में दायित्वों को एवं निस्तारण की लागत को चुकाने के लिए पर्याप्त थी। निस्तारण पर कम्पनी की पुस्तकों को बन्द कीजिए।

4.14 पठनीय पुस्तकें

1. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० एम० शुक्ल
2. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — डॉ० एस० के० सिंह
3. एडवांस्ड लेखांकन — शुक्ला एवं श्रीनिवास
4. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी — एस० एन० महेश्वरी
5. एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II — शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

सूत्रधारी कम्पनी

पाठ-संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 परिचय

5.2 सुत्रधारी कम्पनी के लाभ

5.3 सुत्रधारी कम्पनी के दोष

5.4 मिश्रित या सम्मिलित आर्थिक चिट्ठा

5.4.1 धारा 212 के अन्तर्गत

5.4.2 मिश्रित चिट्ठा तैयार करना

5.5 ख्याति या पूंजी संचिति की गणना

5.6 ख्याति या पूंजी संचय या लागत नियन्त्रण की गणना

5.7 अल्पमत में अंशधारियों का हिस्सा

5.8 अल्पलाभ की गणना

5.9 उदाहरण

5.10 अभ्यास हेतू प्रश्न

5.11 पठनीय पुस्तकें

5.0 उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों को सूत्रधारी कम्पनी तथा सहायक कम्पनी के बारे में जानकारी देना है।

5.1 परिचय

होल्डिंग कम्पनी वह कम्पनी है जो किसी एक या एक से अधिक कम्पनी पर अंश खरीदकर या किसी तरह नियंत्रण करके उस कम्पनी के संचालक मंउल पर आधिपत्य प्राप्त कर लेती है, जिस कम्पनी की पूँजी या मताधिकार प्राप्त करती है, उसे हम सहायक कम्पनी कहते हैं। धारा 4 के अनुसार एक कम्पनी को दूसरी कम्पनी का सूत्रधारी तभी माना जाता है जबकि यह दूसरी कम्पनी उसकी सहायक हो। एक कम्पनी निम्न तीन प्रकार से सूत्रधारी कम्पनी बन सकती है

(i) 51% या इससे अधिक मताधिकार अंश को खरीदकर।

(ii) संचालक मंडल पर नियंत्रण करके या

(iii) एक सूत्रधारी कम्पनी पर नियंत्रण करके जिसके अन्य सहायक कम्पनी हैं।

5.2 सूत्रधारी कम्पनी के लाभ

सूत्रधारी कम्पनी के निम्नांकित लाभ हैं

1. सूत्रधारी और सहायक दोनों का अलग अलग बँटा रहता है।
2. सहायक कम्पनी का लाभ हानि खाता बन सकता है और उसकी उपार्जन क्षमता का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।
3. सूत्रधारी कम्पनी सहायक कम्पनी के अंशों को बेचकर सूत्रधारी कम्पनी के दायित्व से मुक्त हो सकती है।
4. शोध तथा तकनीकी ज्ञान के लिए अधिक सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं।
5. संयोजन के सभी लाभ उपलब्ध हो जाते हैं।

5.3 सूत्रधारी कम्पनी के दोष

सूत्रधारी कम्पनी भी दोषमुक्त नहीं है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

1. अल्पमत अंशधारियों के हितों की रक्षा नहीं होती है।
2. दोनों कम्पनियों के वित्तीय वर्ष में भिन्नता होने पर छल कपट की अधिक गुंजाइश रहती है।
3. अंशों का मूल्यांकन कठिन हो जाता है।
4. सहायता कम्पनी की आत्म निर्भरता समाप्त हो जाती है तथा वह वित्तीय दृष्टि से कमज़ोर हो जाते हैं।
5. आंतरिक लेन देन तथा स्टॉक का समयोजन ठीक से नहीं होता है।

5.4 मिश्रित या सम्मिलित आर्थिक चिट्ठा

अब मिश्रित चिट्ठा को समझना आवश्यक है। मिश्रित आर्थिक चिट्ठा उसे कहते हैं जिसको होल्डिंग कम्पनी सहायक कम्पनी के साथ तैयार करती है। इसमें दोनों कम्पनियों की सम्पत्ति और दायित्व दिखाये जाते हैं। भारत में मिश्रित चिट्ठा बनाना अनिवार्य या बन्धनकारी नहीं है किन्तु इंगलैण्ड में अनिवार्य है।

5.4.1 धारा 212 के अन्तर्गत :

कम्पनी अधिनियम की धारा 212 के अनुसार एक सूत्रधारी कम्पनी अपने आर्थिक चिट्ठे के साथ सहायक कम्पनी से सम्बन्धित कागजात अवश्य नत्थी करे। ये कागजात निम्नलिखित हैं

1. सहायक कम्पनी का आर्थिक चिट्ठा। दोनों के वित्तीय वर्ष में अन्तर होगा तो समायोजन होगा।
2. लाभ हानि खाते की एक प्रति।
3. संचालक मंडल का प्रतिवेदन
4. अंकेक्षक का प्रतिवेदन

5. सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी की हिस्सेदारी का विवरण

6. उप धारा 5 और 6 का एक विवरण

5.4.2 मिश्रित चिट्ठा तैयार करना :

इस पाठ का यह हिस्सा हमलोगों के लिए महत्त्वपूर्ण है। मिश्रित चिट्ठा तैयार करते समय कुछ समयोजन आवश्यक है : यथा

1. सूत्रधारी कम्पनी के आर्थिक चिट्ठा से वह विनियोग समाप्त हो जायेगा जो सहायक कम्पनी में किया गया है।

2. अंश खरीदने के पहले और बाद में लाभ का अलग अलग हिसाब रखना। अंश खरीदने के पहले जो लाभ है उसमें हिस्सेदारी होल्डिंग कम्पनी और अल्पमत अंशधारी में अंश के अनुपात में किया जायेगा।

3. वर्ष के मध्य में अंश क्रय किया जायेगा तो उसका भी समायोजन होगा।

4. दोनों कम्पनियों के बीच जो आपसी लेन देन हुआ है, उसका भी समयोजन किया जायेगा। जैसे लेनदार और देनदार खाता विनिमय पत्र, ऋण और अग्रिम, चालू खाता, माल या रोकड़ रास्ते का स्टॉक तथा अप्राप्य लाभ का समायोजन होता है।

5.5 ख्याति या पूँजी संचिति की गणना

जब होल्डिंग कम्पनी, सहायक कम्पनी के अंशों को खरीदते हैं तो उसे एक कीमत देनी पड़ती है। इसके बदले में होल्डिंग कम्पनी को सहायक कम्पनी का अंश मिलेगा, तथा लाभ हानि और सामान्य संचित में से आनुपातिक हिस्सा मिलेगा। कम्पनी जो कीमत दे रही है और बदले में जो पा रही है, इन दोनों का अन्तर ख्याति या पूँजी संचित होगा। अगर अधिक दे रही है तो ख्याति होगी।

ख्याति = भुगतान की रकम प्राप्त कीमत

पूँजी संचित = प्राप्त कीमत भुगतान की रकम

अगर कम कीमत दे रही है तो पूँजी संचित होगा।

5.6 ख्याति या पूँजी संचय या लागत नियंत्रण की गणना

Calculation of Goodwill or Capital Reserve or Cost of Control– When Holding Company acquires shares in Subsidiary Company, it has to be paid an Amount and it is known as investment in Subsidiary or cost of control. For this the holding Company will get share in Subsidiary and proportion of general Reserve and Profit on the date of acquisition of shares (to the extent of holding Company's share). If the holding Company is paying more than it gets, then the difference is goodwill, otherwise it will be capital reserve.

Goodwill = Price paid – value received

Value received include = shares in subsidiary proportion of general reserve + portion of profit (on the date of acquisition).

Capital reserve = value received– price paid.

There will be either goodwill or capital reserve.

Good will be shown in the Assets side of consolidation B/s.

Capital reserve in the liability side.

5.7 अल्पमत के अंशधारियों का हिस्सा

इसे मिश्रित चिट्ठा में दिखाना अनिवार्य है। अल्पमत अंशधारी वे हैं जो होल्डिंग के द्वारा सहायक कम्पनी में छोड़ दिए गए। इसमें निम्नलिखित मद सम्मिलित हैं

1. अंश पूँजी का हिस्सा +
2. रिजर्व में हिस्सा +
3. लाभ हानि का हिस्सा +
4. लाभ का हिस्सा जो इस वर्ष का है +

कुल योग अल्पमत के लिए .....

5.8 अल्पलाभ की गणना

Calculation of Minority Interest–

The act protects the Interest of minority. Minority share-holders means remaining share-holders other than holding company's share. Suppose there are 1,000 shares in subsidary company and holding company takes over 800 shares, then the 200 shareholders are minority and the ratio between holding company and Minority is 8 : 2

No minority shareholders will get their share in the following :

1. Share in paid up capital +
2. Share in Reserve Fund of general fund +
3. Share in P and L A/c Balance +
4. Share in profit earned during the year +
5. Total Minority Interest +

5.9 उदाहरण

The following is the B/S of H. Ltd. and S. Ltd.

Liabialities	H.Ltd. Rs.	S. Ltd. Rs.	Assets	H. Ltd. Rs.	S. Ltd. Rs.
Share capital of Rs. 10 each	1,00,000	50,000	S. Assets	60,000	63,000
Reserve	10,000	5,000	Investment		
P + L A/c	10,000	4,000			
			4000 Shares		
Sundry creditors	5,000	4,000	in S. Ltd.	65,000	
	1,25,000	63,000		1,25,000	63,000

H. Ltd. acquired the shares of S. Ltd. on 1st January, 1987. On the date the Profit and Loss A/c of S. Ltd. had a credit balance of Rs. 1000 and in Reserve Rs. 3,000. Prepare a consolidated B/s.

Solution – 1st find out the proportion of holding shares.

H. Ltd. $= \frac{4,000}{5,000} = \frac{4}{5}$

S. Ltd. (Minority) $= \frac{1,000}{5,000} = \frac{1}{5}$

Minority Interest–

Share Capital $\left(\frac{1}{5}\text{th}\right)$ = 10,000

Reserve $\left(\frac{1}{5}\text{th}\right)$ = 10,000

Profit and Loss $\left(\frac{1}{5}\text{th}\right)$ = 800

11,800

Calculation of goodwill--

Cost of Shares = 65,000

Less nominal value of shares = 40,000

Less $\frac{4}{5}$ of 1.000 = 800

Less $\frac{4}{5}$ of 2,000 = 3,400

Goodwill = $\begin{matrix} 43,200 \\ 21,800 \end{matrix}$

Calculation of Reserve Profit–

Reserve (after acquisition)= 2,000

P + L A/c (4,000 -- 1,000) = 300

5,000

H. Ltd. = 4,000

S. Ltd. 1,000

Consolidated Balance sheet of H. Ltd. will its subsidiary S. Ltd. as at 31st December 1986.

Liabilities	Rs.	Rs.	Assets	Rs.	Rs.
10,000 share of					
Rs. 10 each fully paid		1,00,000	Goodwill		21,800
Resevere :					
H. Ltd.	10,000		S. Assets		
S. Ltd. $(2,000 \times \frac{4}{5}) =$	1,600				
P. and L A/c		11,600			
H. Ltd.	10,000		H. Ltd.	60,000	
S. Ltd.	2,400	12,400			
Minority Interest		11,800	S. Ltd.	63,000	1,23,000
S. creditors of H. Ltd.	5000				
S. Ltd.	4000	9,000			
		1,44,800			1,44,800

Example–2

S. Ltd. acquired all the shares in B. Ltd. as on **1st January, 1984** at a cost of Rs. 5,60,000. The B/s of the two companies as on **31st December, 1984** were as follow :

B/s of S. Ltd.

Share capital 15,000 share of Rs. 50 each fully paid	7,50,000	Fixed Assets	6,65,000
		Share in B. Ltd.	5,60,000
General Reserve	4,75,000		
		Stock (z)	1,70,000
P. and L A/c (x)	4,00,000		
		Debtors	1,40,000
Creditors (y)	75,000		
		Cash at Bank	1,65,000
	17,00,000		17,00,000

(x) This includes in interim dividend of Rs. 40,000 received from B. Ltd.

(y) This includes Rs. 30,000 for purchase from B. Ltd. on which B. Ltd. made a Profit of 25%.

(z) This incudes Rs. 15,000 stock at cost purchased from B. Ltd.

B/s of B. Ltd.

Share capital 50,000 share of Rs. 5 each fully Paid	2,50,000	Fixed Assets	2,85,000
G. Reserve (1-1-84)	10,000	Stock	10,01,000
P. + L. A/c	1,80,000	Debtors	79,000
Creditors	80,500	Cash at B Bank	55,000
	5,20,500		5,20,500

The Profit and Loss A/c, had a credit balance of Rs. 1,40,000 on 1st January, 1984, and an interim dividend of Rs. 40,000 was paid during the year ended on 31st December, 1984.

Make the necessary adjustment and prepare the consolidated B/s as on 31st December, 1984.

Adjustments :

(1)	Goodwill : Cost of Shares		5,60,000
	Less value of shares	2,50,000	
	Less capital reserve (1,40,000 + 10,000)	1,50,000	
			4,00,000
			1,60,000
(2)	Profit of B. Ltd.		
	P + L. A/c Balance		1,80,000
	Less as on 1-1-84		1,40,000
	Profit for 1984		40,000
	Add, Interim div.		40,000
			80,000
	Less unrealised profit $\frac{15,000 \times 25}{100}$		3,750
	Profit =		76,250

(3) Profit of S. Ltd. = 4,00,000 – 40,000 (Interim div.) = 3,60,000

(4) Stock of S. Ltd. = 1,70,000 – 3,750 = 1,65,250

(5) Creditors of S. Ltd. = 75,000 – 30,000 (due to B.) = 45,000

(6) Debtors of B. Ltd. = 79,000 – 30,000 (due S.) = 49,000

Consolidate B/s Ltd. and its Subsidiary as on 31st December. 1984

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Share Capital 15,000 share of Rs. 50 each fully paid		7,50,000	Goodwill		1,60,000
G. Reserve		4,75,000	Fixed Assets		
			S. Ltd.	6,65,000	
			B. Ltd.	2,85,5000	9,50,000
			Stock		
Creditors					
S. Ltd.	45,000		S. Ltd.	1,66,000	
B. Ltd.	80,000	1,25,000	B. Ltd.	1,01,000	2,67,250
			Debtors		
P. and L. A/c			S. Ltd.	1,40,000	
S. Ltd.	3,60,000		B. Ltd.	49,000	1,89,000
B. Ltd.	76,000	4,36,250	Cash at Bank		
			S. Ltd.	1,65,000	
			B. Ltd.	55,000	2,20,000
		17,86,750			17,86,750

5.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

(1) ए० लि० और बी० लि० के निम्नलिखित चिट्ठे दिसम्बर 31, 1926 का है।

Following are the Balance sheets of A. Ltd. and B. Ltd. on December 31, 1986.

	A. Ltd.	B. Ltd.		A. Ltd.	B. Ltd.
Capital dividend into share of	Rs.	Rs.	Machinery	30,000	28,000
Rs. 10 each	1,00,000	80,000	Furniture	5,000	2,000
P. and L. A/c	40,000	20,000	Debtors	25,000	80,000
Loan from A Ltd.	–	8,000	Loan to B. Ltd.	8,000	–
B/P	8,000	6,000	Shares in B. Ltd.	70,000	–
			B/p	10,000	4,000
	1,48,000	1,14,000		1,48,000	1,44,000

ए० लि० ने बी० लि० के 75% अंश 31 दिसम्बर, 1986 को क्रय किये। बी० लि० के देय बिलों में 2,000 रु० के ऐसे बिल हैं जिनकी स्वीकृति इसने ए० लि० को दी थी। मिश्रित चिट्ठा बनाइए तथा जर्नल के लेखे मिश्रण के लिए कीजिए।

(A. Ltd. purchased 75% shares of B. Ltd. on December 31, 1986, B/P of B. Ltd. include bills of Rs. 2,000 payable to A. Ltd. Prepare consolidated B/s and pass journal Entries in conneciton with consolidation)

(2) What is consolidated balance-sheet and how is it prepared.

(मिश्रित चिट्ठा क्या है? यह कैसे बनाया जाता है?)

(3) What informations according to Sec. 212 of the companies Act, 1956, is required to be attached to the B/s of a holding company in respect of its subsidiary ?

(कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 212 के अनुसार सहायक कम्पनी के सम्बन्ध में क्या सूचनाएँ सूत्रधारी कम्पनी के चिट्ठे के साथ नत्थी की जाती हैं?)

5.11 पठनीय पुस्तकें

1.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० एम० शुक्ल
2.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० के० सिंह
3.	एडवांस्ड लेखांकन	शुक्ला एवं श्रीनिवास
4.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	एस० एन० महेश्वरी
5.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II	शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

बैंकिंग कम्पनियों के लेखे

पाठ-संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 लाभ हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा बनाना

6.3 लाभ-हानि खाते में समायोजनाएँ

6.4 बैंकिंग कम्पनी की विशेष मदें

6.5 बैंक का आर्थिक चिट्ठा

6.6 आर्थिक चिट्ठे की कुछ महत्वपूर्ण मद

6.7 ऋणों का वर्गीकरण

6.8 उदाहरण

6.9 सारांश

6.10 अभ्यास हेतू प्रश्न

6.11 पठनीय पुस्तकें

6.0 उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को बैंकिंग कम्पनी के अन्तिम खाते बनाने सम्बन्धी नियमों के बारे में जानकारी देना है।

6.1 परिचय

आप जानते हैं कि भारतवर्ष में बैंकिंग व्यवसाय भारतीय रेगूलेशन एक्ट 1949 के द्वारा संचालित और नियंत्रित होता है।

(।) बैंकिंग लेखा प्रक्रिया जहाँ तक बैंक का खाता तैयार करना है हमलोगों को लाभ हानि खाता और आर्थिक चिट्ठा स्वीकृत करना अनिवार्य है।

(क) लाभ हानि खाता तैयार करना बैंकिंग कम्पनी के लाभ हानि खाता का प्रारूप बैंकिंग अधिनियम की अनुसूची 4 के फार्म बी (Form B) में दिया हुआ है। इसका एक नमूना संक्षेप में नीचे दिया जाता है

6.2 लाभ हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा बनाना

Form B

Form of Profit and Loss Account; Profit and Loss A/c for the year ended 31st December.

	Expenditure	Rs.	Income Less provision made during the year for bad and doubtful Debt and other usual or necessary provisions	Rs.
1.	Interest paid on deposits, borrowing etc.	Rs.	1. Interest and Discount	
2.	Salaries and Allowances (Separate for Directors) and chief Executives)		2. Commission Exchange Brokrage 3. Rents	
3.	Director's and local Commeettee members' Fees and Allowance		4. Net Profit on save of Assets	
4.	Rent, Taxes Insurance lighting etc.		5. Net Profit on Revaluation of Assets	
5.	Loan charges		6. Income from non Banking Assets.	
6.	Postage, Telegrams and stamps			
7.	Auditors Fees		7. Other Receipts.	
8.	Depreciation and Repairs		8. Less (if any)	
9.	Stationary, Printing and Advertisement			
10.	Loss on non-banking Assets			
11.	Other Expenditure			
12.	Balance of profit			
	Total		Total	

Note : ("To" and "By" are not used in P + L A/c)

6.3 लाभ-हानि खाते में समायोजनाएँ

बैंकिंग कम्पनी के लाभ-हानि खाते इसी प्रकार तैयार किये जायेंगे जैसे अन्य संस्थाओं या व्यापारी का। किन्तु इसके खाते में 'To' और 'By' का प्रयोग नहीं होता है।

बैंकिंग कम्पनी की कुछ विशेष बातें हैं जिनको ध्यान में रखकर आवश्यक है, जैसे–

1. **भुनाए हुए बिलों पर कटौती (Rebate Bills Discounted)**– आप जानते हैं कि कटौती बैंक के लिए आय है। अगर कोई ग्राहक बिल का भुगतान बिल की अवधि से पहले कर देता है तो बैंक उसे कुछ छूट छोड़ देती है। इस बिल पर रीबेट कहते हैं। यह बैंक के लिए नुकसान है। इस रीबेट की रकम को डिसकान्ट में से घटाया जाता है और आर्थिक चिट्ठे में अन्य दायित्व के अन्तर्गत दिखाया जाता है।

   एक बात और ध्यान देने योग्य है कि अगर ''रिबेट आन बिल डिस्काउंटेड'' तलपट (T/B) में दिया हुआ है तो इसे केवल चिट्ठे के दायित्व पक्ष में ही दिखाया जायेगा।

2. **कर के लिए प्रावधान** यह बैंक के सूद और कटौती प्राप्त (Interest and Discount Received) में से घटाया जाता है, तथा इसे आर्थिक चिट्ठे में (Current and contingency A/c) के साथ मिलाकर लिखा जाता है।

3. **अप्राप्य ऋण के लिए संचिति** यह बैंक के द्वारा दिए गए ऋण के डूबने का अनुमान है। अत: यह एक तरह से अनुमानित हानि है, इसे सूद एवं कटौती की रकम से घटा दिया जाता है और आर्थिक चिट्ठे में ऋण से घटाया जाता है।

4. **ह्रास** सम्बन्धित सम्पत्ति के लागत मूल्य पर एक निश्चित प्रतिशत जोड़ा जाता है तथा इसे लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखा जाता है और आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति के मूल्य में से घटाया जाता है।

   कभी कभी ह्रास लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में लिखा जाता है और इसे चिट्ठे के दायित्व पक्ष में ह्रास संचिति के रूप में दिखाया जाता है।

5. **संवैधानिक संचित कोष (Statutory Reserve Fund)**– बैंकिंग अधिनियम की धारा 17 के अनुसार प्रत्येक बैंक को अपने लाभ का 20% संचित करना अनिवार्य है, जिसे हम वैधानिक संचय कोष कहते हैं। यह लाभ से काटकर चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है।

6. **संदिग्ध ऋण पर सूद लिया गया (Credit taken as Interest on Doubtful Debts)**– संदिग्ध ऋण पर ब्याज लाभ हानि खाते में अगर दिखाया गया है, तो उसे लाभ से घटा दिया जाता है और चिट्ठे के दायित्व पक्ष में Interest Suspense A/c के रूप में दिखाया जायेगा।

7. **अपत्र व्यय (Outstanding expenses)**– इसे लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में और आर्थिक चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा।

8. **उपार्जित आय (Accured Income)**– इसे लाभ हानि खाते के जमा भाग में तथा आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति भाग में दिखायेंगे।

6.4 बैंकिंग कम्पनी की विशेष मदें :

(1) Interest and Discount
(2) Public Deposites
(3) Bills for Collections
(4) Rebate and Discount
(5) Money at call and Short Notice

6.5 बैंक का आर्थिक चिट्ठा (Balance sheet of a Bank)

बैंकिंग नियमावली की धारा 29 के अनुसार प्रत्येक बैंक को अपने वित्तीय वर्ष समाप्त होने के बाद अपना आर्थिक चिट्ठा तैयार करना है। धारा 30 के अनुसार उसका अंकेक्षण भी करना है। बैंक के आर्थिक चिट्ठा का प्रारूप अनुसूची 3 के फार्म 'अ' (Form A) में दिया गया है। इसका संक्षिप्त रूप नीचे दिया गया है।

Preparation of Balance Sheet

Form – A

Balance sheet of ..... Bank as at 31st December 19 .....

	Capital and liabilities	Rs.	Propperty and Assets	Rs.
1.	Share capital	Rs.	1. Cash in hand	
2.	Reserve Fund and other Reserves		2. Cash at Bank	
3.	Deposits and other A/c		3. Money at call and short Notice	
4.	Borrowings		4. Investments	
5.	Bills Payable		5. Loans and Advances	
6.	Bills for collection buying Bill Receivable as per contra		6. Bills for collection buying Bills Receivable as per contra	
7.	Other liabilities		7. Constituent's liabilities for Acceptance Endorsements and other obligations as per contra	
8.	Acceptenaces Endorsements, and other obligations as per contra.		8. Fixed Assets	
9.	P. and L A/c		9. Other Assets	
10.	Contingent Liabilities		10. Non- Banking Assets	
			11. P and L A/c	
	Total		Total	

6.6 आर्थिक चिट्ठे की कुछ महत्वपूर्ण मद (A Few Important Points of B/S)

1. कर्ज बैंक जब कर्ज लेता है तो उसे हम बैंक कर्ज (Borrowings) कहते हैं। यह बैंक का दायित्व हैं।
2. ऋण (Loan) जब बैंक कर्ज देता है तो इसे ऋण (Loans) कहते हैं। यह बैंक की सम्पत्ति में दिखाया जाता है।

3. संग्रह के लिए बिल यह बैंक का दायित्व और सम्पत्ति दोनों है। इनको दोनो तरफ सम्पत्ति और दायित्व में लिखा जाता है।

4. Acceptance, Endorsements and other obligations- बैंक कभी कभी अपने ग्राहकों की ओर बिलों के भुगतान आदि की स्वीकृति दे देता है, जिससे बैंक उस बिल आदि को देने के लिए दायी हो जाता है, अत: बैंक का दायित्व है। दूसरी तरफ बैंक अपने ग्राहकों से भी संकलित करता है, अत: सम्पत्ति है। इसलिए इसकी Contra Entry बैंक चिट्ठे में होती है।

5. Non-Banking Assets– अगर कोई ग्राहक बैंक का ऋण नहीं चुकाता है तो बैंक उनके द्वारा जनमत में दी गयी सम्पत्ति का जो अधिग्रहण करता है उसे ही हम Non-Banking Assets कहते हैं। इसका मूल्य आर्थिक चिट्ठे में बाजार मूल्य पर दिखाया जाता है।

6. Branch Adjustment A/c-- बैंक अपने ब्रांच का एक समायोजन खाता बनाता है। अगर यह शेष Credit है तो दायित्व में और शेष Debit है तो सम्पत्ति में लिखा जायेगा।

7. Contingency Account– यह खाता किसी ज्ञात खर्च को पूरा करने के लिए खोला जाता है, जैसे Provision for Taxation, Provision for Doubtful Debits etc.

8. Contingent Liabilities– संभावित दायित्व या संदिग्ध दायित्व जो निश्चित नहीं है। इस शीर्षक की रकम को दायित्व के योग में नहीं जोड़ा जाता है। जैसे बैंक पर किए गए दावे जिन्हें बैंक ने अभी तक ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया है, विनिमय बिल पर पुन: भुनाने पर दायित्व अदत्त भविष्य के विनिमय अनुबन्ध इत्यादि।

9. Particulars of Debts– पुस्तकीय ऋणों का विवरण देना बैंकिंग विनिमय अधिनियम के अनुसार देना अनिवार्य है। इसके अनुसार ऋणों का वर्गीकरण ७ भाग से किया जाता है।

प्रथम चार भाग में सभी ऋण दिखाये जाते हैं। इस रकम को खाते में दिखाया जाता है। बाकी भाग विशेष सूचना देते है। इसकी रकम भीतर ही दिखायी जाती है।

इसका विवरण हिन्दी में निम्न प्रकार है तथा इसे अंग्रेजी में भी दिया जा रहा है।

6.7 ऋणों का वर्गीकरण

1. वे ऋण जो उत्तम हैं और जिनके सम्बन्ध में बैंक पूर्ण रक्षित है।
2. वे ऋण जो उत्तम हैं और जिनके लिए बैंक के पास देनदार की व्यक्तिगत प्रतिभूति के अतिरिक्त और कोई प्रतिभूति नहीं है।
3. वे ऋण जो उत्तम हैं और जिनके लिए बैंक के पास देनदार की व्यक्तिगत प्रतिभूति के अतिरिक्त एक या अधिक पक्षों की व्यक्तिगत प्रतिभूतियाँ हैं।
4. वे ऋण जो संदिग्ध या अप्राप्त हैं और जिनके लिए अभी तक कोई प्रावधान नहीं हुआ है।
5. बैंक के संचालकों या अधिकारियों या इनमें से किसी के भी द्वारा अकेले या किसी व्यक्ति के साथ संयुक्त रूप से देय ऋण।
6. ऐसी कम्पनियों या फर्मों के देय ऋण जिनमें बैंक के संचालक या अन्य अधिकारियों का संचालकों या साझेदारों के रूप में हित हो या निजी कम्पनियों में सदस्यों की तरह हित हो।

7. ऋणों की अधिकतम कुल राशि जो कम्पनी के संचालकों, प्रबन्धकों या अफसरों को वर्ष में किसी भी समय दी गयी हो।

8. ऋणों की अधिकतम कुल राशि जो ऐसी कम्पनियों या फर्मों को वर्ष में दी गयी हो जिनमें बैंक के संचालकों की तरह या साझेदारों की तरह या एक निजी कम्पनी में सदस्यों की तरह हित हो।

9. बैंकिंग कम्पनियों द्वारा देय ऋण :

नोट बैंकिंग कानून में 1968 में एक संशोधन हुआ है जिनके अनुसार बैंकों के ऋण और प्रतिभूति पर कई प्रतिबन्ध लगाये गये हैं।

12. Particulars of Advances– The Act requires that the publish of a bank should disclose some minimum information about the particulars of advances either in the Balance sheet or in a seperate schedule forming part of the Balance sheet. It is divided into 9 parts.

The total of the first four items usuals the total advances which is shown in the outer columns. The rest items usual further details of the nature of advances. They are not to be totalled. The prescribed form is given below :–

(1) Debts considered good in respect of which the Banking company is fully secured.

(2) Debts considered good in aspect of which the Banking company holds no other security than the debtors personal security.

(3) Debts considered good secured by the personality liability of one or more persons in addition to the personal security of the debtors (e.g. bills discounted and purchased.)

(4) Debts consiered doubtful or bad not provided for.

(5) Debts duly directors or officers of the banking company or any of them eiter secularly or jointly with any other person.

(6) Debts due by companies or firms in which the directions of the banking company are interested as directors or members.

(7) Maximum total amount of advances including temporary advance made at any time during the year to Directors or managers of officers of the banking company or any of them either secularly or jointly with any other persons.

(8) Maximum total amount of advances including temporary advances granted during the year to the companies or firm in which the Directors of the company are interested as Directors partners or managing agents or in the case of private companies, as members.

(9) Due from banking companies.

6.8 उदाहरण

Preparation of Merchants A/c

Problem-1.

When closing the books of a bank on 31.12.1983 you find in the loan ledger an unsecured balance of Rs. 5,00,000 in the account of a merchant whose financial condition is reported to you as had and doubtful. Interest to the same account amounted to Rs. 50,000 during the year. How would you deal with this item of interest in 1983 A/c ?

During the year 1984 the bank accounts 75 paise in the rupee an account of the total debt due upto 31.12.1983, prepare the necessary accounts showing the ultimate effect of the transaction in the 1984 books of account.

Solution :

While preparing the 1983 accounts the sum of Rs. 50,000 due from the merchant on account of interest should not be carried to P and L A/c, because its recovery was doubtful. It should, therefore, be transferred to an interest suspense A/c which would appear as a liability in B/s on 31.12.83.

Merchant's Accounts

31.12.83	To Balance b/d	5,00,000	By Balance C/d	5,50,000
	To Int. Suspense A/c	50,000		
		5,50,000		5,50,000
1.1.84	To Balance b/d	5,50,000	31.12.84	
			By cash	4.12.500
			Co 75 paise	
			per Ruee	
			By Int. Suspense A/c	12,500
			By Bad Debt	1.25.000
		5,50,000		5.50,000

Interest Suspence A/c

31.12.83	To Balance b/d	50,000	By Merchant A/c	50.000
01.01.84	By Balance			
	To Merchants			
	Account	12,500	L/d	5,000
	To P and L	37,500		
		50,000		50.000

Hints :

1. Interest amounting to Rs. 50,000 due from customer has been debited to him by crediting interest suspense A/c (and not to interest a/c as its recovery is doutful) and interest suspense A/c will appear in the liability side of the B/S.
2. Actual Amount of interest which has been received in cash i.e. Rs. 37,500 i.e. transferred to P and L A/c.

Problem No. 2

The trial balance of United Bank Ltd. as on 30th June, 1984,shows the following balances :

(1)	Interest and discount	Rs.	45,40,000
(2)	Rebate on bills discounted	Rs.	4,750
(3)	Rebate on bills discounted	Rs.	3,37,400

The amount of unexpired discount as on 30.6.1989 is Rs. 5,560.

Show the necessary adjusting entries and calculate the amount of interest and discount to be credited P and L A/c.

Solution

In the Book of United Bank Ltd.

1.7.88	Rebate on bills discount A/c		4,750
	To Interest and discount A/c		4,750
30.6.89	Interest and discount A/c Dr.		5,560
	To Rebate on Bills Discounted A/c		5,560

Interest and Discount A/c

1.7.88	To Rebate on Bills discounted	5,560	1.7.88	By Rebate on Bills Discount	4,750
	To P and L A/c (Transfer)	45,39,790	30.6.89	By Cash A/c (Interest and Discounted occured)	
		45,45,350			45,45,350

Problem No. 3

From the following balances of Allahabad Bank as on 31st Dec. 1981, prepare its B/s and P and L A/c.

		Rs.		Rs.
Share capital			Cash in hand and	
10,000 Shares of		10,00,000	With Reserve Bank	11,00,000
Rs. 100 each			Investment at cost	9,00,000
P and L A/c				
(1.1.1981)		1,00,000	Loans each credit	
			and overdraft etc.	45,00,000
Deposits :				
			Management	
Current	40,00,000		Expenses	6,00,000
Fixed	20,00,000		Cash with other	
			Bank	15,00,000
Savings	10,00,000			
			Buildings	4,00,000
Investment Reserve		50,000		
			Preliminary	
Statutory Reserve		1,50,000	Expenses	40,000
Commission and			Stamps in hand	60,000
Exchange		2,00,000		
Interest and				
Discount		6,00,000		

Provided depreciation on building at 10% p.a. The market value of investment, on 31st Dec. 1981 is Rs. 8,70,000 particular of advances need not be given.

Answer :

P & L A/c of Allahabad Bank for the year ended 31st Dec. 1981.

Management		Commission and	
Expenses	6,00,000	Exchange	2,00,000
Depreciation		Interest and Discount	
Building	40,000		6,00,000
Net Profit	1,60,000		
	8,00,000		8,00,000

Balance Sheet of Allahabad Bank
(as on 31st Dec. 1981)

Capacity Authority			Property and Assets		
..... Share of Rs. each			Cash in hand with		
			Rs. serve Bank		11,00,000
Issued. Subscribed					
and paid up capital			Cash with other Bank		15,00,000
10,000 shares of Rs.					
100 each		10,00,000	Investment at cost		9,00,000
Reserve Fund			(Market value 8,70,000		
other Reserve					
Investment			Advances		
Reserve	50,000		Loans cash		
Statutory	Rs. 1,50,000				
Statutory			Credit and		
Reserve	32,000	2,32,000	Overdraft etc.		45,00,000
Deposit and other A/c			Building	4,00,000	
Current	40,00,000		Less Dept.	40,000	3,60,000
Fixed	20,00,000				
Savings	10,00,000	70,00,000			
			Other Assets		
Borrowing from other		Nil	Preliminary		
Other liabilities					
P + L A/c	1,00,000		Expenses	40,000	
Current year	1,60,000		Stamps	60,000	1,00,000
(–) Statutory					
Receive	32,000				
	1,28,000	2,22,000			
		84,60,000			84,60,000

6.9 सारांश

बैंकिंग कम्पनी के अन्तिम खाते के अन्तर्गत लाभ हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है।

6.10 अभ्यास हेतू प्रश्न

(1) The Just merchants Mr. X and Mr. Y borrowed from the Commercial Bank Ltd., Simla on 30th June 1979 a sum of 3,00,000 on their joint and several promissory notes depositing as collateral security, jute value at Rs. 4,00,000. How will this loan appear in the Bank B/S on 30th June, 1979 ?

They are charged interest at 6 percent per annum with yearly rest, the jute is valued at Rs. 2,98,666 on 30th June, 1981. How will this loan appear in the Banks B/S on 30th June 1981 ?

(a) If Mr. X becomes insolvent on 30th September, 1980 while Mr. Y remain solvent.

(b) If both become insolvent on 30th Sept. 80.

(2) While closing the books of a bank on 31st December, 1980, you find in the loan ledger an unsecured balance of Rs. 4,00,000 in the account of a merchant, whose financial condition is reported to you as bad and doutful. Interest on the same account amounted to Rs. 20,000 during the year. How would you deal with this item of interest in 1980 account ?

During the year 1981 the bank accepts 75 p. as in the rupee on account of the total debt. Prepare necessary accounts showing ultimate effect of the transactions on 1981 accounts.

(3) इण्डियन बैंक लि० का 31 दिसम्बर, 1981 का निम्नलिखित तलपट है

The Trial Balance of Indian Bank Ltd. as on 31st Dec. 1981 is as follows :–

	Rs.
Paid up capital	20,00,000
Local bills discounted	18,00,000
Reserve	7,70,000
Cash credit and overdraft	28,00,000
Unclaimed dividends	10,000
Loan	46,00,000
Current and savings bank deposits	46,00,000
Fixed deposits	40,00,000
Furniture	40,000
P. and L. A/c credit	2,20,000

Stamps and stationary	10,000
Circular notes, L/C and Provision	
For contingency	1,70,000
Cash in hand	5,00,000
Cash at Bank	13,00,000
Branch adjustment (Debit)	13,70,000
Loans against up ledgement of customers	
securities	12,00,000
Investment	9,60,000

Out of the loans, cash credits and overdrafts the bank holds securities (which are upledged) for debts amounting to Rs. 52,00,000 and the personal security of one or more persons for the balance debts (good) due by directors amounted to Rs. 2,30,000 and the doubtful debts amounted to Rs. 5,70,000. The rebate on local bills discounted amounted to Rs. 10,000. credit is taken for Rs. 39,900 as interest on doubtful debts. Banks acceptances on behalf of customers were Rs. 6,50,000. The directors require the banks investments to be shown in the balance sheet at market value on 31st December, 1981. Which is Rs. 10,50,000. Prepare the B/s of the bank as on 31st December 1981.

ऋण, नकद साख और अधिविकर्ष की राशियों में से बैंक के पास 52,00,000 रु० के ऋणों के लिए प्रतिभूतियाँ हैं और शेष ऋणों के लिए एक या अधिक व्यक्तियों की प्रतिभूति है। देनदारियाँ (अच्छी) संचालकों द्वारा देय 2,30,000 रु० और संदिग्ध ऋण 5,70,000 रु०। भुनाए हुए स्थानीय बिलों पर ब्याज के लिए असमाप्त कटौती 10,000 रु०। संदिग्ध ऋणों पर बयाज के लिए 39,900 रु० क्रेडिट किये गये हैं। ग्राहकों की ओर से बैंक की स्वीकृति 6,50,000 रु०। बैंके विनियोग 31 दिसम्बर, 1981 को संचालकों के अनुसार बाजार मूल्य 10,50,000 रु० दिखाते हैं। 31 दिसम्बर, 1981 को बैंक का चिट्ठा बनाइए।

(4) बैंक के चिट्ठे का नमूना अनुमानित राशियों के आधार पर दीजिए।

(5) एक बैंक के पुस्तकीय ऋणों में क्या शामिल किया जाता है? बैंकिंग नियमन अधिनियम के अनुसार इन्हें चिट्ठो में किस प्रकार वर्गीकरण किया जाता है? अनुमानित राशियों से एक नमूना दीजिए।

(6) निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए

नन बैंकिंग सम्पत्तियाँ, शाखा समायोजन, असमाप्त कटौती, वैधानिक संचय।

6.11 पठनीय पुस्तकें

1.	एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० एम० शुक्ल
2.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० के० सिंह
3.	एडवांस्ड लेखांकन	शुक्ला एवं श्रीनिवास
4.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	एस० एन० महेश्वरी

●●●

बीमा कम्पनियों के लेखे

पाठ संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 परिचय

7.2 बीमा कम्पनी की विशेषताएँ

7.3 बीमा के प्रकार

7.4 सामान्य बीमा कम्पनी के लेखे

7.4.1 रेवेन्यु खाता

7.4.2 जमा भाग

7.5 खाते का नमुना

7.5.1 लाभ हानि खाता का नमुना

7.5.2 लाभ-हानि नियोजन खाता का नमुना

7.5.3 रेवेन्यु खाता का नमुना

7.5.4 आर्थिक चिट्ठा का नमुना

7.6 जीवन बीमा कम्पनी

7.7 जीवन बीमा पॉलिसी के प्रकार

7.7.1 समस्त जीवन पॉलिसी

7.7.2 कुछ अवधि के लिए जीवन बीमा पॉलिसी

7.8 जीवन बीमा में अन्तिम खाते तैयार करना

7.8.1 रेवेन्यू खाता

7.82 आर्थिक चिट्ठा

7.9 उदाहरण

7.10 सारांश

7.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

7.12 पठनीय ग्रंथ

7.0 उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों को बीमा कंम्पनी द्वारा तैयार की जाने वाली अन्तिम खाता के बारे में जानकारी देना है।

7.1 परिचय

बीमा एक सामाजिक तरीका है जिसके द्वारा व्यक्तियों का बड़ा समूह एक समान चन्दे की व्यवस्था द्वारा ऐसे सामान्य आर्थिक जोखिम जिन्हें नापा जा सकता हो, को कम या दूर कर सकता है। वास्तव में जोखिम में से सुरक्षा प्रदान करना ही बीमा है।

7.2 विशेषताएँ (Features)

बीमा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(1) बीमा भविष्य की आकस्मिक जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करता है।

(2) बीमा सिर्फ आर्थिक जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करता है।

(3) बीमा जोखिम के वितरण का सहकारी ढंग है।

(4) इसमें एक निश्चित मूल्य के बदले सुरक्षा प्राप्त होती है।

7.3 बीमा के प्रकार (Types of Insurance)

बीमा मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं.

7.3.1 सामान्य बीमा (General Insurance):

इसके अन्तर्गत अग्नि बीमा, सामुद्रिक बीमा, दुर्घटना बीमा, मोटर बीमा, साख बीमा, फसल बीमा इत्यादि सम्मिलित हैं। ये क्षतिपूर्ति वाले बीमा प्रसंविदा होते हैं। इसका अर्थ यह है कि जितनी क्षति होगी, उसी की पूर्ति की जाती है।

7.3.2 जीवन बीमा (Life Insurance):

इसके अन्तर्गत बीमा की विषयं वस्तु मनुष्य होते हैं। जीवन बीमा में एक निश्चित रकम के बदले में सुरक्षा प्रदान की जाती है। आजकल भारतवर्ष में सभी प्रकार के बीमा का राष्ट्रीयकरण हो गया है।

7.4 सामान्य बीमा कम्पनी के लेखे (According Records of General Ins. Co.)

सामान्य बीमा कम्पनी को अपने असीमित जोखिम के लिए निम्नलिखित प्रावधान करना पड़ता है

(1) अग्नि बीमा या दुर्घटना बीमा में शुद्ध प्रीमियम की राशि का 50%

(2) समुद्री बीमा में यह संचय 100% करना चाहिए।

लेखे (Accounts)– प्रत्येक बीमा कम्पनी को निम्नांकित खाते और विवरण तैयार करने पड़ते हैं।

(1) रेवेन्यु खाता (Revenue A/c)

(2) लाभ हानि खाता (Profit and Loss A/c)

(3) लाभ हानि समायोजन खाता (Profit and Loss Appropriatation Account)

(4) आर्थिक चिट्ठा (Balance Sheet)

रेवेन्यु खाता:

बीमा कम्पनी अधिनियम, 1938 की अनुसूची 3 के भाग 2 में जो फार्म F निर्धारित किया गया है। इसी फार्म F में प्रत्येक प्रकार की बीमा का अलग अलग रेवेन्यु खाता बनाना अनिवार्य है।

रेवेन्यु खाता एक प्रकार से सामान्य लाभ हानि खाता है। इनके दो भाग होते हैं

(1) नाम भाग और

(2) जमा भाग।

(1) इसके नाम भाग में सभी व्यय लिखे जाते हैं; यथा

(a) दावे का भुगतान

(b) कमीशन एजेन्ट को भुगतान

समुद्री बीमा और अग्नि बीमा में अधिकतम सीमा प्रीमियम की राशि 5% हो सकता है और मुख्य एजेन्ट की नियुक्ति की दशा में 20% कमीशन अग्नि और समुद्री बीमा में है।

(c) प्रबन्ध व्यय

(d) अप्राप्य ऋण

(e) अन्य व्यय और हानियाँ

(f) लाभ देय

(g) समाप्त जोखिम के लिए नया संचय

इस खाते के जमा भाग में लिखे जाने वाले मद :

(1) गत वर्ष का असामप्त जोखिम का संचय

(2) अतिरिक्त संचयं

(3) प्रीमियम प्राप्ति

(4) ब्याज, लाभांश एवं किराया प्राप्ति

(5) अर्पित पुनर्बीमा पर कमीशन प्राप्ति

(6) अन्य आय।

इस खाते में "To" और "By" नहीं लिखा जाता है। इस खाते में जो लाभ या हानि होती है उसे लाभ हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

लाभ हानि खाता और लाभ हानि नियोजन खाता क्रमश: Form 'B' और 'C' में तैयार किये जाते हैं। आर्थिक चिट्ठा का फार्म 'A' नमूना है। प्रत्येक खाते का नामूना नीचे दिया गया है।

7.5 खाते का नमुना

Form– B

7.5.1. Profit and Loss A/c for the Year Ending :

	Rs.		Rs.
Taxes on Insurance's profit		Interest, Dividend and Rent	
Expenses of management		(Not related to any fund)	
Loss on Realisation of		Less Income Tax –	
Investment.			
Depreciation of fund		Profit on Realisation	
		of Investment.	
Loss from Revenue A/c		Appreciation of Investment	
		P/L A/c from Revenue A/c	
Other Expenditure		Transfer Fee	
P/L Appreciation A/c		Other Income	
		P/L Appropriation A/c	
(Profit)		Loss (Rs.)	
Rs.		Rs.	

7.5.2. Profit and Loss Appropriation :

	Rs.		Rs.
Balance of the Previous year (loss)		Balance of Previous year	
P/L A/C Balance (loss)		Less Dividend for	
Dividend paid during year.		previous year–	
Transfer to any fund		P/L A/c Balance (Profit)	
Balance C/d			
(Profit)		Balance C/d (Loss)	
Rs.		Rs.	

Form–B

7.5.3. Revenue Account for the Year ended ..... :

	Rs.		Rs.
1. Claims Less covered by		1. Reserve for unexpired	
Re-insurance.		risk from previous year.	

2. Commission to agent		2. Additional Reserve from previous year	
3. Commission on Re-Insurance Accepted		3. Premium	
4. Management Expenses		4. Interest, Dividend and Rents	
5. Bad-debt.		5. Commission on Re-insurance ceded.	
6. Other expenses and losses		6. Other Income	
7. Reserve for unexpired risks (i.e., on policy maturing in the next year).		7. P/L A/C (Loss)	
8. Additional reserve.			
9. P/L A/c (Profit)			
Rs.		Rs.	

Form–A

7.5.4. Balance Sheet as on ..... :

	Rs.		Rs
Share Capital		Loans	
Reserve Fund.		Investment house Property	
		Agent's Balances	
Investment Reserve Fund		Outstanding Premium	
Depreciation Reserve.			
P/L Appropriation A/c		Interest, dividend and Rent	
Balance of Fund		Outstanding and Accuring	
and Accounts.		Less Income Tax.	
Debentures, loans		Amount due from other	
and Advances		Insurances.	
B/P.		Sundry debters	
Outstanding Claims		B/R	
Unclaimed dividend Premium			
Received in Advance		Cash and Bank Balance	
Sums due to other Insurance Co.		Other assets to be specified.	
Contingent liabilities			
(in inner column only)			
Rs.		Rs.	

Problem. – 1.

सामुद्रिक बीमा

The following balances have been extracted from the books of South India Marine Insurance Co. Ltd. on 31st Dec. 1986.

	Rs.
Premium Less Re-insurance	98,61,000
Commission on Direct business	4,40,000
Commission on Re-insurance ceded	52,000
Commission on Re-insurance accepted	38,000
Depreciation	64,000
Loss on sale of Investments	1,00,000
Claims paid less Re-insurance	50,00,000
Director's Remuneration	3,00,000
Interest and Dividend (net) not relating to any fund	2,75,000
Reserve for unexpired risks 1.1.86	78,00,000
Additional Reserve 1.1.86	7,80,000
Claims outstanding 1.1.86	3,78,000
Claims outstanding 31.12.86	4,58,000
Tax deducted on interest and dividends	80,000
Salary	6,40,000
Rent and Taxes	58,000
Postage, Stationary and Telegrams	86,000
Profit and Loss Appropriation A/c 1.1.86	19,50,000
Provision for Taxation to be made for 1986	6,08,300
Investment Reserve to be increased by	1,50,000

Reserve for unexpired risks to be maintained @ 100% of the net premium income. Additional reserve of 105 on the said premium is also to be maintained.

Draw up the Revenue Account and the Profit and Loss account and Appropriation A/c for the year ended on 31st December 1986.

Solution :

South India Marine Insurance Co. Ltd.

Revenue A/c for the year ended 31st Dec. 1986.

		Rs.		Rs.
Claims paid less Re-insurance	50,40,000		Balance of Account at the beginning provision for unexpired risks	78,00,000
Add. outstanding at the end.	4,58,000			
	54,98,000		Add. Reserve	7,80,000
			Premium Received (net) (less re-ins.)	98,61,000
Less outstanding at the beginning	3,78,000	51,20,000		
			Commission on reinsurance ceded	52,000
Commission on Direct Business	4,40,000			
on re-insurance	28,000	4,78,000		
Expenses of Management Salaries	6,40,000			
Directors Remuneration	3,00,000			
Rent and Taxes	58,000			
Postage etc.	86,000	10,84,000		
General P + L A/c net Profit Transferred		9,63,000		
Balance of A/c at the end.				
Provision for unexpired Risk	98,61,000			
Add. Reserve	9,86,000	1,08,17,000		
		1,84,93,000		1,84,93,000

Profit and Loss Account for the year ended 31st December, 1986

Loss on of Investments	1,00,000	Profits from Revenue (Marine)	9,63,900
Depreciation	64,000	Interest, Dividend, Rent to related to any Paricular fund or A/c	3,55,000
Balance Transferred to P and L Appropriation A/c	10,74,900	Less Income Tax 80,000	2,75,000
	15,38,900		12,38,900

Profit and Loss Appropriation A/c for the year ended 31st Dec. 1986

Investment Reserve	1,50,000	Balance b/d P and A/c	
Provision for Taxation	6,08,300	Net Profit	10,74,900
Balance transferred to B/s	3,16,600		
	10,74,900		10,74,900

Problem. – 2.

Fire Insurance

(अग्नि बीमा)

Assuming that no reserve for unexpired risk is created, prepare Revenue Account and Balance sheet of Spark Fire Insurance Co. Ltd. on 31st Dec. 1981 from the following :

Debit Balance

		Rs.
(1)	Reinsurance Premium	69,000
(2)	Losses by Fire	4,80,000

(3)	Management Epenses	1,20,000
(4)	Commission	1`,79,000
(5)	Bad Debts	11,000
(6)	Shareholders Dividend paid	12,500
(7)	Mortgages within India	1,00,000
(8)	Mortagages out of India	10,000
(9)	Foreign securities	1,55,000
(10)	Railways Debentures and stock	1,50,000
(11)	Railways Preference shares	33,000
(12)	Municipal loan	17,000
(13)	Bank Deposits	20,000
(14)	Deposits with Foreign cos.	17,000
(15)	Deposits with Trustees	11,000
(16)	Agents and Branch office Balance	1,05,000
(17)	Outstanding Premium at Head Office	1,500
(18)	Cash at Bank	10,500
	Credit Balance	
(1)	Premium	7,70,000
(2)	Losses Reservable under Reinsurance	60,000
(3)	Profit and Loss Account	3,500
(4)	General Reserve Fund	2,80,000
(5)	Interest and Dividend (of which Rs. 5,000 have not been received)	13,500
(6)	Capital	2,50,000
(7)	Outstanding Fire losses	63,000
(8)	Outstanding Dividends	6,500

Solution –

Revenue Account

		Rs.			Rs.
Losses by Fire	4,80,000		Premium	7,70,000	
Less Losses recoverable	60,000	4,20,000	less Re-ins.	69,000	7,01,000
Commission		1,19,000	Interest and Dividends		
Expenses of Management		1,20,000		8,500	
			Outstanding	5,000	
Bad Debts		11,000			
P and L A/c		44,500			13,500
		7,14,500			7,14,500

P and L Appropriation A/c

	Rs.		Rs.
Dividends Balance	12,500	Balance c/d	3,500
		P and L A/c	44,500
Transferred to B/S	35,500		
	48,000		48,000

Balance Sheet

(as at 31st Dec. 1981)

Capital :	Rs.	Loans :	Rs.
Reserves or contingency A.	2,50,000	Mortgages within India	1,00,000
		Mortgages out of India	10,000
		Investments :	
General Reserve Fund	2,10,000	Foreign Securities	1,55,000
		Rly-Debentures and Stock	1,50,000
P + L. Appon. A/c	3,55,000	Rly- Pref. Shares	33,000
		Municipal Loans	17,000
Loans and Advances		Dep. with for Cos.	17,000
out standing	63,000	Dep. with Trustees	11,000
		Agent's and Br. office	
		Balances	1,05,000
		Outstanding Premiums	1,500
Div. losses		Interest and Div. outstanding	5,000
Outstanding Devidends	6,500	Cash at Bank on Deposit	20,000
		Cash at Bank	10,000
Rs.	6,35,000	Rs.	6,35,000

7.6 जीवन बीमा कम्पनी

भारत में जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण 1956 ई० में हुआ। जीवन बीमा निगम अधिनियम 1956 के अन्तर्गत भारतीय जीवन बीमा निगम की स्थापना हुई।

जीवन बीमा निगम दो प्रकार का व्यवसाय करती है - जीवन बीमा और वार्षिकी अनुबंध।

जीवन बीमा पॉलिसी के प्रकार

जीवन बीमा के अन्तर्गत दो प्रकार की पॉलिसी जारी करती है। यथा

7.7.1 समस्त जीवन पॉलिसी :

इस पॉलिसी को लेनेवाले को प्रीमियम जीवनपर्यन्त देना पड़ता है और बीमा ककी राशि पॉलिसी लेनेवाले की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारियों को दी जाती है।

7.7.2 कुछ अवधि के लिए जीवन बीमा पॉलिसी :

इस बीमा की राशि एक निश्चित अवधि के अन्त में या बीमा कराने वाले की मृत्यु पर, इन दानों तिथियों में से जो भी तिथि पहले हो, उस पर दी जाती है। बीमा कराने वाले को प्रीमियम एक निर्धारित अवधि के लिए देना पड़ता है।

ये पॉलिसी लाभ सहित और लाभ रहित हो सकती है।

वार्षिक वृत्ति (Annuities) वार्षिक वृत्ति का अर्थ वार्षिक भुगतान से है। इसके अन्तर्गत बीमा को एक थोक राशि जमा की जाती है और बीमा निगम थोड़ा थोड़ा करके लौटाता रहता है। बीमा निगम को जमा की जानेवाली राशि को वार्षिक वृत्ति या प्रतिफल (Consideration for Annuities granted) कहा जाता है। बीमा कम्पनी द्वारा जो राशि दी जाती है इसे वार्षिक वृत्ति (Annuities) कहते हैं। वार्षिक रेवेन्यू खाता के डेविट पक्ष में और प्रतिफल की राशि को क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है।

7.8 जीवन बीमा में अन्तिम खाते तैयार करना

जीवन बीमा व्यवसाय में

(1) एक रेवेन्यू खाता और

(2) दूसरा आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है।

7.8.1 रेवेन्यू खाता :

जीवन बीमा व्यवस्था में सही लाभ का अन्दाज लगाना कठिन होता है, क्योंकि यह ज्ञात नहीं रहता है कि कितना भुगतान करना पड़ेगा। दायित्व की जानकारी मृत्यु पर निर्भर करती है और मृत्यु अनिश्चित है। अतः जीवन बीमा में हमलोग रेवेन्यू खाता बनाते हैं जिससे व्यय पर आय का अधिक्य का या इसके विपरीत का पता चलता है। इस आधिक्य को जीवन बीमा कोष कहते हैं। यह उस वर्ष का लाभ नहीं है।

रेवेन्यू खाता कैसे तैयार किया जायेगा ?

रेवेन्यू खाता के लिए अधिनियम में फार्म डी (D) स्वीकृत है। इस खाते के मुख्य पद निम्नलिखित हैं

क्रेडिट पक्ष :

1. जीवन बीमा कोष : यह रेवेन्यू खाता के क्रेडिट में सर्वप्रथम लिखा जाता है। अन्तिम शेष क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है।

2. प्रीमियम : सभी प्राप्त प्रीमियम तथा ऐसी प्रीमियम जो उपार्जित हो, गया हो परन्तु प्राप्त न हुआ हो, क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है। पुन: बीमा की राशि को घटा दिया जाता है। अगर अग्रिम प्रीमियम हो तो ऐसे नहीं लिखा जायेगा और आर्थिक चिट्ठा के दायित्व पक्ष में लिखा जायेगा।

3. वार्षिक वृत्ति का प्रतिफल : वार्षिक वृत्ति के लिए तो प्रतिफल एक मुश्त प्राप्त होता है। इसमें से अगर कोई पुन: बीमा हो तो उसे घटाकर इसे क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है।

4. ब्याज, लाभांश तथा किराया : इस मद को लिखते समय यह देखना चाहिए कि जो राशि प्राप्त है, उपार्जित है या बकाया है, सबको लिखना चाहिए। उस वर्ष की रकम होनी चाहिए। अगर बीमा कम्पनी अपने मकान में हो तो एक उचित किराया (Fair rent) लगाना चाहिए, क्योंकि भवन पर व्यय एक विनियोग है।

5. अन्य आय : अन्य आय के अन्तर्गत वे सभी प्राप्तियाँ लिखी जाती है जो निगम को प्राप्त है। जैसे फीस, फाइन इत्यादि।

डेविट पक्ष :

1. दावे की राशि : दावे की वे सभी राशियाँ उस वर्ष की लिखी जाती हैं जो भुगतान की गयी हैं या देय हो गयी हैं।

2. वार्षिक वृत्ति : दूसरा मद वार्षिक वृत्ति का भुगतान लिखा जाता है।

3. समर्पित राशि : पॉलिसी का समर्पित मूल्य लिखा जाता है।

4. बोनस: बीमा कराने वाले व्यक्ति अपने बोनस को तीन प्रकार से ले सकते हैं

   (i) नकदी में,

   (ii) अपने प्रीमियम को कम करने के लिए, या

   (iii) जीवन बीमा की राशि के साथ।

5. प्रबन्ध के व्यय : बीमा निगम के प्रबन्ध से सम्बन्धित सभी व्यय यहाँ लिखे जाते हैं। रेवेन्यू खाता का एक नमूना संक्षेप में नीचे दिया जाता है

Form of Revenue Account Applicable to
REVENUE ACCOUNT OF .....
IN RESPECT OF.....

	Business within India Rs.P.	Business within India Rs.P.	Total Rs.P.
Claims under Policies (Including provision for claims due or intimated) less re-insured			
By death			
By maturity			
Annuities less re-insurances			
Surrender (including surrenders of bonus)			
Less re-insurances			
Bonuses in cash less re-insurances			
Bonuses in reduction of premiums less re-insurances			
Expenses of management			
Balance of fund at the end of the year as shown in the balance sheet			

Life Insurance Business
FOR THE YEAR ENDING .....19.....
BUSINESS

	Business within India Rs.P.	Business out of India Rs.P.	Total Rs.P.
Balance of fund at the beginning of the year			
Premiums less re-insurance			
Consideration for Annuities granted less Re-Insurances			
Interest Devidends and Rents			
Less Income Tax thereon			
Registration fees			
Other Income.(to be specified)			
Less transferred to profit and loss Account			
Transferred from Appropriation Account			

जीवन बीमा व्यवसाय का लाभ ज्ञात करना :

जीवन बीमा व्यवसाय में लाभ निकालना एक कठिन कार्य है। जीवन बीमा निगम में लाभ प्रत्येक दो वर्ष बाद विशेष मूल्यांकन के द्वारा निकाला जाता है।

7.8.2 आर्थिक चिट्ठा :

भारतीय जीवन बीमा निगम अपना आर्थिक चिट्ठा स्वीकृत फार्म 'A' में तैयार करता है।

1. आर्थिक चिट्ठा का अलग कागजात है।

2. प्रत्येक आर्थिक चिट्ठा के साथ एक विवरण फार्म 'AA' में लगाया जाता है, जिसमें सम्पत्तियों का बाजार मूल्य और पुस्तकीय मूल्य दिखाया जाता है।

3. आर्थिक चिट्ठा का एक प्रारूप नीचे दिया जाता है

Form of Balance Sheet Suitable to the Life Insurance Corporation

	Liabilities	Rs.		Assets	Rs.
1.	Capital		1.	Loans	
2.	Reserve of Contingency Account Investment Reserve Account		2.	Investments	
3.	Balance of Funds and Account Life Insurance funds		3.	Agents Balances	
4.	Debenture Stock		4.	Outstanding Premiums	
5.	Loans and Advances		5.	Investment devidends and Rents Outstanding	
6.	Bills Payable		6.	Interest, Devidend and Rents Accuring but not due	
7.	Estimated liability in respect of outstanding claims whether due or intimated.		7.	Amounts due from other persons or bodies carrying on Insurance Business.	
8.	Annuities due and unpaid		8.	Sundry Debtors	
9.	Outstanding Dividends		9.	Bills Receivable	
10.	bodies carrying on Insurance business		10.	Cash	
11.	Sundry Creditors				
12.	Other sums owing by Insurer				
13.	Contingent liabilities.				

कभी कभी रेवेन्यू में समायोजन करना पड़ता है।

Adjustment in Revenue Account for premiums outstandings :

(1) Premium outstanding A/c Dr.
To premium A/c
(Being outstanding Premium brought into A/c)

(2) Claims covered under Re-insurance–
Outstanding Debtors A/c Dr.
To claims A/c
(Being claims re-coverable under re-insurance received)

(3) Bonus utilized in reduction of premium
Bonus in reduction of premium A/c Dr.
To Premum A/c
(Being Bonus utilized in reduction Premium)

(4) Interest accured or outstanding
Accured or outstanding interest A/c Dr.
To Interest A/c
(Being accured or outstanding interest brought into account)

(5) Claims outstanding
Claims A/c Dr.
To Claims outstanding A/c
(Being adjustment of claims outstanding)

7.9 उदाहरण

Problem No. 1.

The Revenue of Account of Life Insurance Company shows the fund at the end of the year 1981 at Rs. 32,26,000, before taking into account the following items.

		Rs.
1.	Bonus utilized in reduction of premium	6,900
2.	Outstanding premium	13,500
3	Claims intimated but not admitted	42,300
4.	Interest accured on securities	16,500
5.	Claims covered under insurance	18,000

Pass the necessary Journal entries to give effect to the commissions and show the fund at the end of year 1981 after making above adjustments.

Solution of Problem No. 1.

JOURNAL ENTRIES

	Dr.	Dr.
Bonus utilised in Reduction Premium A/c	6,900	
To Premium A/c		6,900
(Being the Bonus utilised in Reduction of Premiums)		
Premium outstanding A/c Dr.	13,500	
To Premium A/c		13,500
(Being outstanding premium brought into A/c)		
Claims A/c Dr.	42,300	
To Claims outstanding A/c		42,300
(Being the claims intimated admitted)		
Accured Interest A/c Dr.	16,500	
To Interest A/c		16,500
(Being the interest accured)		
Outstanding Debtors A/c Dr.	18,000	
To claims A/c		18,000
(Being claims recoverable under Re-insurance not received)		

Life Insurance Fund of A/c

To claims	42,300	By Balance C/d	32,26,000
		By Premium A/c	6,900
To Bonus utilized in reduction of premium	6,900	By Premium A/c	13,500
		By Interest A/c	16,500
		By Claims under	
To Balance C/d	32,31,700	Re-insurance	18,000
	32,80,900		32,80,000

Hints : While caculating the balance of Life fund, we see–

(i) Whether amount outstanding is an expenditure or income.

(ii) If it is an income, it would be added in the fund and if expenditure ability) it should be deducted.

Accordingly, if the Life Fund Account is prepared, then all liabilities (expenses) are debited and all gains (or assets) are credited. The difference will show the fund at the close of the year.

PROBLEM NO. 2.

As on December 31, 1983 the Life Fund as per Revenue Account of a Life Insurance Corporation shows a balance of 70,73,000 without taking into consideration the following items–

1.	Outstanding Premium	63,000
2.	Bonus utilized in reduction of Life Insurance Premium	22,000
3.	Claims covered under Re-insurance	94,000
4.	Claims intimated but not admitted	2,29,000
5.	Interest accured on securities	68,000

You are required to calculate the actual fund available as on Dec. 31, 1983 and also pass necessary journal entries to give effect to the above-mentioned omissions.

Solution of Problem No. 2.

CALCULATION OF LIFE INSURANCE FUND.

			Rs.
Balance of Fund on 31-12-83 Before adjustment			70,73,000
Less Bonus in reduction–		32,000	
Less claims intimated		2,29,000	2,51,000
			68,22,000
Add outstanding Premium		63,000	
,, Claims under Re-insurance		94,000	
,, Interest Accured		68,000	2,25,000
Balance of Fund after adjustment			70,47,000

JOURNAL ENTRIES

1.	Outstanding premium A/c	Dr.	63,000	
	To premium A/c			63,000
	(Being adjustment)			
2.	Bonus in reduction of ıs A/c	Dr.	22,000	
	To Premiums A/c			22,000
	(Being Bonus utilized in reduction of premiums)			
3.	Claims outstanding A/c	Dr.	94,000	
	To claims A/c			94,000
	(Being claims recoverable)			

4.	Claims A/c	Dr.	2,29,000	
	To Claims intimated but not admitted A/c			2,29,000
	(Being adjustment of claims intimated)			
5.	Interest accrued A/c	Dr.	68,000	
	To interest A/c			68,000
	(Being adjustment of interest accrued)			

PROBLEMS NO. 3.

The following figure are extracted from the general ledger of the Suchal Assurance Co. Ltd. for the year 1984.

	Rs.		Rs.
Cash in hand	1,900	Railways shares & Debentures	20,42,477
Cash at Bank	9,020	Interest & divided (less tax)	2,23,535
Life Fund on 1-1-84	55,56,148	Municipal securities	8,50,320
Share capital	1,00,000	Fine for revival of policies	358
Interest accured but not receivable	69,613	Foreign Govt. Bond	1,72,760
Investment reserve	88,000	Claims announced but not paid	76,135
Outstanding premiums	77,651	Book loan	50,000
Premiums less Re-insurance	3,56,674	Annuities	38,688
Loans on security of policy	4,25,360	Bonus in reduction of premiums	11,156
Consideration for annuities to be granted	11,338	Commission Interest and devidends to	
British Govt. securities	5,69,517	Shareholders	9,878
Annuities due but not paid	427	Expenses of management	40,070
Premiums received in Advance	575	Interest outstanding on investment	3,700
Development loan	4,15,000		
Stamps in hand	269		
Mortgages out of India	3,94,360		
Claims by death	3,37,955		
Claims by survivance	32,226		
Mortagage in India	9,02,956		
Surrenders	37,303		
Income tax on profits	8,594		

You are required to make out the Revenue Account of the Company for the year 1984 and the Balance Sheet as on 31st December 1984 from the above figures after making adjustments for the following--

(a) Further Bonus utilised in reduction of Life Insurance Premium Rs. 6,500

(b) Claims covered under Re-insurance Rs. 27,000

The Suchal Life Assurance Co. Ltd.
Revence Account for the year ending 31st December, 1984

	Rs.			Rs.
Claims under policies less Re-insurance			Balance of Life Fund on 1-1-84	54,56,148
By death	3,37,955		Premiums less Re-insurance	3,62,174
By maturity	30,226		Consideration for annuities granted	11,388
	3,70,181		Interest devidend Less income tax	2,23,535
Less Insurance	20,000	2,43,181	Revival fees	358
Annuities		38,688		
Surrender including Surrender of Bonus		37,303		
Devidend to share-holders		9,878		
Bonus in reduction of premiums		17,656		
Commissions		11,417		
Management expenses		40,070		
Income tax		8,594		
Balance of Life Fund transferred to Balance sheet		56,46,766		
		61,53,553		61,53,533

The Suchal Life Assurance Co. Ltd.
Balance Sheet as on 31st December, 1984

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Share capital	1,00,000	Loans on Mortage in India	9,02,056
Life Fund	56,46,766	Loans on Mortage out	
Investment Reserve	88,000	of India	3,94,360
Outstanding claims		Loans on politics	4,25,517
i.e. Claims not paid	76,135	Investments	
Annuities due not		British Govt. Security	5,69,517
Paid	427	Foreign Govt. Security	1,72,760
Bank loan	50,000	Municipal Securities	8,50,320
Premium received		Development loans	4,15,000
in advances	575	Railways shares &	
		Debentures	20,42,477
		Outstanding premium	77,651
		Amount due from other	
		Insurance Companies	
		i.e.Re-insurance claims	27,000
		Interest dividend outstanding	3,700
		Interest accuring but not due	69,613
		Stamps in hand	269
		Cash in hand	1,900
		Cash in Bank	9,020
	59,61,903		59,61,903

7.10 सारांश

बीमा कम्पनी के अन्तर्गत मुख्य रूप से रेवेन्यू खाता, लाभ हानि खाता, लाभ हानि नियोजन खाता तथा आर्थिक चिट्ठा अन्तिम खाते के रूप में तैयार किया जाता है चाहे सामान्य बीमा कम्पनी का मामला हो या जीवन बीमा कम्पनी का।

7.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. From the following particulars you are Required to prepare five revenue Account, for the year ending 31st Dec. 1986.

	Rs.		Rs.
Claims paid	4,80,000	Commission	2,00,000
Claims outstanding on 1.1.86	40,000	Commission on Re-insurance ceded	10,000
Claims intimated but accepted on 31.12.86	10,000	Commission on Re-insurance accepted	5,000
Claims intimated and accepted But not paid on 31.12.86	60,000	Management Expenses	3,05,000
Premium Received	1,20,000	Provision for unexpired risk on 1.1.86	4,00,000
Re-insurance Premium	1,20,000	Add. Prov. for unexpired risk	20,000
		Bonus in Reduction of Premiums	1,20,000

You are required to provide for additional Reserve for unexpired risks at 1% of the net Premium in addition to the opening balance.

2. The Indian Marine Insurance Co. Ltd. does only Marine Insurance business. The following are the balances in the books as on 31st December, 1990.

	Rs.
Marine Insurance Fund on 1 90	4,80,000
Premium less reinsurance	16,00,000
Interest, Dividend and Rent less Income Tax	14,000
Claims	11,00,000
Commission	84,000
Expenses of Management	25,000
Share Capital (10,000 shares)	1,00,000

	Rs.
Outstanding claims	1,40,000
Goverment Securities	2,00,000
Deposits with Reserve Bank	2,00,000
Marketable stock and Shares	1,80,000
Premises	3,70,000
Cash in hand	15,000
Cash at Bank	80,000
P. and L. A/c (Dv.)	80,000

The Reserve for unexpired risks is to be calculated at 00% of net premium each year and Rs. 75,000 to be allocated for additional reserve as on 31.12.90 prepare Revenue Account and Profit and Loss A/c year ended 31st December 1990; in proper form.

3. आप सामान्य बीमा से क्या समझते हैं? इस सम्बन्ध के लेखांकन सम्बन्धी लेखों के लिए क्या व्यवस्था है?

4. रेवेन्यू खाता और लाभ हानि खाता में तुलना कीजिए। बीमा कम्पनी के अनुसार स्वीकृत प्रारूप का नमूना दीजिए।

5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए

(1) असमाप्त जोखिम,

(2) सिक्योरिटी मार्जिन,

(3) दुर्घटना बीमा।

6. Prepare Revenue Account and Balance sheet from the following Balance in the books of the new Allahabad Life Insurance Mutual Society Limited as on December 31st 1984.

(न्यू इलालाहाबाद, जीवन बीमा म्यूअल सोसाइटी लिमिटेड की निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर 31 दिसम्बर,1984 के लिए रेवेन्यू खाता और चिट्ठा बनाइए।)

	Rs.
Life Insurance fund at January 1st, 1984 (1 जनवरी, 1948 को जीवन बीमा फण्ड)	1,80,000
Leasehold Ground Rents (रेहन जमीन किराया)	300
Surrenders (समर्पण)	2,100

Rent charges (किराया चार्ज)	1,180
Annuities (वार्षिकी)	625
Indian Government Securities (भारत सरकार की प्रतिभूतियाँ)	15,000
Interest and dividends received (ब्याज और लाभांश पाया)	6,500
Loans on Company's policy (कम्पनी पॉलिसी का कर्ज)	14,000
Cash at Bank (बैंक में नकद)	2,250
Mortgages on property (सम्पत्ति का रेहन)	40,000
Debts due by the Company (कम्पनी द्वारा बकाया कर्ज)	60
Interest due not received (बकाया ब्याज प्राप्त नहीं हुआ)	2,850
Building (भवन)	1,300
Mortgages on Rates (रेट्स पर बन्धक)	60,000
Expenses of management (प्रबन्ध के व्यय)	1,850
Bonuses of Policy-holders (पॉलिसी होल्डर को बोनस)	750
Consideration for annuities granted (स्वीकृति वार्षिकी के लिए प्रतिफल)	700
Claims admitted but not yet paid (दावे स्वीकृत हुए पर भुगतान नहीं हुआ)	725
Claims paid (दावे का भुगतान)	14,000
Commission (कमीशन)	1,350
Railway Debentures (रेलवे ऋणपत्र)	57,500
Premiums (प्रीमियम)	23,000
Reserve fund (रिजर्व फण्ड)	7,500
Outstanding Premiums (बकाया प्रीमियम)	2,800

Question– 1. Draw Balance Sheet and Revenue Account for the following Trial Balance of the Active Life Insurance Company.

(निम्नलिखित तलपट से एक्टिव जीवन बीमा का रेवन्यू खाता आर्थिक चिट्ठा तैयार करें)

Trial Balance, Year Ending December, 31, 1976

	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Primiums (प्रीमियम)		1,50,000
Interest and Dividends (ब्याज एवं लाभांश)		75,000
Cash at Bankers (बैंकर के पास नकद)	10,000	
Claims (दावा)	1,05,000	
Mortgages on Property within India (भारत की सम्पत्ति पर रेहन)	3,00,000	
Policies Surrendered (पॉलिसी का समर्पण)	7,000	
Mortgages on Life Interests and Resersions (जीवनरहित का बंध)	70,000	
Outstanding premiums (बकाया प्रीमियम)	4,000	
Rent Charges purchased (क्रय किराया चार्ज)	30,000	
Outstanding Interest (बकाया चार्ज)	20,000	
Expenses of Management (प्रशासकीय खर्चे)	10,000	
Claims outstanding (बकाया दावे)		5,000
Funds at the Beginning of the year (वर्ष के शुरू का फण्ड)		10,00,000
Creditors (महाजन)		1,500
Bonuses in Reduction of Premium (प्रीमियम घटाने में बोनस)	70,000	
Mortages on Rates (दर पर बन्धक)	4,15,500	
House Property (मकान-सम्पत्ति)	10,000	
Loans on policies (पॉलिसी पर कर्ज)	1,20,000	
Government securities (सरकारी प्रतिभूतियाँ)	40,000	
Railway Debentures (रेलवे ऋणपत्र)	20,000	
	12,31,500	12,31,500

7.12 पठनीय पुस्तकें

1.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० एम० शुक्ल
2.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० के० सिंह
3.	एडवांस्ड लेखांकन	शुक्ला एवं श्रीनिवास
4.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	एस० एन० महेश्वरी
5.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II	शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●

दोहरा खाता प्रणाली

पाठ–संरचना

8.0 उद्देश्य
8.1 परिचय
8.2 दोहरी लेखा प्रणाली से आशय
8.3 दोहरी लेखा प्रणाली के उद्देश्य
8.4 दोहरी लेखा प्रणाली तथा एकहरी लेखा प्रणाली के अन्तर
8.5 दोहरी लेखा प्रणाली की विशेषताएँ
8.6 दोहरी लेखा प्रणाली के लाभ
8.7 दोहरी लेखा प्रणाली के हानियाँ
8.8 पूंजीगत व्यय और आयगत व्यय में अन्तर
8.9 एक सम्पत्ति को पुनः स्थापित करने पर लेखा विधि
8.9.1 जर्नल प्रविष्टियाँ
8.10 उदाहरण
8.11 सारांश
8.12 अभ्यास हेतू प्रश्न
8.13 पठनीय पुस्तकें

8.0 उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों को दोहरा खाता प्रणाली जो मुख्य रूप से रेलवे कम्पनी, गैस कम्पनी, जल कम्पनी अपने अन्तिम खाता तैयार करने के लिये अपनाती है इसके बारे में विस्तृत जानकारी देना है।

8.1 परिचय

हमलोग जानते हैं कि लेखाशास्त्र उद्देश्यपूर्ण एवं व्यवहारिक विषय है। इसके कार्य एवं व्यवहार परिस्थितियों और उपक्रमों के अनुसार बनाये जाते हैं। दोहरी खाता प्रणाली का विकास इंगलैण्ड की जन उपयोगी विशाल संस्थाओं से हुआ है।

8.2 दोहरी लेखा प्रणाली से आशय

डबल एकाउण्ट सिस्टम या दोहरी खाता प्रणाली (Double accounts system) उस तरीके को कहते हैं जिसके अन्दर बड़ी बड़ी सार्वजनिक उपयोगिता की संस्थाओं के अंतिम लेखे इस तरह बनाये जाते हैं कि स्थायी सम्पत्तियों पर किए गये खर्चे तथा प्राप्त की गयी पूँजी एक अलग खाते में दिखायी जाती

है जिसे पूँजी खाता कहते हैं तथा अन्य सभी सम्पत्तियाँ और दायित्व एक विवरण पत्र में दिखाया जाता है जिसे साधारण चिट्ठा कहते हैं। इसके अन्दर एक चिट्ठे की जगह पर पूँजी खाता तथा एक साधारण चिट्ठा बनाया जाता है। यह नियम प्राय: रेलवे, बिजली, जहाज कम्पनी, गैस कम्पनी इत्यादि में लागू होता है। इन कम्पनियों का निर्माण संसद के विशेष अधिनियम से होता है और उसी अधिनियम में सभी फार्म के प्रारूप भी रहते हैं।

सर्वप्रथम यह नियम इंगलैण्ड में 1868 में रेलवे कम्पनी में लागू हुआ। आगे चलकर यह नियम गैस कम्पनी में 1871 में तथा 1882 में बिजली कम्पनियों में अनिवार्य बनाया गया।

भारत में किसी भी संस्था द्वारा इसे अपनाना अनिवार्य नहीं बनाया गया है। अगर कोई सार्वजनिक उपयोगिता की संस्था इस प्रणाली को अपनाना चाहती है तो इसके लिए सरकार की ओर से कोई रुकावट या अवरोध नहीं है।

भारतीय रेलवे अधिनियम 1890 में इस तरह का प्रावधान है तथा प्राय: खाते इस प्रणाली के अनुसार तैयार किए जाते हैं।

सार्वजनिक उपयोगिता की कम्पनी में बड़ी मात्रा में सार्वजनिक पूँजी लगती है जो स्थायी स्वभाव की होती है। प्राय: ऐसी कम्पनी सरकार के नियंत्रण में होती है और सरकार जनता को संसद के माध्यम से हिसाब देती है। इसलिए इन संस्थाओं को विशेष हिसाब पूँजी के सम्बन्ध में रखना पड़ता है। इन्हें यह बताना पड़ता है कि पूँजी कहाँ कहाँ से आयी और कहाँ लगी है। इसलिए इन संस्थाओं में आर्थिक चिट्ठा को दो भाग में बाँट दिया जाता है। स्थायी सम्पत्ति और दायित्व को पूँजी खाता में तथा चालू सम्पत्ति और दायित्व को आर्थिक चिट्ठा में दिखाया जाता है। इसलिए इस प्रणाली को दोहरी खाता प्रणाली कहते हैं।

8.3 दोहरी लेखा प्रणाली के उद्देश्य

इस प्रणाली के दो मुख्य उद्देश्य हैं

1. स्थायी सम्पतियों और पूँजी के अनुपात को दिखाना।
2. रेवेन्यू से स्थायी सम्पत्तियों को बनाये रखना।

8.4 दोहरी लेखा प्रणाली और एकहरी लेखा प्रणाली में अन्तर

दोहरी लेखा प्रणाली और डबल इन्टरी सिस्टम को एक समान समझना भूल है। डबल इन्टरी सिस्टम का प्रयोग डबल एकाउण्ट सिस्टम तलपट बनाने तक एक समान ही किया जाता है। अन्तर केवल अन्तिम खाता बनाते समय होता है। साधारणत: अन्तिम खाता में व्यवहार खाता, लाभ हानि खाता ओर लाभ हानि समयोजन खाता तथा एक आर्थिक चिट्ठा बनाया जाता है। किन्तु डबल एकाण्ट सिस्टम में (1) रेवेन्यू खाता, (2) शुद्ध रेवेन्यू खाता, (3) पूँजी खाता तथा (4) चिट्ठा बनाया जाता है।

जब किसी संस्था में एक ही आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है तो उसे सिंगल एकाउण्ट सिस्टम कहते हैं।

सिंगल एकाउण्ट सिस्टम में एक चिट्ठा तैयार किया जाता है, जिसमें दायित्व पूँजी और स्थायी तथा चालू सम्पत्ति एक साथ दिखायी जाती है। किन्तु डबल एकाउण्ट सिस्टम में आर्थिक चिट्ठा दो भाग में खंडित कर दिया जाता है। एक भाड़ा पूँजी प्राप्ति और व्यय खाता बनाया जाता है।

जिसमें सभी स्थायी दायित्व अर्थात् पूँजी प्राप्ति और व्यय को दिखाया जाता है।

डबल एकाउण्ट सिस्टम में सभी स्थायी सम्पत्ति क्रय मूल्य पर दिखायी जाती है। ह्रास खाता और ह्रास विनियोग खाता को आर्थिक चिट्ठा में लिखा जाता है।

8.5 डबल एकाउण्ट सिस्टम की विशेषताएँ

दोहरी खाता प्रणाली की 10 निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(1) अन्तिम खाते निम्नलिखित चार भाग में तैयार किये जाते हैं

(i) रेवेन्यू खाता,

(ii) शुद्ध रेवेन्यू खाता,

(iii) पूँजी खाता,

(iv) चिट्ठा।

(2) स्थायी दायित्व और स्थायी सम्पत्ति को पूँजी खाते में दिखाया जाता हैं।

(3) चालू सम्पत्ति और चालू दायित्व को आर्थिक चिट्ठा में दिखाया जाता है।

(4) लाभ हानि खाता और लाभ हानि समायोजन खाता के बदले में रेवेन्यू तथा नेट रेवेन्यू खाता तैयार किया जाता है।

(5) ह्रास की रकम सम्पत्ति से कम नहीं की जाती है। एक ह्रास कोष खाता खोला जाता है और ह्रास की रकम को विनियोजित किया जाता है जिसे ह्रास कोष विनियोजन खाता कहते हैं। ये दोनों खातों सामान्य आर्थिक चिट्ठा में दिखाये जाते हैं।

(6) पूँजी खाते में किसी सम्पत्ति का समायोजन नहीं किया जाता है।

(7) सभी प्रकार के कोष सामान्य चिट्ठा के दायित्व में दिखाया जाता है।

(8) डिसकाउण्ट और प्रीमियम स्थायी पूँजी के रूप में दिखाया जाता है।

(9) ऋण पूँजी अंश और स्टॉक पूँजी माने जाते हैं और

(10) ऋण तथा ऋण पत्रों पर ब्याज नेट रेवेन्यू में से लिखा जाता है।

8.6 डबल एकाउण्ट सिस्टम के लाभ

इस प्रणाली से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं

1. पूँजी मालूम होना।
2. स्थायी सम्पत्तियों पर का खर्च जानना।
3. स्थायी प्राप्तियों एंवं खर्चों का स्पष्ट ज्ञान होना।
4. पूँजी खाता बनाने में सुविधा होती है।
5. चल सम्पत्तियों एवं दायित्वों की तुलना सरल है।

8.7 डबल एकाउण्ट सिस्टम की हानियाँ

इस प्रणाली के निम्नलिखित दोष हैं

1. स्थायी सम्पत्तियों को लागत पर ही दिलाना।
2. अवास्तविक सम्पत्तियों को दिखाना।
3. रेवेन्यू पर असमान बोझ।
4. यह प्रणाली जटिल है।

स्थायी सम्पत्तियों का बढ़ाना तथा पुनः स्थापित करना : हमलोग रेलवे और बिजली कम्पनी के विषय में अलग से पढ़ेंगे। यहाँ प्रारम्भ में यह बताना आवश्यक है कि पूँजी व्यय और रेवेन्यू व्यय में क्या अंतर है।

8.8 पूँजी और रेवेन्यू

पूँजीगत व्यय वह है जिसका लाभ संस्था का कई वर्षों तक होता है। इसके अन्तर्गत वे व्यय आते हैं जो स्थायी सम्पत्ति को खरीदने, या उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

रेवेन्यू व्यय वे हैं जिसका लाभ संस्थान को उसी वर्ष में प्राप्त होता है जिस वर्ष का खाता तैयार किया जाता है। रेवेन्यू व्यय से उत्पादन क्षमता नहीं बढ़ती है।

8.9 एक सम्पत्ति को पुनः स्थापित करने पर लेखा विधि

साधारणतः जब किसी सम्पत्ति की पुनः स्थापना की जाती है तो सम्पत्ति खाते की डेविट बाकी को अपलिखित कर दिया जाता है और इसे आय व्यय माना जाता है। नयी सम्पत्ति पर जो राशि व्यय की जाती है उसे पूँजी व्यय माना जाता है और इस राशि से सम्पत्ति खाता डेबिट कर दिया जाता है।

किन्तु दोहरी खाता प्रणाली में

(1) जिस सम्पत्ति का की पुनः स्थापना किया जाता है, उसके पुनः स्थापन पर जो राशि इस समय व्यय की जाती है, उसे आयगत व्यय माना जाता है और उसे अपलिखित कर लिया जाता है।

(2) जो व्यय प्रतिस्थापन व्यय से अधिक होता है, उसे पूँजी व्यय माना जाता है।

(3) सम्पति खाते में पुरानी ऐतिहासिक लागत तो बनी रहती है, साथ ही नये पूँजीगत व्यय का उस खाते में डेविट कर दिया जाता है।

सम्पत्ति के प्रतिस्थापन करने के वर्त्तमान मूल्य के बराबर की राशि आय व्यय मानी जाना चाहिए। कुछ व्यय में से इस राशि को घटाने के बाद जो राशि बचती है, उसे पूँजी व्यय माना जाना चाहिए।

(4) जब कोई पुराना माल सम्पत्ति के नये निर्माण में प्रयोग किया जाता है, तो इसे आय व्यय खाते में क्रेडिट किया जाना चाहिए।

(5) जब सम्पत्ति का कोई शेष माल बेचा जाता है, तो प्रतिस्थापन खाता क्रेडिट किया जाता है। इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार जर्नल तैयार किया जाता है

8.9.1 JOURNAL ENTRIES :

(a) For the amount spent on purchase of a new asset.

(जब सम्पत्ति क्रय की गयी पुन: स्थापित करने के लिए)

Replacement A/c Dr.

to cash/Bank A/c

(Being the amount spent)

(b) For the sale of old materials/machines.

cash/Bank A/c Dr.

To Replacement A/c

(Being the amount of sale of materials

(c) For the allocation of amount between revenue and capital

Revenue A/c Dr.

Capital A.c Dr.

To Replacement A/c

(Being the revenue and capital charges)

(d) For the value of old materials used in the construction.

work/Asset A/c Dr.

To Replacement A/c

(Being the amount of materials used)

8.10 उदाहरण

Example 1.

(a) The original cost of a powerhouse was Rs. 5,00,000 which is to be replaced by a new one. The cost of a new one is Rs. 15,00,000. But the estimated cost of original one (same size) is Rs. 8,00,000. Ascertain the amount to be charged to Revenue and capital.

(b) What amount should be charged to Revenue and capital if material is used for Rs. 15,000 and sale proceeds of the old materials are Rs. 10,000 ? Should three be any difference in capital charge between the sale and re-use of old materials.

Show also the necessary ledger accounts.

(अ) एक बिजली घर की पुस्तकीय लागत 5,00,000 रु० है जिसे पुन: स्थापित करना है। नये घर की लागत 15,000 रु० है। किन्तु पुराने घर की अनुमानित लागत (उसी आधार का) 8,00,900 हैं। आप निश्चित कीजिए कि कितनी रकम रेवेन्यु और पूँजी में दिखायी जायेगी?

(ब) रेवेन्यू में कौन सी रकम लिखी जाय, अगर 15,000 रु० की पुरानी सामग्री का पुनः प्रयोग किया गया और 10,000 रु० की सामग्री बेची गयी? क्या पूँजी खाता पर कोई प्रभाव पड़ेगा? इनका आवश्यक खाता भी बनावें।

Solution of Example–1.

(a) (i) Revenue charges

Estimated cost of replacement of the Original Power house Rs. 8,00,000

(ii) Capital charges

	Rs.
Total cost of the construction of a new one is	15,00,000
Less : estimated cost of replacement	8,00,000
Capital charge	7,00,000
	Rs. 8,00,000

(b) (i) Revenue charge

Estimated cost of Replacement		
Less : cost of re-used materials	15,000	
Sales proceeds old materials	10,000	
	25,000	25,000
Net Revenue charge		7,75,000

(ii) Capital charge to be calculated as under

Total cost of new construction–	15,00,000
Less : estimated cost of replacement of old one	8,00,000
	7,00,000

Ledger of Example No. –1.

In the work of
Power House Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance U/d	5,00,000	By Balance C/d	12,00,000
To Bank A/c (7,00,000– 15,000)	6,85,000		

To Replacement A/c (Old materials used)	15,000		
	12,00,000		1,00,000
To Balance U/d	12,00,000		

Replacement Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Bank A/c cost of replacement	8,00,000	By power House A/c (old materials used)	15,000
		By bank A/c (sale of old materials	10,000
		By Revenue A/c	7,75,000
	8,00,000		8,00,000

Example No. –2.

An electricity company laid down a main at a cost of Rs. 50,000 some year later the company laid down an auxilliary main for 8/5th of the length of the old main at a cost of Rs. 15,000. It also replaced the cost of the length of the old main at a cost of Rs. 60,000. The cost of materials and labour has gone up by 20% sale of old materials realised Rs. 800 only. Old materials valued at Rs. 1,000 were used in renewal and those valued at Rs. 500 were also used in the construction of the auxiliary main. Givew the Entries and show the calculation.

एक बिजली कम्पनी ने एक मेन 50,000 रु० की लागत पर बनाया। कुछ समय बाद कम्पनी ने एक सहायक मेन पुराने मेन का 1/5 वाँ भाग लम्बा 15,000 रु० पर डाला। इसने शेष मेन को 60,000 रु० की लागत से पुन: स्थापित किया। इस बीच श्रम और सामग्री के मूल्य में 20 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी। पुरानी सामग्री बेचने से 900 रु० प्राप्त हुआ। 1,000 रु० की सामग्री का प्रयोग पुन: स्थापना पर किया गया तथा 500 रु० का प्रयोग सहायक मेन पर किया गया। इसका प्रविष्ट दीजिए तथा पूँजी और रेवेन्यू का हिसाब दिखलावें।

Solution of Example No. 2

Capital change to be calculated as under

Extention cost of auxiliary main	Rs. 15,000	
Add amount of old materials used	500	15,500
Cost of Replacement of old main	60,000	
Add. Amount of old materials	1,000	
	61,000	

Less : Estimated current cost of protion replacement in original position		
Original cost = 50,000 × 4/5	40,000	
Add 20% increase	8,000	
	28,000	13,000
Revenue charge		28,500
Estimated current cost of Replacement	48,000	
Less : amount of old materials used		
– in newal	1,000	
– in auxiliary line	500	1500
		46,500
Less : sale proceeds of old materials		800
		45,700

Note : It has been assumed that the costs which are given in problem are cash cost that is it, does not include cost of old used material.

Journal Entries

		Dr.	Rs.	Rs.
Main A/c				
Replacement A/c	Dr.		27,000	
To Bank A/c			48,000	
(15,000 + 60,000)				
(Being cash spent on the mains amounting to Rs. 75,000 including Rs. 48,000 for current cost Replacement)				
Main A/c		Dr.	1,500	
To Replacement A/c				1,500
(Old materials used in auxiliary main and also unconstruction)				
Bank A/c		Dr.	800	
To Replacement A/c				800
of old materials)				

Revenue A/c	Dr.	45,700	
To Replacement a/c			45,700
(Being net Current cost of replacement transferred)			

Example No. 3

Ahmedabad Railway station is to be rebuilt and required a cash outlay of Rs. 29,00,000. The original cost was Rs. 6,50,500 and it is estimated that the station would cost Rs. 24,00,000 to replace as it stands. In addition materials to the value of Rs. 75,000 were taken up from the original station and Rs. 50,000 were realised from the sale of scap. Pass necessary journal entries for the above and show the amount to be charged to capital and to Revenue.

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन का पुन: निर्माण किया जाना है जिसके लिए 29,00,000 रु० की आवश्यकता है। इसकी प्रारम्भिक 7,20,000 रु० थी और यह अनुमान लगाया गया कि विद्यमान स्टेशन को बदलने की लागत 24,00,000 रु० है। इसके अतिरिक्त 75,000 रु० तक के मूल्य की सामग्री पुराने स्टेशन से प्राप्त हो गयी और 30,000 रु० लेकर सामग्री से प्राप्त हुए।

उपर्युक्त व्यवहारों के लिए जर्नल के आवश्यक लेखे कीजिए एवं यह भी दिखलाइए कि कितनी राशि पूँजी मानी जाय एवं कितनी राशि आगम मानी जाय।

Solution of example No. 3

Calculation of capital expenditure

	Rs.
Actual expenditure	29,00,000
Less : Cost of Replacement	24,00,000
Capital expenditure	5,00,000
Revenue expenditure (24,00,000 – (50,000 + 75,000) = 22,75,000 Revenue expenditure	

Journal Entries

		Dr.	Rs.	Rs.
Bank A/c		Dr.	50,000	
To Replacement A/c				50,000
(Being sale proceeds)				
Neworks A/c		Dr.	75,000	
To Replacement A/c				75,000

(Being value of old materials used)			
Replacement A/c	Dr.	24,00,000	
New work A/c	Dr.	4,25,000	
To Bank			28,25,000
(Being amount spent)			

8.11 सारांश

दोहरा खाता प्रणाली के अन्तर्गत पूँजी खाता, सामान्य चिट्ठा, रेवेन्यू खाता तथा शुद्ध रेवेन्यू खाता तैयार की जाती है।

8.12 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. What is Double Account system ? Explain the main features of the system.
2. Explain the advantages and disadvantages of Double Account system.
3. Distinguish between Double account system and Single Account system.
4. Write short notes on–
5. A compnay wants to create a Repairs and Renewal Reserve account by transferring Rs. 1,000 every year from Revenue account. Following are the amount of replairs and renewals during the period of second and third years. (i) Rs. 375 and Rs. 450. Pass the necessary entries and open Repairs account and Repairs and Renewals Reserve account.

Hints : We will open a Repairs and Renewals reserve account. This A/c will be created by the fixed amount and Debited by the actual amount of Repair of the particular a year. The Balance will be shown in the liability side of B/s.

6. The directors of Bihar Electric Ltd. decided to replace this existing machinery by one with double capacity and power. The old machinery was obtained at a cost of Rs. 90,000 and the old machinery would realise Rs. 10,000.

   You are require to allocate cost of Rs. 90,000 between capital and Revenue and give entries.

1. दोहरी खाता प्रणाली क्या है? इस प्रणाली की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
2. डबल एकाउण्ट सिस्टम के गुण और दोष का वर्णन कीजिए।
3. डबल एकाउण्ट सिस्टम और सिंगल एकाउण्ट सिस्टम में तुलना कीजिए।
4. संक्षेप में नोट लिखिए

   (क) पूँजीगत व्यय और

   (ख) आयगत व्यय ।

5. एक कम्पनी रेवेन्यू खाते से प्रतिवर्ष 1,000 रु० हस्तांतरण करके एक मरम्मत एवं नवनिर्माण संचय खाता स्थगित करना चाहती है। द्वितीय एवं तृतीय वर्षों में क्रमश: वास्तविक मरम्मत एवं नव निर्माण की राशियाँ निम्न थीं (i) 375 रु० तथा (ii) 450 रु०। लेजर खाते खोलने के लिए जर्नल में आवश्यक लेखे कीजिए और मरम्मत खाता तथा मरम्मत एवं निर्माण संचय खाता बनाइए।

6. बिहार बिजली कम्पनी के संचालकों ने एक विद्यमान मशीन की दुगुनी क्षमता एवं शक्तिशाली मशीन द्वारा बदलने का निश्चय किया। पुरानी मशीन 20,000 रु० की लागत पर प्राप्त की गयी थी। लेकिन उसकी लागत अबतक 75% और बढ गयी है। नयी मशीन की लागत 90,000 रु० होगी और पुरानी मशीन के विक्रय से 10,000 रु० प्राप्त होंगे। 90,000 रु० की लागत का विभाजन पूँजी एवं आगम व्ययों के मध्य कीजिए और जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिए।

8.13 पठनीय पुस्तकें

1.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० एम० शुक्ल
2.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	डॉ० एस० के० सिंह
3.	एडवांस्ड लेखांकन	शुक्ला एवं श्रीनिवास
4.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी	एस० एन० महेश्वरी
5.	एडवांस्ड एकाउन्टैन्सी Vol-II	शुक्ला, श्रीवास, अग्रवाल एवं गुप्ता

●●●